अक्तूबर 2000

सपेशल सप्लीमेण्ट

रुसी इंकलाब का पतन

International Communist Current

विषयसूची

--********--

प्रस्तावना

1917 का रुसी इन्कलाब पहले विश्व युद्ध में उभरी सर्वहारा क्रांति की विश्व क्रांतिकारी लहर का सर्वोच्च बिन्दु था। पूंजीवादी चढाव से पतनशीलता के मोड पर स्थित यह वह घडी थी जब मज़दूर वरग ने रुस में पूंजी की सत्ता को उखाड फेंका और पूंजी तथा श्रम में विश्वव्यापी मुठभेडों का द्वार खोला। इस रुप में यह मज़दूर वर्ग का अब तक का सर्वाधिक समृद्ध तजरुबा था और इसने मज़दूर क्रांति की कार्यनीति तथा रणनीति संबंधी वहुमूल्य सबक दिये।

पर, जैसे हम जानते हैं, रुसी क्रांति द्वारा उदधाटित विश्वक्रांतिकारी लहर परास्त रही। हंगरी, आस्ट्रिया, जर्मनी, ब्रिटेन, चीन तथा अन्यत्र क्रांतिकारी संघर्षों को कुचल दिया गया। रुसी इंकलाब अलग-थलग पड गया और 1925-26 के आते आते अद्यःपतन का शिकार हो गया। रुस में पूंजीवाद ने राज्यपूंजीवाद के अति भौंडे तथा विकृत रुप, स्तालिनवाद का रुप लिया। आगामी सात दशकों तक स्तालिनवाद को एक तरफ मज़दूर वरग को कुचलने तथा दूसरी ओर गुमराह करने तथा साम्यवाद के मुक्तिकामी विचारों को बदनाम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा। और 1989 से स्तालिनवाद के पतन को मज़दूर वरग के खिलाफ एक नए अभियान के लिए प्रयोग किया जा रहा है – साम्यवाद मर गया है। पूंजीवाद का कोई विकल्प नहीं।

ऐसे में, रुसी इन्कलाब और उसके अद्यःपतन पर बहस एकाधिक अर्थों में महत्वपूर्ण रही है। मसलन्, रुसी क्रांति के पतन के समक्ष नई राह टटोलने को मज़बूर क्रांतिकारियों के लिए सर्वप्रथम उसके पतन के निहितार्थों को समझना जरुरी था। वीसवीं सदी के तीसरे दशक से रुसी, जर्मन, डच, इतालवी तथा अन्य वामपंथी कम्युनिस्टों ने यही किया। और वीसवीं सदी के सातवें दशके में क्रांतिकारी मार्ग पर अग्रसर क्रांतिकारियों ने स्वयं को अपने इन पूर्वजों के कार्य पर आधारित किया है।

रुसी क्रांति तथा उसके अद्यःपतन के बाद उभरे राज्य के प्रति रुख सर्वहारा तथा बुर्जुआ संगठनों के बीच कुछ वर्ग रेखाएँ तय करता है। अन्य वर्ग रेखाएँ उसके अद्यःपतन के तजरुबे से तय होती हैं। रुसी इन्कलाब के नकारात्मक तथा सकारात्मक सबकों से वह दिशादर्शन गठित होता है जो वर्ग के भावी संघर्षों की सफलता के लिए जीवन शक्ति होगा।

विषय के इस अतीव महत्व के चलते ही हमारे करण्ट ने इस पर बहसों को एक अहम स्थान दिया है। इन्हीं बहसों में से तीन लेखों का संकलन यहां प्रकाशित किया जा रहा है। भारत, जहां दशकों से स्तालिनवाद साम्यवाद का छ्दम रचता रहा है, आशा है यह संकलन रुसी क्रांति के सवाल को स्पष्ट करने में सहायक होगा।

****

रुसी इंकलाब का पतन

बसंत 1974 में रेवोल्यूशनरी वर्कर्ज़ ग्रुप (आरडब्लूजी) के सैद्वान्तिक परचे फारवर्ड के दूसरे अंक में इंटरनेशनल कम्युनिस्ट करण्ट (इंटरनेशनलिज्मों : 'अक्तूबर क्रांति के सर्वहारा चरित्र का बचाव') और आरडब्लूजी ('रुसी क्रांति पर इंटरनेशनलिज्मों कहां चूक जाता है') के बीच एक अन्तरराष्ट्रीय बहस छपी। हमारे लेख की अपनी आलोचना में आरडब्लूजी महत्वपूर्ण सवाल उठाता है, पर वह रुसी तजुरुबे को समग्र रुप से समझने का चौखटा नहीं देता।

क्रांतिकारी इतिहास का विशलेषण न सिरफ विशलेषण के लिए करते हैं और न ही इस खोज के लिए कि 'गर वे वहां होते तो उन्होंने क्या किया होता'। अपितु वे शेष वरग के साथ मज़दूरों के आंदोलन से सीखने के लिए करते हैं ताकि भावी संघर्ष के रास्ते को बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सके।

रुसी क्रांति के पेचीदा सवाल का संपूर्ण विशलेषण होने का दिखावा किये बिना, हमारे करण्ट के लेख - 'अक्तूबर क्रांति के सर्वहारा चरित्र का बचाव', ने एक बुनियादी नुक्ते को स्पष्ट करने की कोशिश की : कि रुसी क्रांति सर्वहार का एक तजुरुबा थी, कि वह 1917 से लेकर 1920वें के आरंभिक बर्षो तक समूची दुनिया को झकझोरती विश्व क्रांतिकारी लहर का अभिन्न हिस्सा थी। रुसी क्रांति मात्र एक 'बुर्जूआ एक्शन' नहीं थी जिसे हम आत्मतुष्ट तरीके से नकार सकते हैं। स्तालिनवाद को खारिज़ करते हुए गर हम अपने वर्ग के दुखद इतिहास को खारिज़ कर देते हैं तो यह विनाशकारी होगा। एक ओर है प्रतिक्रांतिकारी विचारधारा के बाहकों, स्तालिनवादियों तथा त्रात्सकीवादियों द्वारा अक्तूबर के तथा 'मज़दूर राज्य' के भौतिक लाभों को उछालना ताकि वे रुसी राज्य पूँजीवाद की अपनी वकालत को उचित ठहरा सकें। दसरी ओर है अक्तूबर क्रांति की सर्वहारा ज़डों का हत्तोसाहित इन्कार, जैसे बहुधा कौंसिलवादी परंपरा के पक्षधर करते हैं। पर दोनों क्रांतिकारी प्रयास के यथार्थ को अस्वीकार्य झुठलाना है।

अक्तूबर क्रांति के सर्वहारा चरित्र की पहचान के साथ यह पहचान भी आती है कि बोल्शेविक पार्टी एक सर्वहारा पार्टी थी। जो पहले विश्वयुद्व में तथा 1917 में क्रांतिकारी पोज़ीशनों के बचाव में अन्तरराष्ट्रीय वाम में अग्रणी थी। मज़दूर वरग के अन्तरराष्ट्रीय विद्रोहों की पराजय के साथ, अलग-थलग पड गए रुसी गढ़ को अन्दरुनी प्रतिक्रांति का सामना करना पडा। और बोल्शेविक पार्टी, 1919 में अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट वाम की अगुआ, पतित होकर बुर्जूआ कैंप की एक पार्टी बन गई।

इंटरनेशनलिज्मों के लेख के अस्पष्ट अनुवाद के बावजूद, हमारे ये केन्द्रीय विचार स्पष्ट झलकते हैं। पर **फारवर्ड** अक्तूबर के सर्वहारा चरित्र से जुडे सवालों पर नहीं, जिससे वे सहमत है, बल्कि बाद की घटनाओं के प्रतिक्रांतिकारी चरित्र पर बहस करना चाहता है। हमारे प्रकाशनों में से कोई भी एक लेख इतिहास की समस्त समस्यओं से निपटने के लिए काफी नहीं। पर हमें हैरानी होती है जब हम पढतें हैं :"त्रात्सकीवादियों तथा बोरदिगावादियों के समान, **इंटरनेशनलिज्मों** के साथियों के लिए 'लेनिन के दिनों' तथा 'स्तालिन के दिनों' में एक अनुलंघनीय दीवार है। उनके वास्ते सर्वहारा की तब तक मात नहीं हो सकती थी जब तक लेनिन मर कर दफना नहीं दिया गया था और स्तालिन स्पष्टतया आरसीपी का नेता था" (**फारवर्ड**)। हम जानते हैं कि यह त्रात्सकीवादी ग्रुपों, जिनमें से **फारवर्ड** निकला है, का मर्मस्पर्शी मूलमन्त्र है, पर **आईसीसी** से इसका कोई वास्ता नहीं :

> "बोल्शेविक नेताओं की सोवियतों के रोल की समझ की कमी ने तथा वरग चेतना के विकास संबन्धी उनकी गलत धारणाओं ने रुसी क्रांति के पतन की प्रक्रिया में योगदान दिया। इस प्रक्रिया ने बोल्शेविक पार्टी को, जो 1917 में रुसी सर्वहारा का सच्चा अगुआ दस्ता थी, प्रतिक्रांति के एक सक्रिया ऐजण्ट में बदल दिया... । क्रांति के आरंभ से ही बोल्शेविक पार्टी का झुकाव सोवियतों को पार्टी-राज्य के औज़ारों में रुपान्तरित करने की ओर था" (उसूलों की घोषणा, **इंटरनेशनलिज्मों**)

और अन्यत्र :

> ''अक्तूबर क्रांति ने सर्वहारा इंकलाब के प्रथम -राजनीतिक - कार्यभार का सम्पादन किया। अन्तरराष्ट्रीय क्रांति की पराजय, तथा एक देश में समाजवाद की असंभवता के कारण, वह और ऊँचे स्तर, यानि आर्थिक रुपान्तरण की प्रक्रिया को शुरु करने तक नहीं उठ सकी। निस्देंह बोल्शेविक पार्टी ने अक्तूबर क्रांति का रास्ता प्रशस्त करती क्रांतिकारी प्रक्रिया में सक्रिय रोल अदा किया। क्रांति के अधःपतन और अन्तरराष्ट्रीय हारों में भी उसने सक्रिय रोल अदा किया। राज्य के साथ अपनी सांघटिक और वैचारिक एकरुपता स्थापित करके और राज्य की सुरक्षा को अपना मुख्य कार्यभार मानकर, बोल्शेविक पार्टी, विशेषकर गृहयुद्ध के बाद, अधिकाधिक प्रतिक्रांति तथा राज्य पूँजीवाद की एजेण्ट बनती गई थी।''

(प्लेटफार्म, रेवोल्यूशन इंटरनेशने....ल)।

प्रतिक्रांति की ओर का रास्ता एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसके बीज सोवियतों की ताकत को प्रतिबन्धित करने तथा सर्वहारा की स्व-सक्रियता के दमन संग बहुत पहले बोए गये थे। यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जो क्रांस्डैट में राज्य के हाथों सर्वहारा के एक हिस्से के नरसंहार की ओर ले गई। यह सब लेनिन के जीवनकाल में हुआ।

तो फिर रुसी क्रांति का अद्यःपतन क्यों हुआ? एक राष्ट्र के, सिर्फ रुस के ढाँचे में इसका उत्तर नहीं पाया जा सकता। जिस प्रकार रुसी क्रांति 1917 में अन्तरराष्ट्रीय क्रांति का पहला गढ़, सर्वहारा की अन्तरराष्ट्रीय बगावतों की श्रांखला में पहली कड़ी थी, उसी प्रकार प्रतिक्रांति में उसका अद्यःपतन भी एक अन्तरराष्ट्रीय परिघटना की, एक अन्तरराष्ट्रीय वर्ग, सर्वहारा, की गतिविधि की अभिव्यक्ति था।

अतीत की बुर्जूआ क्रांतिओं ने राष्ट्रीय राज्य को पूँजी के विकास के लिए एक तर्कसंगत ढाँचे के रुप में विकसित किया। बुर्जूआ क्रांतियां अलग-अलग देशों में एक सदी के और उससे भी लंबे अन्तराल से हो सकीं। इसके विपरीत, सर्वहारा क्रांति अपने सारतत्व से ही एक अन्तरराष्ट्रीय क्रांति है। उसे समूचे विश्व को अपने में समाहित करने की ओर बढ़ना होगा या फिर तेजी से विनष्ट हो जाना होगा।

पहले विश्व साम्राज्यवादी युद्ध ने पूँजीवादी चढ़ाव के दौर के अन्त को सूचित करते हुए, 19सवीं सदी के मज़दूर आन्दोलन और उसके फौरी उद्देश्यों के लिए एक ऐसे निर्णायक बिन्दू को अंकित किया जिससे अब पीछे लौटना संभव नहीं था। यूरोप के केन्द्रीय देशों में युद्ध के खिलाफ जन आक्रोश का तेजी से राज्य के खिलाफ सीधे हमलों में राजनीतिकरण हो गया। लेकिन सर्वहारा का बहुमत अतीत के अवशेषों (दूसरे इंटरनेशनल, जो अब वर्ग-दुश्मन के खेमे में था, की नीतियों का अनुसरण) से पीछा छुड़ाने तथा नए युग के समस्त निहितार्थों को समझने में असक्षम रहा। न तो समग्र रुप से सर्वहारा ही, और न ही उसके राजनीतिक संगठनों ने ''युद्ध और क्रांति'' के ''समाजवाद अथवा बर्वरता''

के नए युग में सर्वहारा संघर्ष की जरुरतों को पूर्णतया समझा। इस दौर में सर्वहारा के वीरोचित संघर्षों के बावजूद क्रांति का ज्वार यूरोप में मज़दूर वर्ग के कत्लेआम में डुबो दिया गया। उस युग में रुसी क्रांति समूचे मज़दूर वर्ग के लिए एक प्रकाश सतंभ थी। पर यह इस तथ्य को नहीं झुठलाता कि उसका अलग-थलग पड़ जाना एक गंभीर खतरा था। क्रांतिकारी विस्फोटों में अस्थाई अन्तराल के भी अपने खतरे हैं, पर 1920 तक यह दरार अधिकाधिक अपाटनीय हो गई थी।

क्रांति के अन्तरराष्ट्रीय उतार और रुसी क्रांति के अलगाव के अहम संदर्भ के भीतर बोल्शेविक पार्टी की अत्याधिक गंभीर गलतियों ने अपनी भूमिका अदा की। इन गलतियों को खुद वर्ग के तजरुबे और उसके संघर्षों से जोड़ना होगा। किसी वर्ग संगठन की गलतियाँ और उसके सकारात्मक पहलू न तो आसमान से टपकते हैं, न ही मनमाने रुप से विकसित होते हैं। शब्द के विराट अर्थ में वे खुद चेतना की अभिव्यक्ति होते हैं। बोल्शेविक पार्टी 1917 में रुसी सर्वहारा के उभार तथा जर्मनी और अन्यत्र की अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं की आशाओं के दबाव तले सैद्धान्तिक तथा संगठनात्मक रुप से विकसित हुई थी। प्रतिक्रांति की बढ़ती विजय के दौर में उसने सर्वहारा के अलगाव और उसके धराशायी होते जाने को भी प्रतिबिम्बित किया। हम बोल्शेविकों, स्पार्टकस्वादियों अथवा अन्य किसी भी संगठन को देखें। पहले विश्व युद्ध के बाद पतनशीलता के युग के नए कार्यभारों का सामना होने पर उनकी अपूर्ण समझ ने दुःखद राजनीतिक गलतियों का आधार मुहैया करवाया।

लेकिन सर्वहारा की पार्टी उसकी चेतना का मात्र निष्क्रिय प्रतिबिम्ब नहीं। वह उसके विकास तथा फैलाव में एक सक्रिय कारक है। हम देखते हैं कि पहले विश्व युद्ध के तथा क्रांतिकारी दौर में बोल्शेविकों द्वारा वर्ग के उद्देश्यों की स्पष्ट अभिव्यक्ति ने विजय की ओर के मार्ग को परिभाषित करने का काम किया - उन द्वारा "साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में बदल दो" का नारा; पूँजीवादी जनवादी सरकार का विरोध; तथा ''सारी सत्ता सोवियतों को दो'' के क्रांतिकारी प्रोग्राम के आधार पर कोमिन्टरन का गठन। इसी प्रकार, क्रांतिकारी लहर के उतार के संदर्भ में, बोल्शेविकों द्वारा अपनाई गई पोजीशनों ने (मध्यमार्गीय गुटों से अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर गठजोड़, युनियनवाद, संसदवाद संयुक्त मोर्चों की कार्यनीति, क्रांस्डैट) अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर और विशिष्ट रुप से रुस में प्रतिक्रांतिकारी प्रक्रिया को तीव्रतर करने में योगदान दिया। यूरोप में प्रतिक्रांति की जीत के साथ सर्वहारा गतिविधि की कुठाली से वंचित हो जाने के बाद रुसी क्रांति की गलतियाँ आगामी क्रमविकास से कट गईं। बोल्शेविक पार्टी खुद प्रतिक्रांति का एक औजार बन गई।

क्योंकि एक देश में समाजवाद की कोई संभावना नहीं, रुसी क्रांति के अद्यःपतन का सवाल सर्वोपरि मज़दूर वर्ग की अन्तरराष्ट्रीय पराजय का सवाल है। रुसी संदर्भ में ''भीतर'' से पूर्णतया छा जाने से पहले प्रतिक्रांति यूरोप में विजयी हुई। हम फिर दोहरा दें, यह रुसी क्रांति की अथवा बोल्शेविक पार्टी की गलतियों को ''क्षम्य'' नहीं बनाता। इस लिहाज़ से यह क्रांति करने में जर्मन या इतालवी सर्वहारा की असफलता को भी ''क्षम्य'' नहीं बनाता। मार्क्सवादियों का वास्ता इतिहास को ''माफ'' या न माफ करने से नहीं। बल्कि घटनाओं के कारणों, उनके ''क्यों'' की व्याख्या करने तथा भावी सर्वहारा संघर्षों के लिए सबक लेने से है। आरडब्ल्यूजी के विश्लेषणों से, जो **रुस में क्रांति तथा प्रतिक्रांति** पर केवल रुसी संदर्भ में विचार करते हैं, यह आम अन्तरराष्ट्रीय ढाँचा गायब है। किसी विशेष समस्या को सैद्धान्तिक रुप से विलग कर लेने से यह तरीका यूँ शायद उपयोगी लगे, वह रुस में घटित घटनाओं के ''क्यों'' को समझने का ढाँचा उपलब्ध नहीं कराता। इस प्रकार यह शुद्ध रुसी घटना बाबत शून्य में चक्कर काटने की ओर ले जाता है। जैसे रोजा लुग्जमवर्ग ने लिखा ''रुस में समस्या को केवल पेश किया जा सका था। उसे रुस में हल नहीं किया जा सकता था।''

क्रांति के अद्यःपतन के विशिष्ट पहलू

इस लेख की सीमाओं में हम स्वयं को अद्यःपतन की प्रक्रिया पर एक आम दृष्टिपात तक सीमित रखेंगे। विभिन्न प्रसंगों की तफसील में हम नहीं जाएँगे।

रुसी क्रांति को सर्वप्रथम व सर्वोपरि मज़दूर वर्ग के अन्तरराष्ट्रीय संघर्षों की एक अग्रिम (advance) जीत के रुप में देखा गया था। आगामी संघर्षों के लिए क्रांतिकारी ताकतें एकजुट करने के लिए बोल्शेविकों ने मार्च 1919 में एक नए, कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल , की पहली कांग्रेस बुलाई। यह विश्वासघाती सामाजिक जनवाद से उनके सम्बन्ध-विच्छेद का भी सूचक था। बदकिस्मती से जर्मनी में मज़दूर बगावत पहले ही जनवरी 1919 में कुचली जा चुकी थी। क्रांति का ज्वार उतार पर था। तो भी, रुस की करीब पूर्ण नाकेबन्दी तथा रुसी सर्वहारा तक पश्चिम से आती तोड़ी-मरोड़ी खबरों के बावजूद, क्रांति ने अपनी आस्था अपने जीवन की एक मात्र आशा - वर्ग उद्देश्यों के एक सुस्पष्ट कार्यक्रम के तहत क्रांतिकारी ताकतों की अन्तरराष्ट्रीय एकता में जाहिर की :

''सोवियत व्यवस्था सच्चे सर्वहारा जनवाद की संभावना सुनिश्चित करती है -सर्वहारा के लिए, सर्वहारा के भीतर तथा बुर्जूआजी के खिलाफ सेधत जनवाद। इस व्यवस्था में दबदबे का स्थान औद्योगिक सर्वहारा को हासिल है। इसके संगठन और इसकी राजनीतिक चेतना के कारण शासक वर्ग की भूमिका इसी वर्ग की है। इसका राजनीतिक दबदबा अर्ध सर्वहारा को तथा गरीब किसानों को धीरे-धीरे अपनी चेतना ऊपर उठाने का मौका देगा।

''विजयी संघर्ष की अनिवार्य पूर्वशर्तें हैं : पूँजी के न सिर्फ सीधे स्पष्ट पिछलग्गुओं तथा कम्युनिस्ट क्रांति के जल्लादों, दाहिने पंथी सामाजिक जनवादियों, से सम्बन्ध विच्छेद। बल्कि ''मध्यमार्ग'' (काउत्सकी का ग्रुप), जो ऐन नाजुक घड़ी सर्वहारा का साथ छोड़ वर्ग शत्रु से जा मिला, से भी सम्बन्ध विच्छेद।'' (कोमिन्टरन का प्लेटफार्म 1919)

1919 में, मध्यमार्गियों संग बाद के उन गठजोड़ों से पहले जिन्होंने पार्टी तथा इन्टरनेशनल का द्वार उनके लिए खोल दिया और जिनका अन्त ''संयुक्त मोर्चे'' में हुआ, स्थिति यही थी।

''अफ्रीका और एशिया के उपनिवेशी गुलामों! यूरोप में सर्वहारा अधिनायकत्व का दिन तुम्हारे लिए मुक्ति के दिन के रुप में उदय होगा।'' (कोमिन्टरन का घोषणापत्र 1919)

न कि इसके विपरीत, जैसे पूँजी का वामपक्ष अद्यःपतित इन्टरनेशनल की राष्ट्रीय मुक्ति विषयक प्रतिक्रांतिकारी प्रस्थापनाओं का अनुसरण करते हुए आज कहता है।

''हम दुनिया के समस्त मज़दूरों का आवाहन करते हैं कि वे कम्यूनिज्म के झण्डे तले , जो पहले ही समस्त देशों के लिए सर्वहारा की आरंभिक जीतों का झण्डा है, एकजुट हो जाएँ।'' (वही)

''मज़दूर कौंसिलों के, सत्ता के लिए क्रांतिकारी संघर्ष के, तथा सर्वहारा अधिनायकत्व के झण्डे तले, तीसरे इन्टरनेशनल के झण्डे तले, दुनिया के मज़दूरों एक हो !''

ये पोजीशनें सर्वहारा द्वारा पूर्व सालों में बढ़ाए गये जबरदस्त कदम को प्रतिबिम्बित करती थीं। बोल्शेविकों द्वारा प्रस्तुत तथा रक्षित पोजीशनें बहुधा उनके पूर्ववर्ती प्रोग्राम से स्पष्टतया हट कर थीं और समूचे वर्ग के लिए क्रांतिकारी परिस्थिति की जरुरत को पहचानने का आहवान थीं।

लेकिन 1920 तक, उसी इन्टरनेशनल की दूसरी कांग्रेस में बोल्शेविक नेताओं ने अतीत की अपनी ''कार्यनीतियों'' की ओर मुख मोड़ लिया था। क्रांति की आशा तेजी से कमजोर पड़ती जा रही थी और बोल्शेविक पार्टी अब इन्टरनेशनल की सदस्यता के लिए 21 शर्तों की पक्षधर थी। इनमें शामिल थी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों को, चुनावी हिस्सेदारी को तथा यूनियनों में घुसपैठ को मान्यता। संक्षेप में सामाजिक जनवादी कार्यक्रम का पुनःश्रृंगार, जो (कार्यक्रम) नई परिस्थिति में नितान्त अपर्याप्त था। रुसी पार्टी इन्टरनेशनल में अभिभावी ताकत और उसका केन्द्र बन गई। एमस्टर्डम ब्यूरो बन्द कर दिया गया। बोल्शेविक नेतृत्व वामपंथी कम्युनिस्टों को अलग-थलग करने में कामयाब रहा : बोरदिगा के नेतृत्व में इतालवी वामपंथी ग्रुप, पांकहर्स्ट तथा पान्नाकुक के गिर्द इंग्लिश साथी, गार्टर तथा केऐपीडी (जिसे तीसरे कांग्रेस से बहिष्कृत कर दिया गया था)। बोल्शेविक और तीसरे इन्टरनेशनल की प्रभावशाली ताकतें उन्हीं ढुल-मुल तथा विश्वासघाती मध्य-

मार्गियों के साथ मिलने की पक्षधर थीं जिनकी दो बरस पहले उन्होंने घोर निन्दा की थी। अपनी पैंतरेबाजियों तथा वामपक्ष की झूठी निन्दा से बोल्शेविकों ने इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी तथा अन्यत्र सिद्धान्तनिष्ठ आधार पर कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की तमाम सम्भावनाओं को कारगर रुप से खत्म कर दिया। इन कार्यवाहियों द्वारा 1922 की चौथी कांग्रेस के ''संयुक्त मोरचे'' के लिए और रुसी पितृभूमि तथा ''एकदेश में समाजवाद'' के लिए रास्ता खोल दिया गया।

प्रतिक्रांति की प्रक्रिया में एक अन्य बिन्दू था जर्मन सैन्यवाद के साथ रेपेलो की गुप्त संधि। ब्रेस्तलितोवस्क की संधि के सकारात्मक अथवा नाकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण जो भी हो, वह बोल्शेविकों की लम्बी बहसों के बाद खुलेआम की गई थी। उसे नाजुक परिस्थितियों द्वारा थोपे एक अपरिहार्य कदम के रुप में फौरन विश्व सर्वहारा के समक्ष घोषित कर दिया गया था। लेकिन मात्र चार बरस बाद, रेपेलो की संधि (जर्मन राज्य के साथ एक गुप्त संधि) ने उस सबके साथ विश्वासघात किया जिसका बोल्शेविज्म प्रतीक था। प्रतिक्रांति के बीज एक क्रांतिकारी युग की लाक्षणिक गति से बोये गए, जब महान परिवर्तन कुछ बरसों अथवा कुछ महीनों में समेट दिये जाते हैं। अन्त में ''एक देश में समाजवाद'' के सिद्धान्त को इन्टरनेशनल का अन्तरराष्ट्रीय कार्यक्रम घोषित कर दिये जाने के साथ, किसी वक्त इतनी बहादुरी से प्रतिरक्षित कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के शरीर से समस्त जीवन खत्म हो गया।

कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के समूचे हिंसक इतिहास को तिकड़मबाज बोल्शेविकों के किसी आख्यान में नहीं बदला जा सकता जिन्होंने कि रुस तथा अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर मज़दूर वर्ग से विश्वासघात खातिर जानबूझकर षडयन्त्र किया। इतिहास ऐसी बचकानी धारणाओं से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। मज़दूर वर्ग ने यद्यपि ऐसे तमाम लोगों को जीवन दिया जिन्होंने अपने साथी मज़दूरों के हितों के लिए स्पष्टतया लड़ाई लड़ी, वह स्वयं को अपने संगठनों के शुद्धीकरण के लिए सक्षम नही बना पाया। और आखिरकार वह यह नहीं कर सका - स्वयं उस हार की वजह से जिसने क्रांतिकारी सिद्धान्तों के भ्रष्टीकरण को प्रथम चिंगारी दी।

मार्क्स और ऐंग्लस ने अनुभव किया कि प्रतिक्रिया के दौर की शुरुआत के बाद कोई पार्टी अथवा इन्टरनेशनल वर्ग के औजार के रुप में जीवित नहीं बच सकती। वर्ग की सक्रियता की गैर-हाजिरी में यह यन्त्र एक संगठनात्मक इकाई के रुप में बरकरार नहीं रह सकता। वह उतार अथवा पराजय द्वारा व्याप्त हो जाता है और आखिरकार उलझावों अथवा प्रतिक्रांति की सेवा करता है। 1848 की क्रांतिकारी लहर के ठंडा पड़ जाने पर मार्क्स द्वारा कम्युनिस्ट लीग को भंग कर दिये जाने तथा 1871 की क्रांति की पराजय द्वारा एक युग के अन्त को सूचित किए जाने के बाद पहले इन्टरनेशनल को (न्यूयार्क रवाना करके) खत्म करने का कारण भी यही था। मज़दूर आंदोलन में अपने प्रमाणिक योगदान के बावजूद, अपनी प्रत्येक पार्टी के सुधारवाद से तथा राष्ट्रीय फोकस से अधिकाधिक बंधते जाने की वजह से दूसरा इन्टरनेशनल पूँजीवादी चढ़ाव के दौर में भ्रष्टीकरण की लम्बी प्रक्रिया का शिकार हुआ। बुर्जुआ कैंप में उसका निर्णायक प्रवेश 1914 में साम्राज्यवादी युद्ध तथा उसकी तैयारी में इन्टरनेशनल की साझेदारी के साथ हुआ। मज़दूर वर्गीय संकट की इन घड़ियों में, सैद्धान्तिक विशदीकरण तथा चेतना के विकास का सतत् कार्यभार पुराने संगठन से निकले तथा नयों के आधार तैयार करते क्रांतिकारी धड़ों पर आन पड़ा। तीसरा इन्टरनेशनल प्रथम युद्धोत्तर वर्षो की क्रांतिकारी लहर की प्रत्याशा पर निर्मित हुआ था। परन्तु क्रांतिकारी लहर की पराजय तथा प्रतिक्रांति की विजय का परिणाम था वर्गयन्त्र के रुप में उसका नाश। प्रतिक्रांति की यह प्रक्रिया ''एक देश में समाजवाद'' की घोषणा के साथ परिपूर्ण हुई (यद्यपि यह पहले ही शुरु हो चुकी थी)। इसके साथ ही क्रांतिकारी धड़ों के इन्टरनेशनल में बने रहने की वस्तुगत सम्भावनाओं का निर्णायक अन्त हुआ। इसने एक पूरे युग की मृत्यु-घण्टी का काम किया।

समाज पर शासक वर्ग के वैचारिक दबदबे की ताकत की वजह से बुर्जूआ विचारधारा सर्वहारा संघर्षों के भीतर रिस सकती है। लेकिन एक बार किसी संगठन के बुर्जूआ कैंप में निर्णायक गमन के बाद उसके किसी भी संभव ''पुनरउद्वार'' का रास्ता बन्दा हो जाता है। जिस प्रकार एक पूँजीवादी संगठन, आज जिनमें स्तालिनवादी त्रातस्कीवादी तथा माओवादी पार्टियां भी शामिल हैं, से सर्वहारा वर्ग चेतना को अभिव्यक्त करता कोई जीवन्त ग्रुप (यद्यपि व्यक्ति सम्बन्ध विच्छेद में शायद कामयाब हो जाएँ) नहीं उभर सकता। उसी प्रकार कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल और वे सभी कम्युनिस्ट पार्टियां जो उसमें बनी रहीं सर्वहारा के लिए सदा-सर्वदा के लिए खो गईं।

इस प्रक्रिया को पश्चदृष्टि (hindsight) से देखना जितना आसान है उतना, बदकिस्मती से, उस वक्त नही था। ना तो समूचे वर्ग के लिए न उसके अनेक राजनीतिक तत्वों के लिए। पचास बरस की दूरी ने हमें जो सिखाया है उसे अतीत पर लागू करने की आशा से हम इतिहास नहीं लिख सकते। प्रतिक्रांति की जिस प्रक्रिया ने कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल को अपना शिकार बनाया उसने पिछले पचास या अधिक सालों से मज़दूर आंदोलन में भयंकर उलझाव पैदा किये हैं। जहां तक कि चौथे तथा पांचवें दशक के अंधेरे वर्षो में सैद्धान्तिक विशदीकरण का काम जारी रखने वाले, वामपंथी कम्युनिस्ट आन्दोलन के अवशेष भी पराजय के दौर से समस्त निहितार्थों को समझने में काफी धीमे थे। उन उद्धत ''आधुनिकतावादियों'' को, जिन्होंने 1974 अथवा 1975 में सब कुछ ''खोज निकाला'', परछाईयों को सबक सिखाने दो कि इतिहास कैसा होना चाहिए था।

रुसी संदर्भ

आरडब्ल्यूजी के पैम्फलेट **रुस में क्रांति तथा प्रतिक्रांति** में बोल्शेविकों के अन्तरराष्ट्रीय कार्यक्रम को, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिक्रांति की प्रक्रिया में उनके रोल को व्यवहारतया नज़र अन्दाज़ कर दिया गया है। उक्त ग्रुप की पत्रिका फारवर्ड के पाठ में उसका उड़ते-उड़ते ज़िक्र है। इन साथियों के लिए प्रतिक्रांति मूलतया नेप (नई आर्थिक नीति) द्वारा परिभाषित थी। उनके लिए नेप ''सोवियत यूनियन के इतिहास में एक विभाजन रेखा है। यह वह बरस है जब पूँजीवाद पुनः स्थापित किया गया। राजनीतिक अधिनायकत्व पराजित हो गया था और सोवियत यूनियन अब मज़दूर राज्य नहीं रहा था।'' (**रुस में क्रांति तथा प्रतिक्रांति**) सर्वप्रथम हम यह स्पष्ट कर दें। रुसी संदर्भ में घटनाएं जो भी घटी हों, सर्वहारा चेतना पर उसका असर जो भी रहा हो, अन्तरराष्ट्रीय इंकलाब अथवा एक इन्टरनेशनल किसी देश में एक आर्थिक नीति के गलत होने से ही नहीं मर जाता। आरडब्ल्यूजी की सामग्रियों में नेप अथवा आमतौर पर रुस में घटनाओं के विकास के विश्लेषण के किसी सुसंगत ढाँचे को खोजना बेकार है।

रुस की धरती पर क्रांति का अद्यःपतन सोवियतों के जानलेवा ह्रास में तथा बोल्शेविक राज्य-पार्टी के उपांग में उनके रुपांतरण में अभिव्यक्त हुआ। सर्वहारा की स्व-सक्रियता, सोवियत व्यवस्था में मज़दूर वर्गीय जनवाद अक्तूबर की विजय का मूलाधार थे। लेकिन काफी पहले, 1918 में ही इस बात के स्पष्ट संकेत थे कि मज़दूर कौंसिलों की राजनीतिक ताकत तथा उसकी अभिव्यक्ति को राज्य मशीन द्वारा सीमित किया तथा अन्ततः कुचला जा रहा है। रुस में सोवियतों के ह्रास की यह प्रक्रिया क्रांस्डैट में मज़दूर वर्ग के एक हिस्से के कत्लेआम की ओर ले गई। यह कोई अचंभे की बात नहीं कि नेप से चिपका आरडब्ल्यूजी रुसी राज्य के सम्बन्ध में क्रांस्डैट के नरसंहार का जिक्र तक नहीं करता। रुस विषयक उसकी दो बुनियादी रचनाओं में भी क्रांस्डैट का जिक्र नहीं। इनमें रेपेलो के बारे में भी एक शब्द नहीं। यह शायद समझ में आने वाली बात है कि त्रात्सकीवादी जड़सूत्रों में से हाल ही में निकले आरडब्ल्यूजी के साथियों ने इन लेखों को लिखते वक्त यह नहीं समझा कि क्रांस्डैट एक ''प्रतिक्रांतिकारी बगावत'' नहीं था जैसा लेनिन तथा त्रात्सकी ने कहा। लेकिन यह बात समझ नहीं आती जब वे **इन्टरनेशनलिज्मों** के हमारे साथियों पर ''लेनिन के जीवनकाल में क्रांति के अद्यःपतन की प्रक्रिया'' न देख पाने का आरोप लगाते हैं।

रुस में बोल्शेविक पार्टी की बुनियादी गलती थी यह अवधारणा कि सत्ता का प्रयोग वर्ग के एक अल्पांश, पार्टी, द्वारा किया जाना चाहिए। उनका

विश्वास था कि पार्टी वर्ग के लिये समाजवाद ला सकती है। उन्होंने यह नहीं समझा कि मज़दूर कौंसिलों में संगठित समूचा सर्वहारा ही समाजवादी रुपान्तरण का कर्त्ता हो सकता है। पार्टी द्वारा राज्यसत्ता संभालने की अवधारणा उस वक्त समूचे वाम, रोजा लुग्जमवर्ग तथा 1921 में केएपीडी, सब की रचनाओं में एक न एक हद तक विद्यामान थी। पार्टी-सत्ता का रुसी तजरुबा, सर्वहारा ने जिसकी कीमत अपने रक्त में चुकायी, पार्टी अथवा वर्ग के अल्पांश द्वारा ''मज़दूर वर्ग के नाम पर'' सत्ता संभालने के सवाल पर स्पष्ट वर्ग रेखा को चिन्हित करता है। अब से यह बात वर्ग के क्रांतिकारी गुटों का प्रमाण चिन्ह बन गई कि पार्टी तथा राज्य को एक दूसरे में गड्ड-मड्ड नहीं किया जा सकता। और तदोपरान्त यह कि वर्ग के राजनीतिक संगठनों का रोल वर्ग चेतना में योगदान देना है न कि स्वयं को समूचे वर्ग के स्थान पर रखना।

पूँजीवाद के विध्वंसक के रुप में मज़दूर वर्ग के ऐतिहासिक वर्ग हित सदैव शुरु से ही पूर्णतः स्पष्ट नहीं थे। ऐसा हो भी नहीं सकता था। क्योंकि मज़दूर वर्गीय राजनीतिक चेतना प्रभावी बुर्जुआ विचारधारा के दबाव द्वारा निरन्तर अवरुद्ध की जाती है। जैसे मार्क्स ने यह जाने बिना **कम्युनिस्ट घोषणापत्र** की रचना की कि सर्वहारा बुर्जुआ राज्य यन्त्र पर कब्जा करके उसका प्रयोग नहीं कर सकता। इस बात को अनपल्ट रुप से स्पष्ट करने के लिए कि समाज पर अपना अधिनायकत्व लागू करने के लिए सर्वहारा को बुर्जुआ राज्य सत्ता को तहस-नहस करना होगा, पेरिस कम्यून के जीवन्त तजरुबे की जरुरत थी। इसी प्रकार पार्टी के रोल का सवाल 1917 तक मज़दूर आन्दोलन में बहस का विषय रहा। पर रुसी तजरुबे ने इस सवाल पर वर्ग रेखा को अंकित किया। वे सब जो आज बोल्शेविकों की गलतियों को दोहराते अथवा उन्हें दोहराने का उपदेश देते हैं वर्ग रेखा के दूसरी ओर हैं।

सोवियतों का दमघोंट कर रुसी राज्य ने जिस चीज को खत्म किया वह समाजवाद की स्वयं प्रेरणाशक्ति से कुछ कम नहीं थी। समूचे वर्ग की संगठित स्वायत्त गतिविधि के बिना, रुसी स्थिति में पुनरुद्धार की प्रत्येक आशा धीरे-धीरे मिटा दी गई। बोल्शेविकों की आर्थिक नीति पर बात होती रही। वह बदली जाती रही तथा उसमें हेर-फेर होता रहा। लेकिन रुस में उनका राजनीतिक रुख (thrust) क्रांति की कब्र खोदने की एक अपरिवर्तित, बुनियादी प्रक्रिया था। इस प्रक्रिया की गंभीरता को इस तथ्य से देखा जा सकता है कि रुसी दुःखांत अन्तरराष्ट्रीय पराजय के संदर्भ में घटित हुआ।

सर्वहारा का अधिनायकत्व

पहले युद्धोत्तर काल के समूचे क्रांतिकारी तजरुबे से निकलते सबकों में से पहला तथा प्रमुख है यह सबक कि सर्वहारा संघर्ष सर्वोपरि एक अन्तरराष्ट्रीय संघर्ष है। और सर्वहारा अधिनायकत्व (एक क्षेत्र में अथवा विश्वभर में) सर्वप्रथम और सर्वोपरि एक राजनीतिक प्रश्न है।

बुर्जुआजी के विपरीत सर्वहारा एक शोषित न कि शोषक वर्ग है। उसके पास अपने वर्ग-भाग्य को आधारित करने के लिए कोई आर्थिक विशेषाधिकार नहीं। पूंजीवादी क्रांतियां मुख्यता एक पूर्व सम्पन्न आर्थिक कार्य की राजनीतिक स्वीकृति थीं। इस बात की स्वीकृति कि क्रांति के वास्तविक वक्त के पूर्व-बरसों के दौरान पूंजीपति वर्ग समाज में आर्थिक रुप से प्रभावी वर्ग बन गया था। सर्वहारा क्रांति एक राजनीतिक प्रस्थान विन्दू -सर्वहारा तानाशाही- से समाज का आर्थिक रुपांतरण शुरु करती है। सर्वहारा के पास न तो पुराने और न ही नए समाज में रक्षा के लिए विशेषाधिकार हैं। समाज के रुपान्तरण को निर्देशित करने के लिए उसके पास है सिर्फ उसकी संगठित ताकत, अपनी वर्ग चेतना, मज़दूर कौंसिलों के जरिए उसकी राजनीतिक ताकत। इससे पहले कि सर्वहारा की तानाशाही के तत्वाधान में एक सच्चा सामाजिक रुपान्तरण सम्पन्न किया जा सके, बुर्जुआ सत्ता का विनाश तथा बुर्जुआजी के संपत्तिहरण की विश्व-व्यापी विजय जरुरी है।

पूंजीवादी समाज का बुनियादी नियम, मूल्य का नियम, समग्र विश्व मण्डी की पैदाइश है। उसे किसी भी प्रकार, शक्ल अथवा रुप में एक देश (अत्याधिक विकसित देश तक) अथवा देशों के किसी एक ग्रुप के भीतर मिटाया नहीं जा सकता। उसे सिर्फ विश्व व्यापी आधार पर ही मिटाया जा सकता है। इस तथ्य से किसी भी प्रकार बचा नहीं जा सकता। इसे मुंह जुबानी मान कर और फिर फौरन इस तथ्य को नजर अंदाज करके, एक देश में मुद्रा अथवा मज़दूरी प्रथा (जो कि सीधे मूल्य के नियम तथा समूची पूंजीवादी व्यवस्था की पैदाइश है) के खातमे की संभावना की बात करके भी नहीं। समाज का रुपान्तरण मज़दूर कौंसिलों द्वारा अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर सत्ताहरण के बाद आता है न कि पहले। सर्वहारा के पास इस रुपान्तरण का एकमात्र हथियार है :–

1. समूचे विश्व में क्रांति को विजय तक ले जाने के लिए उसकी हथियारबन्द संगठित ताकत।

2. उसके कम्युनिस्ट कार्यक्रम की चेतना जो कि समाज के आर्थिक रुपान्तरण के लिए राजनीतिक दिशा-विन्यास है।

सर्वहारा की विजय एक कारखाने अथवा एक देश में सभी कारखानों को ''मैनेज'' करने की उसकी क्षमता पर निर्भर नहीं। पूंजीवादी व्यवस्था के बरकरार रहते उत्पादन का प्रबन्ध, ऐसे ''प्रबन्ध'' को अतिरिक्त मूल्य उत्पादन तथा विनियम के ''प्रबन्ध'' के लिए अभिशप्त कर देता है। किसी एक देश अथवा क्षेत्र में विजयी सर्वहारा का प्रथम कर्त्तव्य यह हिसाब लगाना नहीं कि ''समाजवाद के रहस्यमयी द्वीप'' की रचना, जो असम्भव है, कैसे की जाए। बल्कि उसका कर्त्तव्य है अपनी समस्त सहायता अपनी एकमात्र आशा -विश्व क्रांति की जीत - को देना।

यहां प्राथमिकताओं को स्पष्ट करना अत्याधिक महत्वपूर्ण है। एक देश अथवा क्षेत्र में सर्वहारा जो आर्थिक कदम उठाएगा वे गौण महत्व का सवाल हैं। बेहतरीन अवस्था में भी वे एक सकारात्मक दिशा की ओर ले जाते महज कामचलाऊ उपाय हैं। अगर क्रांति बढ़ती रहती है तो कोई भी गलती सुधर सकती है। लेकिन अगर सर्वहारा अपनी राजनीतिक सुसंगता अथवा हथियारबन्द ताकत खो देता है या फिर मज़दूर कौंसिलें अपना राजनीतिक नियंत्रण तथा अपने लक्ष्य की स्पष्ट चेतना खो देती हैं, तो किसी प्रकार की गलतियां सुधरने की अथवा समाजवादी भविष्य की कोई आशा नहीं हो सकती।

आज इस अवधारणा के खिलाफ विरोध के बहुत से स्वर उठाये जाते हैं। उनमें से कुछ का दावा है कि सर्वहारा संघर्ष के राजनीतिक फोकस की बात महज एक पुरातन प्रतिक्रियावादी बकबास है। वास्तव में, उनके लिए वस्तुगत रुप से परिभाषित एक क्रांतिकारी वर्ग, सर्वहारा, की अवधारणा ही एक पुरातन बात है जिसे प्रत्येक ''उत्पीड़ित'', मानसिक रुप से प्रताड़ित अथवा दार्शनिक झुकाव रखने वाले व्यक्तियों से गठित एक नये सार्वभौम वर्ग को स्थान देना चाहिए। ''कम्युनिस्ट रिश्तों'' अथवा उसी नाम के एक ब्रिटिश ग्रुप (अब लुप्त) मुताबिक, ''कम्युनिस्ट व्यवहार'' की लोग जब चाहें फौरन सिद्धि की जा सकती है। असल में, उनके लिए वास्तव में ही महत्वपूर्ण चीज़ सर्वहारा द्वारा अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर सत्ता सम्भालना तथा पूंजीपति वर्ग को मिटाना नहीं। बल्कि ''जनता'' के स्वत-स्फूर्त उभार द्वारा कम्युनिस्ट सम्बन्धों की फौरन स्थापना है।

इस ''सिद्धांत'' के नितान्त अमूर्त तथा रहस्यमयी तत्वों को हमें इस तथ्य के प्रति अन्धा नहीं कर देना चाहिए कि वे ''सेल्फ मैनेजमेंट'' की विचारधारा के लिए बिल्कुल सही आढ़ का काम करते हैं। पूंजीवादी संकट की गहराइयों की प्रतिक्रिया में बढ़ता मज़दूर वर्गीय असन्तोष जैसे-जैसे जन आन्दोलन पैदा करता है, बुर्जुआजी की एक प्रतिक्रिया मज़दूरों को यह बताना हो सकती है कि उनके वास्तविक हित बुर्जुआ राज्य को तहस-नहस करने जैसे ''मात्र राजनीतिक मामलों'' की चिन्ता करने में नहीं। बल्कि वे हैं फैक्टरियों का अधिग्रहण करने तथा उन्हें खुद ''अपने लिए'' ढंग से चलाने में। बुर्जुआजी इस बात का प्रयास करेगा कि मज़दूर शोषण के सेल्फ मैनेजमेंट के आर्थिक कार्यक्रम को लागू करने के निरर्थक प्रयास में अपने आप को थका डालें। जब कि पूंजीपति वर्ग और उनका राज्य इस वक्त का उपयोग बिखरे टुकड़ों को जोड़ने में करेगा। 1920 में इटली में यही हुआ जब ओरडीनो नोवो और ग्राम्सी ने फैक्टरी अधिपत्यों

(occupations) की आर्थिक संभावनाओं को बढ़ाया-चढ़ाया। जबकि बोरदिगा के साथ वामपंथी धड़े ने चेतावनी दी कि मज़दूर कौंसिलों की जड़ें यद्यपि कारखानों में हैं, उन्हें या तो राज्य तथा समूची व्यवस्था पर सीधे-स्पष्ट हमले की ओर बढ़ना होगा या फिर खत्म हो जाना होगा।

आरडब्ल्यूजी के साथी राजनीतिक संघर्ष को नहीं नकारते। वे अपने आप को यह कहने तक सीमित रखते हैं कि राजनीतिक वेग़ तथा आर्थिक नीति एक समान महत्वपूर्ण तथा निर्णायक हैं। एक अर्थ में वे इस मार्क्सवादी समान्योक्ति को दोहराते हैं कि सर्वहारा पूंजीपति वर्ग पर राजनीतिक प्रभुत्व की लडाई मात्र सत्ता की भूख के किसी मनोविकार के तहत नहीं लडता। आज के एकमात्र क्रांतिकारी वर्ग के रुप में, जो अपने आपको तथा समूची मानवता को सदा सर्वदा के लिए शोषण से मुक्त कर सकता है, मज़दूर वरग अपने संघर्ष तथा स्व-सक्रियता के जरिये सामाजिक रुपान्तरण की आधारशिलाएं रखने के मकसद से यह लडाई लडता है। लेकिन आरडब्ल्यूजी के साथियों के पास इस चीज़ की कोई साफ समझ नहीं कि सामाजिक रुपान्तरण की प्रक्रिया कैसे घटित होती है। क्रांति पूंजीवादी राज्य पर एक द्रुत हमला है, लेकिन समाज का आर्थिक रुपान्तरण एक अति पेचीदगी भरी विश्वव्यापी प्रक्रिया है। इस आर्थिक प्रक्रिया को सफलता पूर्वक सिरे चढ़ाने के लिए सर्वहारा की तानाशाही के राजनीतिक ढांचे का स्पष्ट होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, सर्वहारा द्वारा सत्ता अधिग्रहण यह मानने के समान नहीं कि समाजवाद को आज्ञप्ति द्वारा लागू किया जा सकता है। इस प्रकार :

1. आर्थिक रुपान्तरण सर्वहारा क्रांति के सिर्फ बाद ही हो सकता है न कि उससे पहले (पूंजीपति वर्ग के सत्ता में रहते "समाजवाद का कोई निर्माण" नहीं हो सकता)। न ही यह समाज पर मज़दूर वर्ग की सत्ता के समकालिक है।

2. सर्वहारा की राजनीतिक ताकत समाजवादी रुपान्तरण का रास्ता खोल देती है। लेकिन क्रांति के अग्रसर होने की बुनियादी गरन्टी है वर्ग की एकता तथा सुसंगतता। वर्ग आर्थिक रुप से गलतियां कर सकता है। इन्हें सुधारना होगा। लेकिन अगर वे सत्ता किसी अन्य वर्ग अथवा पार्टी को थमा देते हैं, तो किसी भी प्रकार का आर्थिक रुपान्तरण स्पष्टता असंभव है।

हमारी इस पुष्टि से कि सर्वहारा की राजनीतिक तानाशाही, सामाजिक रुपान्तरण के लिए एक ढांचा और एक पूर्व शर्त है, भोले लोग (simple minded) निष्कर्ष निकालते हैं : "ऐसा लगता है कि **इन्टरनेशनलिज्मों** सर्वहारा द्वारा पूंजीवाद पर आर्थिक जंग की जरुरत को नकारता है।" (फारवर्ड पेज 44)

फारवर्ड के दावे के विपरीत, क्रांतिकारी संघर्ष के लिए प्रत्येक चीज फौरन एक समान अहमियत तथा गम्भीरता की नहीं होती। एक देश जिसमें अभी-अभी विजयी इंकलाब हुआ हो, मज़दूर कौंसिलें किसी अन्य क्षेत्र में घिरे अपने बन्धुंओं को भेजने के लिए हथियार और माल-असबाब के उत्पादन के लिए शायद 10-12 घण्टे तक काम करना जरुरी समझें। क्या यह समाजवाद है? उस हद तक नहीं, जिस हद तक समाजवाद के बुनियादी उसूल हैं मानवीय आवश्यकताओं (न कि तबाही) के लिए पैदावार तथा कार्यदिवस में कमी। तो क्या फिर इसे एक प्रतिक्रांतिकारी प्रस्ताव के रुप में निन्दित किया जाए? निश्चय ही नहीं, क्योंकि अन्तरराष्ट्रीय क्रांति के फैलाव को सहायता पहुंचाना मज़दूर वर्ग का प्राथमिक कर्तव्य तथा उसकी मुक्ति की आशा है। क्या हमें यह स्वीकार नहीं करना पड़ेगा कि आर्थिक कार्यक्रम वर्ग संघर्ष की अवस्थाओं के तहत है। कि एक देश में मज़दूरों का आर्थिक जन्नत रचने का कोई उपाय नहीं। इसके अतिरिक्त, हमें इस बात जोर देना पड़ेगा कि नीति तय करने तथा संघर्ष को दिशा देने की कौंसिलों की ताकत में राजनीतिक कमज़ोरी आना घातक होगा।

क्रांतिकारी अपने साथी मज़दूरों से झूठ बोल रहे होंगे अगर वे जानलेवा संघर्ष और गृहयुद्ध की विशाल बरबादी तथा तबाही पर जोर देने की बजाए उन्हें दूध-मलाई और आर्थिक चमत्कारों के सब्जबाग दिखाऐंगे। यह घोषणा करके कि अवश्यंभावी आर्थिक गतिरोधों का (एक देश, अनेक देशों अथवा क्षेत्रों में) अर्थ है क्रांति का अन्त, वे मज़दूर वर्ग को पस्तहिम्मत करते हैं। इन सवालों को फौरन राजनीतिक एकबद्धता, मज़दूर वर्गीय जनवाद तथा फैसले लेने की सर्वहारा की ताकत के स्तर पर रख कर, वे वर्ग संघर्ष के केन्द्रीय फोकस से तथा समाजवाद में संक्रमण के विश्व-व्यापी दौर के उद्‌घाटन से ध्यान हटा रहे होंगे।

आरडब्ल्यूजी का उत्तर है कि आखिर "क्रांति के बाद सब कुछ पहले जैसा ही नहीं रह सकता"। वे 1921 में रुस में मज़दूरों की दुखद अवस्थाओं की और इशारा करते हैं। लेकिन वे वास्तव में हमें नहीं बताते कि वे किन अवस्थाओं की बात कर रहे हैं। क्या वे इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं कि मज़दूर वर्ग के जनसंगठन "मज़दूर राज्य" में कारगर हिस्सेदारी से वंचित कर दिए गये थे? कि पीटरोग्राड में हड़ताल करने पर मज़दूरों का दमन किया गया? अगर बात ऐसी है, तो वह क्रांति के पतन का सारतत्व है। या बात सिर्फ इतनी है कि वहां अकाल था? यहां हमारे लिए यह नाटक करना बेकार है कि क्रांति के बाद अकाल और मुसीबतों के खतरे का कतई अस्तित्व नहीं होगा। या बात यह है कि मज़दूरों को अभी भी कारखानों में काम करना पड़ता था और कि एक देश में मज़दूरी प्रथा का खात्मा नहीं किया गया था। या कि विनिमय का अभी अस्तित्व था? ये प्रथाऍं स्पष्ट ही समाजवाद नहीं। तो भी अगर हम स्वांग नहीं रचते कि मूल्य के नियम को मात्र अंगुलियां चटखा कर मिटाया जा सकता है, उनसे बचा नहीं जा सकता। जैसे कि आरडब्ल्यूजी कहता है "कहीं न कहीं लकीर खींचनी ही होगी।" लेकिन कहां? वर्ग की राजनीतिक सुसंगतता और उसकी ताकत को आर्थिक गत्यारोधों से गड्डगड्ड करने पर भावी संघर्ष की समस्याएं महज इच्छा-पूर्ति की बात बन कर रह जाती हैं।

समाजवाद अथवा कम्युनिस्ट सामाजिक सम्बन्ध ा (ये शब्द यहां अदल-बदल कर प्रयोग किये गये हैं) मूलतः समस्त "अन्धे आर्थिक नियमों" का, विशेषकर मूल्य के नियम का, जो पूंजीवादी उत्पादन को शासित करता है, पूर्ण विलोपन हैं। ताकि मानवजाति की जरुरतों को पूरा किया जा सके। समाजवाद समस्त वर्गों का अन्त है। यह समस्त गैर-पूंजीवादी स्क्टरों का समाजीकृत उत्पादन में संघटन तथा मुक्त रुप से सम्बद्ध श्रम द्वारा अपनी आवश्यकताओं का फैसला करने की शुरुआत है। सह तमाम शोषण और राज्य (वर्ग विभाजित समाज की अभिव्यक्ति) की समस्त जरुरत का और मज़दूरी प्रथा तथा मार्किट इकोनमी के अपने सहवर्तियों के साथ पूंजी के संचय का अन्त है। यह जीवन्त श्रम पर मुर्दा श्रम (पूंजी) के दबदबे का अन्त है। इस प्रकार समाजवाद नए आर्थिक नियमों की रचना नहीं बल्कि सर्वहारा के कम्युनिस्ट कार्यक्रम के तत्वाध ाान में पुराने नियमों को जड़ से मिटाने का सवाल है। पूंजीवाद महज एक सिगार पीता विलेन नहीं। वह है विश्व मण्डी का समूचा वर्तमान ढांचा, विश्व-व्यापी वर्तमान श्रम विभाजन, किसानी समेत अन्य निजी हाथों में उत्पादन, पिछडापन, कंगाली तथा विनाशा के लिए उत्पादन। इस सब को मानव इतिहास से सदा सर्वदा के लिए उखाड़ फेंकना और मिटाना है। इसके लिए अगर अधिक नहीं तो विश्व पैमाने पर कम से कम एक पीढ़ी तक चलते भीमाकार आर्थिक रुपान्तरण की एक प्रक्रिया की जरुरत है। और भी वजनी बात यह है कि कोई भी मार्क्सवादी विश्व क्रांति के बाद सर्वहारा को दरपेश स्थितियों की तफसीलों का पूर्वनुमान नहीं लगा सकता। मार्क्स भविष्य के "नक्शे" बनाने से सदैव बचते थे। और रुसी तजरुबा आर्थिक रुपान्तरण की दिशा के लिए एक मोटी रुप रेखा भर ही बता सकता है। क्रांतिकारी अपनी जिम्मेवारियों से भगौड़े होंगे गर उनका एकमात्र योगदान है एक देश में समाजवाद के निमार्ण में असफलता के लिए रुसी क्रांति को निन्दित करना अथवा राजनीतिक परिवर्तनों तथा आर्थिक रुपान्तरणों की समकालिकता बाबत ख्वाब देखना।

क्रांति के आर्थिक कार्यक्रम बाबत असल बात यह है कि हमारे लक्ष्य की मोटी रुप रेखा स्पष्ट होनी चाहिए। सर्वहारा को यह जानना होगा कि पूंजीवादी पैदावारी रिश्तों के विनाश (और इस प्रकार समाजवाद के निर्माण) की ओर ले जाते कौन से उपायों को ज्यों ही सम्भव हो कार्यान्वित किया जाना चाहिए। यह कहना एक बात है

कि कुछ परिस्थितियों में हम शायद अधिक घण्टे काम के लिए मजबूर हो जायें। या एक क्षेत्र में तुरन्त मुद्रा उन्मूलन में समर्थ न हों। इसके विपरीत यह कहना दूसरी ही बात है कि समाजवाद का अर्थ है और भी सख्त मेहनत। या कि राष्ट्रीयकरण और पूंजीवाद समाजवाद की ओर एक कदम हैं। बोल्शेविकों की निन्दा उतनी युद्ध कम्युनिज्म की अराजकता से नेप तक जाने (एक अपर्याप्त योजना से दूसरी तक जाने) के लिए नहीं होती। निन्दा उनके इस प्रचार के लिए की जाती है कि राष्ट्रीयकरण और राज्य पूंजीवाद क्रांति के लिए सहायक हैं और कि पश्चिम से आर्थिक प्रतिद्वन्द्वता समाजवादी उत्पादन की महिमा को सिद्ध कर देगी। आर्थिक रुपान्तरण का स्पष्ट कार्यक्रम एक परम आवश्यकता है। पिछले पचास बरस की पश्च-दृष्टि के साथ हम यह बोल्शेविकों अथवा वर्ग की किसी भी अन्य तात्कालिक अभिव्यक्ति से अधिक गहराई तक देख सकते हैं।

मज़दूर वर्ग को अपने राजनीतिक कार्यक्रम के लिए एक स्पष्ट दिशा की आवश्यकता है; यह आर्थिक रुपान्तरण की कुंजी है। लेकिन उसे तमाम मुश्किलों के तुरत फुरत लोप के झूठे वादों की अथवा इन बहकाबों की जरुरत नहीं कि कैसे मूल्य के नियम को आज्ञप्ति द्वारा मिटाया जा सकता है।

नेप

नेप पर जोर देने में आर.डब्ल्यूजी अकेला नहीं। पूंजी के वामपक्ष, खासकर उसकी त्रात्स्कीवादी किस्मों से हाल में अलग होने वाले अनेक लोग ऐसा ही करते हैं। मज़दूर राज्य संबंधी तथा राज्य के हाथ में सामूहीकरण द्वारा रुस के समाजवादी ''सिद्ध'' हो जाने बाबत तमाम लचर बकवाद के बाद, वे ''1917 के तथा आज के बीच वह बिन्दू" खोजते है "जब रुस में परिवर्तन हुआ होगा,'' (फारवर्ड, पृ. 44)। यह वही पुराना प्रश्न है -''रुस में पूंजीवाद कब लौटा'', जिसे त्रात्स्कीवादी सदैव हेकड़ी से फेंकते हैं।

नेप केवल बोल्शेविक नेताओं के दिमाग की उपज नहीं था। इसके विपरीत, अधिकांशतः नेप महज क्रांस्डैट बगावत के कार्यक्रम को उठाता है। क्रांस्डैट विद्रोह ने क्रांति की प्राण-शक्ति की रक्षा के लिए एक मूल मांग पेश की : मज़दूर कौंसिलों की ताकत का, मज़दूर वर्गीय जनवाद का पुनरजीवन। राज्य की मार्फत बोल्शेविकों की तानाशाही का अन्त। क्रांस्डैट मज़दूरों ने, जो किसानों संग खाद्य पदार्थों के निजी विनियम खातिर औजार चुराने के लिए अकाल हाथों मजबूर थे, एक आर्थिक "कार्यक्रम" विकसित किया - विनिमय को नियमित तथा मज़दूरों के मातहत करना, व्यापार को नियमित करना ताकि भुखमरी तथा आर्थिक ठहराव का अन्त हो। रुस में शहरों को भेजे गये भोजन समग्री के ट्रकों पर भूखी जनता धावा बोल देती थी। उनके साथ हथियारबन्द रक्षक भेजने पड़ते थे। हालात प्रलयकारी थे और क्रांस्डैट अथवा बोल्शेविकों के पास एक न एक प्रकार से "समन्य स्थिति" (normalcy) की बहाली के सिवा कोई चारा नहीं था। यह सिर्फ पूंजीवाद ही हो सकती थी।

नेप पर आर.डब्ल्यू.जी. का हमला उस ऐतिहासिक संदर्भ से रहित है जिसमें नेप अपनाई गई थी। इसके अतिरिक्त वे पूंजीवाद पर जंग, जिसे डिफेंड करने का वे दावा करते हैं, के कुछ मूलभूत नुक्तों को उलझा देते हैं।

1. ''अगर रुस में घटनाओं ने पूंजीवादी संपत्ति की पुनरस्थापना की मांग की, जैसा उन्होंने अंशतः किया भी...
...जबकि पूंजीवाद की पुनरस्थापना का अर्थ था "स्वयं के लिए एक वर्ग" (class in itself) के रुप में सर्वहारा की पुनःस्थापना?'' (**रुस में क्रांति तथा प्रतिक्रांति पृ. 7, 17**)

'आखिर पूंजीवाद की पुनरस्थापना के लिए पूंजीवाद को और क्या छूट देना जरुरी है।'' (फारवर्ड नं. 2, पृ. 46)

यह सब इस बात का असाधारण सबूत हैं कि यहां एक बुनियादी उलझन है। नेप ''पूंजीवाद की पुनरस्थापना'' नहीं थी। रुस में पूंजीवाद कभी मिटाया ही नहीं गया था। आर.डब्ल्यू.जी. अन्यत्र यह जोड़कर मामले को और भी उलझा देता है : ''हालांकि नेप पूंजीवादी आर्थिक रिश्तों का पुर्नजन्म नहीं थी। वह समन्य, कानूनी पँजीवादी आर्थिक रिशतों का पूर्नजन्म थी'' (रुस में क्रांति तथा प्रतिक्रांति, पृ. 7)। यह और भी अर्नगल बात है। पूंजीवादी रिश्ते कानूनी, यानि आधिकारिक रुप से स्वीकृति, हैं या नहीं, यह मात्र एक वैधानिक प्रश्न है। यथार्थ के अस्तित्व को नकारने का दिखावा करके कौनसी ''शुद्धता'' हासिल की जा सकती है? नेप इस अर्थ में विभाजन रेखा नहीं थी कि उसने पूंजीवादी आर्थिक ताकतों के अस्तित्व को पुनः परिवर्तित (अथवा स्वीकार) किया। पूंजीवादी अर्थव्यस्था के बुनियादी नियम रुस में व्यवस्था को शासित करते थे क्योंकि वे विश्वमण्डी को शासित करते थे।

इस पर कुछ लोग शायद कहें कि वे बराबर यह जानते थे कि रुस पूंजीवादी है और कि इस प्रकार वहां कोई सर्वहारा क्रांति हुई ही नहीं। अगर हम सर्वहारा क्रांति को पूंजीपति वर्ग का उन्मूलन करते आरंभिक राजनीतिक कदम की बजाए रातोंरात संपन्न संपूर्ण आर्थिक रुपान्तरण के रुप में देखने पर बल देगें, तो हम कभी सर्वहारा क्रांति को पहचान नहीं पाएंगे। एक बार फिर, हम ''एक देश में समाजवाद'' के प्रकरण की ओर लौटते हैं, जो रुसी तजरुबे पर एक अशुभ साये की तरह छाया हुआ है। अर्थव्यवस्था की ''नियन्तक ऊंचाइयों'' के राष्ट्रीकरण के साथ नेप राज्य पूंजीवाद की ओर एक कदम थी। परन्तु वह ''समाजवाद'' (अथवा पूंजीवाद के अतिरिक्त कुछ) से पूंजीवाद की ओर एक बुनियादी मोड नहीं थी।

2.''नेप वास्तव में एक सिद्धान्तनिष्ठ पश्चगमन का, वर्ग रेखाओं के कार्यक्रम-विषयक उल्लंघन का निरुपण करती थी।'' (वही, पृष्ठ 7)

यद्यपि यह पहले नुक्ते से स्वाभाविक रुप से निकलता है यह सारी तर्कना का सारतत्व है। कोई भी इतना मूर्ख नहीं होगा कि वह दावा करे कि मज़दूर वर्ग कभी पीछे नहीं हट सकता। यद्यपि समग्र अर्थ में क्रांति को या तो आगे बढ़ना होगा या खत्म हो जाना होगा, इसका कभी भी एक पक्षीय रुप से यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता कि हम एक सीधी स्पष्ट रेखा में, किसी समस्या के बिना आगे बढ़ सकते हैं। तो सवाल यह है : अपरिहार्य पश्चगमन क्या है और क्या है सिद्धान्तों से समझौता? बोल्शेविक कार्यक्रम में जहां तक राज्य पूंजीवाद का समर्थन, उसका रहस्यीकरण सम्मिलित था, वह सर्वहारा विरोधी कार्यक्रम था; लेकिन एक देश में मूल्य के तथा विनिमय के नियम का उन्मूलन करने की असमर्थता किसी भी तरह से वर्ग रेखाओं को फांदना नहीं। या तो दोनों को स्पष्ट रुप से अलग करना होगा, या फिर इस पोजीशन का पक्ष लेना होगा कि रुस में सर्वहारा सम्पूर्ण समाजवाद की ओर जा सकता था। यह असम्भव होने की वजह से, क्रांतिकारियों को, वास्तविक घटनाओं बाबत झूठ बोलकर, प्रोग्राम मुताबिक आगे बढ़ने की अपनी असमर्थता को ढाँपना पड़ेगा।

एक स्पष्ट दिशा की जरुरत के बावजूद, कई स्थितियों में आर्थिक स्तर पर पीछे हटना निश्चित ही अपरिहार्य हो सकता है। परन्तु राजनीतिक सन्दर्भ में पीछे हटना सर्वहारा के लिए मौत है। नेप और क्रांस्डैट के कत्लेआम के बीच, नेप तथा रेपलो की सन्धि अथवा संयुक्त मोर्चे की कार्यनीति के बीच यही बुनियादी फर्क है।

''उन्हीं परिस्थितियों में इन्टरनेशनलिज्मों के साथियों ने क्या किया होता? क्या उन्होंने मार्किट इकोनमी को पुनरस्थापित किया होता? क्या उन्होंने प्रबन्धकों के हाथों उद्योग का विकेन्द्रीकरण किया होता? क्या उन्होंने रुबल को बहाल किया होता? संक्षेप में, क्या वे इस प्रकार पीछे हटते जो वास्तव में पराजय है? क्या उन्होंने विश्व सर्वहारा इंकलाब के हित रुसी राष्ट्रीय पूंजी के अधीन रखे होते?'' (फारवर्ड, पृ. 45)

इतिहास के प्रति ''तुम क्या करते'' की पहुंच स्पष्टतया ही निरर्थक है क्योंकि आज इतिहास को बदला अथवा अपनी चेतना (अथवा उसकी कमी) से निवेशित नहीं किया जा सकता। तथापि, आर. डब्ल्यू. जी. के भोले-भाले सवाल दिखाते हैं कि उन्होंने पीछे हटने और हार के अन्तर को नहीं समझा है।

मार्किट इकोनमी? यह कभी अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर विनष्ट नहीं की गई थी, जो इसके उन्मूलन

का एकमात्र जरिया है। न ही किसी ने रुस में इसे ''पुनरस्थापित'' किया - यह सदैव अस्तित्वमान थी। रुबल? विश्व पूंजीवाद तथा मुद्रा संबन्धी मार्क्सवादी रचनाओं के संदर्भ में यह फिर एक बेतुका प्रश्न है। उद्योग का विकेन्द्रीकरण? इस राजनीतिक प्रश्न ने मज़दूर कौंसिलों की ताकत को गंभीर जोखिम में डाला। और यह एक नितान्त ही अलग क्षेत्र से संबन्धित है। रुसी पूंजी के हितों की रक्षा करना? स्पष्टतया यह स्वयं क्रांति की मौत की घण्टी थी।

आर्थिक रुपान्तरण ''आज्ञाप्ति से नहीं किया जा सकता लेकिन आज्ञाप्ति पहला कदम है।'' अगर आज्ञाप्ति से आर.डब्ल्यू.जी. का अर्थ है मज़दूर वर्ग का कम्युनिस्ट प्रोग्राम तो हमें सम्पूर्ण तथा ''तुरतफुरत कम्युनिज्म'' की सिर्फ आज्ञाप्ति जारी करानी होगी। और तब फिर? हम वहां पहुंचते कैसे हैं? या क्या हम कहते हैं : (1) आइये पूर्णतः हथियार डाल दें या (2) झूठ बोलें और दिखावा करें कि हम नन्हें समाजवादी गणराज्यों द्वारा समाजवाद हासिल कर सकते हैं?

मसलन ब्रिटेन जैसे देश में (जो किसी प्रकार से रुस 1917 के समान पिछड़ी तथा अल्प विकसित अर्थव्यवस्था नहीं) नाकेबन्दी द्वारा थोपी भुखमरी से मार दिए जाने से पूर्व क्रांति केवल कुछ हफ्ते ही जिन्दा रह सकती है। अल्पकालिक भुखमरी के मध्य पूंजीवाद पर निरन्तर विजयी आर्थिक युद्ध की बात करने की क्या तुक है? क्रांतिकारी गढ़ के संरक्षण और बवाच की एकमात्र नीति है अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर एक आक्रामक संघर्ष। और उसकी एकमात्र आशा है वर्ग की एकबद्धता, उसका आत्म-संगठन तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उसका वर्ग संघर्ष।

संक्रमणकालीन कार्यक्रम के लिए कुछ कदम

नेप संबन्धी अपनी सारी बातों के साथ आरडब्ल्यूजी भावी संघर्षों में अर्थव्यस्था के लिए समाजवादी दिशाविन्यास खातिर कोई संगत सुझाव पेश नहीं करता। जहां तक वर्ग संघर्ष की स्थिति इजाजत दे, हमें किस दिशा की ओर बढ़ना चाहिए?

1. पूंजी के बड़े संकेन्द्रणों और सर्वहारा गतिविधि के मुख्य केन्द्रों का फौरन समाजीकरण।

2. मज़दूरों की तथा वर्ग संघर्ष की जरुरतों की अधिकतम संभव संतुष्टि की, न कि संचय, कसौटी का अनुसरण करते हुए मज़दूर कौंसिलों द्वारा उत्पादन तथा वितरण का नियोजन।

3. कार्यदिवस की कमी की ओर रुझान।

4. मज़दूर कौंसिलों के कंट्रोल तले मुफ्त यातायात, रिहायश तथा चिकित्सा सेवाओं के गठन समेत मज़दूरों के जीवन स्तर में महत्वपूर्ण उन्नति।

5. जहां तक सम्भव हो उज़रत तथा मुद्रा रुप के उन्मूलन के प्रयास। इसके लिए फिर चाहे मज़दूर कौंसिलों की मार्फत आम समाज के लिए अपर्याप्त वस्तुओं की राशनिंग करनी पड़े। यह उन इलाकों में आसान होगा जहां मज़दूर अत्याधिक संकेन्द्रित हैं और जहां उनके नियन्त्रण में बहुत संसाधन हैं।

6. समाजीकृत क्षेत्र तथा उन क्षेत्रों, विशेषकर देहाती क्षेत्रों, के मध्य जहां उत्पादन अभी भी निजी हाथों में है शुरु में सहकारी समितियों द्वारा संगठित और सामूहिक विनिमय की ओर अभिमुख रिश्तों का गठन। (अन्ततः यह देहाती इलाकों में वर्ग संघर्ष की जीत के जरिए समस्त निजी उत्पादन के उन्मूलन की ओर ले जाता है।) यह मार्किट इकोनमी तथा व्यक्तिगत विनिमय के ह्रास की ओर एक कदम को निरुपित करेगा।

इन नुक्तों को भावी दिशा विन्यास के लिए महज सुझावों के रुप में, इस सवालों पर वर्ग के भीतर बहस में शिरकत के रुप में लिया जाना चाहिए।

वरकर्ज़ ओपोजीशन

आर.डब्ल्यू.जी. क्योंकि रुसी परिस्थिति को नहीं समझता, वे उसमें उलझकर रह जाते हैं। वे भविष्य के लिए दिशा पेश करने का प्रयास करते हैं -रुस में एक दूसरे से संघर्षरत्त रहे विभिन्न गुटों में पक्ष चुन कर। उन लोगों के समान, जो अतीत को पूर्णतः नकारते हैं और स्वांग रचते हैं कि क्रांतिकारी चेतना अभी कल (स्वाभाविक है, उन्हीं के साथ) पैदा हुई थी, आर.डब्ल्यू.जी. सिक्के का विपरीत लगता पहलू अपनाता है। और इतिहास को अपनी शर्तो पर उत्तर देता है। यह अतीत के सबकों को समृद्ध बनाना नहीं। यह अतीत से हम आज क्या हासिल कर सकते हैं, इसको मुखातिब होने के स्थान पर उसे (अतीत को) पुनरजीने तथा उसे ''बेहतर बनाने'' की इच्छा भर है।

आर.डब्ल्यू.जी. लिखता है : ''हमारा प्रोग्राम है वर्कर्ज़ ओपोजीशन का प्रोग्राम, नौकरशाहीवाद तथा पूंजीवादी पुनरस्थापनावादी रुझानों के खिलाफ मज़दूर वर्ग की स्व-सक्रियता का प्रोग्राम।'' यह रुस की बहसों के सन्दर्भ में वर्कर्ज़ ओपोजीशन के वास्तविक अर्थ के प्रति एक बुनियादी गलत-फहमी है। वर्कर्ज़ ओपोजीशन उन अनेकों ग्रुपों में से एक था जो रुसी क्रांति के अद्यःपतन में घटनाओं के क्रमविकास के खिलाफ लड़े। उनके बहादुराना प्रयासों को नकारना तो दूर, उनके कार्यक्रम को परिप्रेक्ष्य में रखना जरुरी है। वर्कर्ज़ ओपोजीशन ''अफसरशाहीवाद'' के खिलाफ नहीं बल्कि राज्य अफसरशाही के खिलाफ तथा यूनियन अफसरशाही के प्रयोग के पक्ष में था। उनके अनुसार रुस में पूंजी को मैनेज़ यूनियनों ने करना था न कि पार्टी-राज्य मशीन ने। वर्कर्ज़ ओपोजीशन की सर्वहारा पहलकदमी की हिफाज़त की इच्छा रही हागी, लेकिन वे इसे सिर्फ ट्रेड यूनियनी सन्दर्भ में ही देख सके। रुस में 1920-21 तक सोवियतों में से सच्चा वर्ग जीवन करीब पूर्णतया विलुप्त कर दिया गया था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि अब मज़दूर कौंसिलों के स्थान पर यूनियनें मज़दूर वर्गीय तानाशाही के औजार थीं। यह उसी प्रकार की तर्कना है जो बोल्शेविकों को इस निष्कर्ष की ओर ले गई कि यूरोप में हारों के कारण तीसरे इन्टरनेशनल की पहली कांग्रेस का कार्यक्रम क्योंकि अब आसानी से लागू नहीं किया जा सकता, इसलिए पुराने सामाजिक जनवादी कार्यक्रम के अनेकों पहलुओं (यूनियनों में घुसपैठ, संसद में शिरकत, मध्यमार्गियों से गठ़जोड़ आदि) की ओर लौटना जरुरी है। सोवियतें अगर कुचल भी दी गई थीं, तो भी पूंजीवादी पतनशीलता के दौर में अब यूनियनों में स्वतन्त्र वर्गीय गतिविधि (क्रांतिकारी गतिविधि का तो कहना ही क्या) खत्म हो गई थी। समूची ट्रेड यूनियनी बहस सब तरफ एक गलत आधारभूत धारणा पर टिकी हुई थी : कि ट्रेड यूनियनें मज़दूर कौंसिलों में वर्ग एकता के स्थान पर रखी जा सकती हैं। इस अर्थ में, सोवियतों के पुनरुज्जीवन का आह्वान करने की वजह से क्रांस्डैट विद्रोह इस सवाल पर अधिक स्पष्ट, यद्यपि उतना ही अभिशाप्त था। और इस बीच वर्कर्ज़ ओपोजीशन क्रांस्डैट के सैनिक दमन से सहमत हुआ। उसने इसका समर्थन किया।

इस तथ्य को ऐतिहासिक रुप से समझना होगा कि रुस में वादविवाद इस बात के इर्द गिर्द घूमता रहा कि प्रतिक्रांति में अद्यःपतन को कैसे ''मैनेज'' किया जाए। लेकिन आज इस कार्यक्रम को अपनाना बेतुकेपन की हद है। इसके अतिरिक्त, आर.डब्ल्यू.जी. दावा करता है :

''परन्तु हमें एक चीज़ का पूरा भरोसा है : अगर वर्कर्ज़ ओपोजीशन के कार्यक्रम को, सर्वहारा स्वसक्रियता के कार्यक्रम को अपनाया गया होता तो रुस में सर्वहारा तानाशाही पूंजीवाद से लड़ते लड़ते खत्म होती (अगर वह फिर भी खत्म होती) न कि उसे अपनाते हुए। और गुंजाइश इस बात की है कि वह पश्चिम में विजय द्वारा बचा ली गई होती। संघर्ष का यह प्रोग्राम अपना लिया गया होता तो कोई अन्तरराष्ट्रीय पराजय न होती। सम्भावना इस बात की है कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल में अन्तरराष्ट्रीय वाम हावी हो गया होता।'' (वही, पृ. 48-49)

यह सिद्ध करता है कि आर.डब्ल्यू.जी. में अभी विश्वास शेष है कि अगर रुस में कुछ और अच्छा किया गया होता तो सब कुछ और ही होता। रुस प्रत्येक चीज की धुरी है। जैसे हमने देखा है, वह यह भी मान कर चलता है कि अगर भिन्न आर्थिक उपाय प्रयोग किए गये होते तो राजनीतिक गद्दारी को खत्म कर दिया गया होता। बजाए इसके विपरीत के। लेकिन इस परिकल्पना की ऐतिहासिक अनर्गलता इस कथन से अत्याधिक साफ झलकती है कि ''गुंजाइश इस बात की थी कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल में अन्तरराष्ट्रीय वाम हावी हो गया होता।'' हमारे ख्याल से वे जिस ''वाम'' की बात कर रहे हैं

वह उस वक्त आर्थिक कार्यक्रम को कोई विशेष अच्छी तरह नहीं समझता था। पर केऐपीडी यूनियनवाद तथा अफसरशाहीवाद के नाकार पर आधारित थी। वर्कर्ज़ ओपोजीशन के पास पश्चिम में बोल्शेविक रणनीति संबंधी कहने को या तो नगण्य सा था या कुछ भी नहीं। और उन्होंने कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की दूसरी कांग्रेस की 21 शर्तो समेत, इस सवाल पर सदैव आधिकारिक बोल्शेविक नीति पर मात्र मोहर लगाई। (ओसीन्स्की ने भी यहीं किया)। वर्कर्ज़ ओपोजीशन के अन्तरराष्ट्रीय वाम के केन्द्रबिन्दु बन जाने का यह विचार आरडब्ल्यूजी की विशुद्ध कपोल-कल्पना है। वे उस इतिहास को नहीं जानते जिस बाबत वे इतनी बाचालता से बात करते हैं।

यूँ आरडब्ल्यूजी निन्दा करता है : ''भविष्यदर्शन क्रांतिकारियों का काम नहीं'' लेकिन चन्द लाइन पहले ही वे व्याख्यान देते हैं कि वर्कर्ज़ ओपोजीशन ने मज़दूर वर्ग के लिए क्या असीम क्षितिज खोल दिया होता। हमें यह कहना चाहिए कि भविष्य दर्शन से बचने के अलावा, अच्छा हो अगर हमें पता हो हम किस बाबत बात कर रहे हैं।

अक्तूबर के सबक

कतिपय अनर्गलताओं को स्पष्ट करना हालांकि निस्संदेह उपयोगी है, इस लेख में हमारा मकसद मुख्यतया विवादात्मक नहीं है। मूलतः क्रांतिकारियों का कार्यक्रम है कल की दिशा के सूत्रों की खातिर इतिहास से आगे जाना। रुसी इंकलाब कब अद्यःपतित हुआ, इस पर विशिष्ट बहस निम्न बातों से कहीं कम महत्वपूर्ण है : (1) यह समझना कि यह अद्यःपतन वास्तव में हुआ है (2) जानना यह क्यों हुआ; और (3) इस युग के नकारात्मक तथा सकारात्मक सबकों के संश्लेषण द्वारा वर्गचेतना में योग देने की कोशिश करना।

इस अर्थ में, हम युद्धोत्तर क्रांतिकारी लहर के तजरुबे द्वारा हमारे लिए आज तथा कल के लिए छोड़ी वर्ग पोजीशनों की मौलिक विरासत का सर्वेक्षण प्रस्तुत करना चाहेंगे।

1. सर्वहारा इंकलाब एक अन्तरराष्ट्रीय इंकलाब है। किसी भी देश में मज़दूर वर्ग का प्राथमिक कर्तव्य है विश्व इंकलाब को आगे बढ़ाना।

2. सर्वहारा एकमात्र क्रांतिकारी वर्ग है। वह क्रांति का और सामाजिक रुपान्तरण का एकमात्र कर्त्ता है। आज यह स्पष्ट है कि किसी भी ''मज़दूर-किसान गठ़जोड़'' को खारिज करना होगा।

3. मज़दूर कौंसिलों में संगठित समग्र सर्वहारा मज़दूर वर्ग की तानाशाही गठित करता है। वर्ग की राजनीतिक पार्टी का रोल ''वर्ग के नाम पर'' राज्य सत्ता संभालना नहीं, न ही उसके नाम पर शासन करना है। उसका रोल है वर्ग के भीतर वर्ग चेतना को ऊँचा उठाने तथा उसका साधारणीकरण करने में हिस्सा डालना। वर्ग का कोई भी अल्पांश उसके स्थान पर राजनीतिक सत्ता का प्रयोग नहीं कर सकता।

4. सर्वहारा को अपनी हथियारबन्द ताकत मुख्यता बुर्जुआजी के खिलाफ निर्देशित करनी होगी। गैर सर्वहारा, गैरशोषक तत्वों को समाजीकृत उत्पादन में जोड़ने की नीति ही समाज को एकीकृत करने का प्रमुख तरीका होनी चाहिए, तो भी इन तबकों के खिलाफ सर्वहारा हिंसा की भी शायद कभी-कभार जरुरत पड़े। लेकिन सर्वहारा और उसके वर्ग संगठनों के भीतरी वादविवादों को निपटाने के तरीके के रुप में हिंसा का बहिष्कार करना होगा। सर्वहारा जनवाद के जरिये मज़दूर वर्ग की एकजुटता तथा एकता को मजबूत बनाने का हरचन्द प्रयास करना होगा।

5. पूंजीवादी पतनशीलता के युग में राज्य पूंजीवाद पूंजीवादी संगठन का प्रभावी, सार्वभौम रुझान है। राष्ट्रीयकरणों समेत राज्य पूंजीवादी उपाय किसी भी प्रकार से समाजवाद के लिए सर्वहारा का प्रोग्राम नहीं। न ही वे एक ऐसी नीति हैं जो समाजवाद की ओर के रास्ते में ''सहायता पहुंचा'' सके। न ही वह एक ''प्रगतिशील'' कदम है।

6. मूल्य के नियम के उन्मूलन, उद्योग एवं खेती के समाजीकरण तथा, जैसे ऊपर कहा गया है, मानवजाति की जरुरतों के लिए उत्पादन की ओर ले जाते आर्थिक उपायों की आम रेखाऐं सर्वहारा की तानाशाही के लिए एक आम दिशा के विशदीकरण में योगदान को निरुपित करती हैं।

ये सूत्र, जिनका यहां मोटा खाका खींचा गया है, क्रांतिकारी तजरुबे की पेचीदगी से संगोपांग निपटने का दिखावा नहीं करते। वे भावी विशदीकरण के लिए आम दिशा-निदेर्शों का ही काम कर सकते हैं।

वर्ग संघर्ष के पुर्नजागरण के दौर में आज आर. डब्ल्यू.जी. जैसे अनेक युवा ग्रुप विकसित हो रहे हैं। उनके काम के निहितार्थों के प्रति सजग होना तथा क्रांतिकारी तबकों में विचारों के आदान प्रदान को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। परन्तु खतरा यह है कि प्रतिक्रांति के इतने सालों के बाद ये ग्रुप क्रांतिकारी अतीत के तजरुबे से सुलझने में शायद नाकामयाब रहें। आर.डब्ल्यू. जी. के मसले की तरह ही, अनेक ग्रुप सोचते हैं कि वे इतिहास को सर्वप्रथम खोज रहे हैं। जैसे उनसे पहले किसी चीज़ का अस्तित्व नहीं था। यह शून्य में वर्कर्ज़ ओपोजीशन पर अथवा किसी अन्य रुसी ग्रुप पर नज़र चिपकाने जैसे कुराहों की ओर ले जा सकता है। जैसे प्रतिदिन ''पहेली का एक नया भाग'' खोजा जा रहा हो। उसे विस्तृत संदर्भ में रखे बिना, वामपंथी कम्युनिस्ट आंदोलन के काम के प्रति सजग एवं आलोचनात्मक हुए बिना, किसी पहेली के अलग-अलग हिस्सों के रुप में नहीं बल्कि वर्ग में क्रांतिकारी चेतना के विकास के समग्र संदर्भ में, आज हमारा कार्य बांझपन और एक नौ सिखुए की हेकड़ी को अभिशप्त होगा। जो आज पूंजी के ''वामपक्ष'' से सम्बन्ध विच्छेद का अहम प्रयास कर रहे हैं, उन्हें इस बात के प्रति सचेत होना चाहिए कि यह रास्ता उन्हीं की विलक्षणता नहीं और वे इतिहास में या आज अकेले नहीं हैं।

आई.आर. 3, अक्तूबर '75 जूडिथ ऐलन

रुस में वामपंथी कम्युनिस्ट 1918-1930, भाग एक

प्रस्तावना : जब रुस में इन्कलाब के अथवा तीसरे इंटरनेशनल के अद्यःपतन के क्रांतिकारी विरोध की बात होती है तो आमतौर पर मान लिया जाता है कि त्रात्सकी तथा अन्य बोल्शेविक नेताओं की अगुआई तले लेफ्ट ओपोजीशन की बात हो रही है। पतन की प्रक्रिया में सक्रिय रुप से भागीदार लोगों द्वारा बहुत लेट की गई पतन की पूर्णतः अपर्याप्त आलोचनाओं को रुस अथवा इंटरनेशनल में कम्युनिस्ट ओपोजीशन का आदि अन्त मान लिया जाता है। 1923 में लेफ्ट ओपोजीशन के जन्म से लंबा समय पहले 'वामपंथी कम्युनिस्टों' द्वारा विकसित कहीं गहरे तथा सुसंगत विशलेषणों को या तो नज़रअंदाज कर दिया जाता है। या फिर उन्हें 'असल दुनिया' से दूर संकीर्ण उन्मादियों का प्रलाप कह कर खारिज़ कर दिया जाता है। अतीत की यह विकृति प्रतिक्रांति के लंबे दबदबे की अभिव्यत्ति है जो 1920वें में खतम हुए क्रांतिकारी संघर्षों के बरसों से चला आ रहा था। मज़दूर वर्ग तथा उसके कम्युनिस्ट अल्पांशों के सच्चे क्रांतिकारी इतिहास को छिपाना तथा विकृत करना सदा पँजीवादी प्रतिक्रांति के हित में है। सिरफ इस तरीके से ही पँजीपति वर्ग सर्वहारा के, एक वर्ग जिसके भाग्य में मानवजाति को मुक्ति के युग में प्रवेश दिलाना है, ऐतिहासिक चरित्र को ढांपने की आशा कर सकता है।

अतीत की इस विकृति के खिलाफ क्रांतिकारियों को सर्वहारा के ऐतिहासिक संघर्षों की पुनरपुष्टि तथा पुनरीक्षण करना होगा। इतिहास में मात्र संकलनकर्ता की रुचि से नहीं अपितु इसलिए कि वर्ग का अतीत का तजुरुबा उसके वर्तमान तथा भावी तजुरुबे में एक अटूट कड़ी है। अतीत को समझ कर ही वर्तमान तथा भविष्य को समझा तथा रेखांकित किया जा सकता है। हमें आशा है कि रुस में कम्युनिस्ट वाम के इतिहास का यह अध्ययन कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास के एक अहम पाठ को पँजीवादी इतिहास, वामपंथी अथवा आकादमिक, की विकृतियों से बचाने में सफल होगा। हमें आशा है कि यह रुसी वाम के संघर्षों, पराजयों तथा जीतों में से निकलते सबकों को स्पष्ट करने में सफल होगा। सबक जिनका आज कम्युनिस्ट आंदोलन के गठन में अहम रोल है।

****

"रुस मे समस्या को केवल पेश किया जा सका था। उसे रुस में सुलझाया नहीं जा सका था।" (रोज़ा लुग्जमवर्ग, **रुसी क्रांति**)

1917-1923 के क्रांतिकारी बर्षों के बाद दुनिया को आप्लावित करती प्रतिक्रांति के साथ बोल्शेविकों के गिर्द एक मिथक पैदा हुआ जो उन्हें रुसी पिछडेपन तथा एशियाई बर्बरता की विशिष्ट पैदाइश चित्रित करता है। रुस में क्रांति के पतन तथा मौत से बुरी तरह हतोत्साहित जर्मन तथा डच वाम के अवशेष अर्ध मेनशेविक पोजीशन की ओर लौट गये। इसके अनुसार रुस में बीस तथा तीस के दशक में पूँजीवादी विकास अनिवार्य था चूँकि रुस कम्युनिस्ट क्रांति के लिए अपरिपक्क था। बोल्शेविज़म को बुद्विजीवियों की एक विचारधारा के रुप में परिभाषित किया गया जिसका लक्ष्य रुस का मात्र अधुनिकीकरणा था। और जिसने नपुँसक पूँजीपति वर्ग के स्थान पर रुस में "बुर्जूआ" अथवा "राज्यपूँजीवादी" इंकलाब संपन्न किया। इसके लिए उसने स्वयं को अपरिपक्व सर्वहारा पर आधारित किया।

यह सिद्वान्त रुसी क्रांति तथा बोल्शेविज़्म के सच्चे सर्वहारा चरित्र का पूर्ण संशोधन था। यह अक्तूबर 1917 की वीरोचित घटनाओं में स्वयं वाम कम्युनिस्टों की शिरकत का निषेध था। पर सब मिथकों की तरह इसमें भी सच्च का एक अंश है। बुनियादी रुप से अंतर्राष्ट्रीय हालातों की पैदायश हाने के बावजूद, मज़दूर आंदोलन में विशिष्ट राष्ट्रीय ऐतिहासिक हालातों से पैदा खासियतें भी निहित हैं। मसलन् यह एक संयोग नहीं कि आज पुनर उदित कम्युनिस्ट आंदोलन पश्चिमी यूरोप के देशों में सबसे मज़बूत है जबकि पूर्वी यूरोप के देशों में वह या तो है ही नहीं अथवा बहुत कमज़ोर है। यह पिछले पचास साल की विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाओं की, खासकर विभिन्न देशों में पूँजीवादी प्रतिक्रांति के संगठन की उत्पति है। इसी प्रकार रुस में अक्तूबर विद्रोह से पहले तथा बाद के क्रांतिकारी आंदोलन का निरीक्षण करने पर हम पाते हैं - इसके सारतत्व को यद्यपि अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। इसकी विशिष्ट कमज़ोरियों तथा मजबूतियों को तात्कालीन रुस के हालातों से जोड़ जा सकता है।

कई माने में रुसी क्रांतिकारी आंदोलन की कमज़ोरियां उसकी मज़बूतियों के सिक्के का ही दूसरा पहलू थीं। समस्या के क्रांतिकारी समाधान की ओर द्रुतगति से बढ़ने की रुसी सर्वहारा की क्षमता बडी हद तक जारशाही निज़ाम के चरित्र से तय होती थी। निरंकुश, जर्जर तथा अपने और सर्वहारा के बीच एक टिकाऊ बफर बनाने में असमर्थ, जारशाही निजाम ने यकीनी बनाया कि आत्मरक्षा के सर्वहारा के तमाम प्रयास उसे फौरन राज्य की दमनकारी ताकतों के खिलाफ ला खडा करेंगे। युवा पर अत्यन्त जुझारु तथा संकेन्द्रित रुसी सर्वहारा को एक सुधारवादी मानसिकता विकसित करने का कभी राजनीतिक अवसर ही नहीं मिला। जो उसे अपने फौरी भौतिक हितों के बचाव को मातृभूमि की रक्षा के साथ जोड कर देखने की ओर ले जाता। लिहाज़ा रुसी सर्वहारा के लिए यह कहीं आसान था कि वह 1914 के बाद तमाम युद्व प्रयासों से अपनी एकता को नकार दे और जारशाही राजनीतिक ढांचे के विनाश को 1917 में अपनी प्रगति की पूर्वशर्त माने। रुसी सर्वहारा और उसके क्रांतिकारी अल्पांशों में बहुत यान्त्रिक संबन्ध स्थापित किये बिना, मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि रुस में मज़दूर वर्ग की ये ताकतें उन कारकों में से एक थीं जिन्होंने बोल्शेविकों को 1914 तथा 1917 के आंदोलनों को अगुआई देने के समर्थ बनाया। उन्होंने युद्व की जो़रदार निन्दा की और पूँजीवादी राज्य मशीनरी को तहस नहस करने की अपनी बकालत पर अडिग रहे।

पर जैसे हमने कहा ये क्षमताएँ खामियां भी थीं : रुसी सर्वहारा की अपरिपक्वता, संगठनात्मक परम्पराओं की उसकी कमी, जिस अकस्मात तरीके से उसे क्रांतिकारी परिस्थिति में झोंक दिया गया था; इस सब के चलते उसके क्रांतिकारी अल्पांशों के सैद्वान्तिक तरकस में महत्वपूर्ण कमियां रह गईं। यह अर्थपूर्ण है कि सामाजिक जनवाद के सुधारवादी व्यवहारों तथा ट्रेडयूनियवाद की सर्वाधिक स्टीक आलोचनाएँ ठीक उन देशों में विकसित की गईं जहां ये व्यवहार पूरी तरह जमे हुए थे, खासकर जरमनी तथा हालैण्ड में। रुस, जहां सर्वहारा अभी भी संसदीय तथा ट्रेडयूनियनी हकों के लिए लड रहा था, की बजाए सर्वप्रथम इन देशों में क्रांतिकारियों ने सुधारवादी आदतों के घातक असरों को समझा। उदाहरण के लिए पहले विश्वयुद्व के पूर्व सालों में डच ट्रिब्यूनवादियों

तथा अंटन पान्नेकुक के कार्य ने ही वह जमीन तैयार की जिसके चलते युद्व के बाद जर्मन तथा डच क्रांतिकारी पुरानी सुधारवादी कार्यनीति से पूरी तरह अपना पीछा छुडा पाए। इटली में बोरदीगा के एब्सटेंशनिस्ट फ्रेक्शन की भी यही बात थी। इसके विपरीत बोल्शेविक यह पूरी तरह कभी नहीं समझ पाए कि 1914 में पूँजीवाद के अपनी मरणशैय्या मे दाखिले के साथ सुधारवादी कार्यनीति का दौर भी खतम हो गया था। कम से कम वे क्रांतिकारी रणनीति के लिए नए दौर के तमाम निहितार्थो को पूरी तरह कभी नहीं समझ पाए। 1920 के बाद तीसरे इंटरनेशनल को सताते यूनियनी तथा संसदीय कार्यनीति पर विवाद बड़े हद तक नए दौर की जरुरतों को समझ पाने की रुसी पार्टी की असमर्थता का फल थे। यह असफलता रुसी पार्टी के मात्र नेतृत्व तक सीमित नहीं थी। यह इस तथ्य में झलकता था कि रुसी वाम कम्युनिस्टों द्वारा विकसित यूनियनवाद, संसदवाद, प्रतिस्थापनावाद तथा अन्य सामाजिक जनवादी प्रभावों की आलोचना स्पष्टता के उस स्तर तक कभी नहीं पहुँच पाई जो उनके डच, जर्मन तथा इतालवी साथियों द्वारा हासिल किया गया।

पर यहां यह जरुरी है कि हम इस टिप्पणी को क्रांति के इंटरनेशनल संदर्भ की समझ के साये में रखें। बोल्शेविक पार्टी की सैद्वान्तिक खामियां शाश्वत नहीं थी। वह एक सच्ची सर्वहारा पार्टी थी। इस रुप में वह चढाव की राह पर सर्वहारा संघर्षो से निकलते समस्त विकासों तथा समझदारियों के प्रभावों के लिए खुली थी। अक्तूबर क्रांति गर अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर फैल गई होती तो इन कमज़ोरियों पर पार पाया जा सकता था। बोल्शेविज्म की सामाजिक जनवादी विकृतियां पथरा कर क्रांति के मार्ग में बुनियादी रुकावटें केवल तभी बनीं जब विश्वक्रांति उतार पर आ गई और रुस में सर्वहारा गढ़ अलग थलग पड गया। तीसरे इंटरनेशनल का अवसरवाद के दलदल में तेज़ी से फिसलना बहुधा रुसी पार्टी के असर तले था। अन्य चीज़ों के अलावा, यह सोवियत राज्य के अस्तित्व की जरुरतों का क्रांति की अन्तरराष्ट्रीय जरुरतों से सामंजस्य बैठाने की बोल्शेविकों की कोशिश का फल था। जैसे जैसे क्रांति का ज्वार उतरता गया, यह कोशिश अन्तरविरोधों से अधिकाधिक ग्रस्त होती गई। अन्त में, 'एक देश में समाजवाद' की जीत के साथ इसे त्याग दिया गया। इसने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की मौत को सूचित किया और रुस में प्रतिक्रांति की जीत को परवान चढाया।

रुसी गढ़ के अति अलगाव ने अन्ततः बोल्शेविक पार्टी को अपनी आरंभिक गलतियां पर पार पाने से रोका। इसने पतित होती रुसी पार्टी से अलग हुए वामपंथी गुटों के सैद्वान्तिक विकास को भी अवरुध किया। यूरोप में वामपंथी धडों द्वारा बरकरार बहसों तथा वादविवाद से अलग थलग। उतरोतर निरंकुशतावादी राज्य के निर्मम दमन का शिकार, रुसी वाम ने स्वयं को रुसी प्रतिक्रांति की औपचारिक आलोचना तक सीमित रखा। पतन की जडों तक वह कहीं ही भेद पाया। रुसी तजुरुबे की स्वयं नवीनता तथा द्रुतता ने क्रांतिकारियों की एक पूरी पीढ़ी को वहां की घटनाओं संबन्धी पूरी तरह भ्रमित रखा। शेष बचे कम्युनिस्ट धडों के भीतर से एक सुसंगत समझ का उभार वीसवीं सदी के तीसरे तथा चौथे दशक से पहले आरंभ नहीं हुआ। पर यह समझ सर्वोपरि यूरोप तथा अमेरिका के क्रांतिकारियों में से निकली। रुसी वाम समूचे तजुरुबे के इतना निकट, इतना गुँथा हुआ था कि वह घटना का एक वस्तुगत्त तथा व्यापक विषलेशण विकसित कर पाता। हम **इंटरनेशनलिज़्म** के साथियों द्वारा रुसी वाम के आंकलन से सहमत हैः

> "नई स्थिति से दो चार होते इन छोटे छोटे ग्रुपों का स्थायी योगदान यह नहीं था कि उन्होंने राज्यपूँजीवाद की पूरी प्रक्रिया उसके आरंभ में ही संभवता समझ ली थी। न ही यह कि वे क्रांतिकारी पुनरुजीवन के किसी पूर्णता सुसंगत कार्यक्रम को अभिव्यक्त करते थे। उनका योगदान था कि उन्होंने खतरे की घण्टी बजाई। और भविष्यवक्ताओं की तरह सबसे पहले राज्य पूँजीवादी निज़ाम की स्थापना को नंगा किया। मज़दूर आंदोलन को उनकी विरासत है यह राजनीतिक सबूत कि रुसी सर्वहारा ने पराजय मूक रुप से स्वीकार नहीं की थी।" (जे. ऐलन, ***राज्य पूँजीवाद के सवाल पर एक योगदान***, इंटरनेशनलिज़्म न. 6)

कम्युनिस्ट वाम क्या है?

'पिछडे' अथवा 'बुर्जूआ' बोल्शेविज़्म के मिथक का एक पहलू है यह विचार कि बोल्शेविकों तथा वामपंथी कम्युनिस्टों के बीच एक अनुलंघनीय खाई है। बोल्शेविकों को राज्य पूँजीवाद वा पार्टी तानाशाही के पक्षधरों के रुप में पेश किया जाता है।ज और वामपंथी कम्युनिस्टों को मज़दूर सत्ता के तथा समाज के कम्युनिस्ट रुपांतरण के पक्षधरों के रुप में। यह विचार कौंसिलवादियों को खासा अपील करता है। वे मज़दूर वर्ग के अतीत में केवल उसी से एकरुपता का इज़ाहार करना चाहते हैं जो उन्हे पसन्द है। और वे मज़दूर वर्ग के असल तजुरुबे में दाग मिलते ही उसको खारिज कर देते है। तथपि असल दुनिया में बोल्शेविज़्म में, जैसा वह शुरु में था, तथा 1920 और बाद के वामपंथी कम्युनिस्टों में एक सीधी तथा अद्वितीय निरन्तरता है।

स्वयं बोल्शेविक युद्वपूर्व सामाजिक जनवादी आंदोलन के उग्र वामपंथ में थे। वे संगठनात्मक सुसंगतता के तथा मज़दूर आंदोलन में तमाम सुधारवादी तथा उलझाववादी रुझानों से स्वतन्त्र एक क्रांतिकारी पार्टी के दृड पक्षधर थे (1)। फिर, 1914-1918 के युद्व पर उनकी पोजीशन (अथवा लेनिन तथा पार्टी में उनके पक्षधरों की पेजीशन) समाजवादी आंदोलन में युद्व-विरोधी तमाम पोजीशनों में सबसे उग्र थी। "साम्रज्यवादी युद्व को ग्रहयुद्व में बदल दो"; तथा 1917 में पूँजीवादी राज्य के विनाश के उनके आवाहन ने उन्हें विश्व के सवार्धिक दृड क्रांतिकारियों के लिए एक केन्द्रबिन्दु बना दिया। जर्मनी के "वाम रेडीकल", जिन्होंने 1920 में केऐपीडी को मुख्य नाभिक प्रदान किया, बोल्शेविकों के उदाहरण द्वारा प्रेरित थे। खासकर जब उन्होंने एसपीडी के सामाजिक देशभक्तों के पूर्ण विरोध में एक नई क्रांतिकारी पार्टी की रचना का आवाहन किया।

यूँ एक बिन्दु तक बोल्शेविक तथा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल, जो बहुत हद तक उन्हीं की पहलकदमी से स्थापित किया गया था, युद्व पूर्व वाम का प्रतिनिधित्व करते थे। वे कम्युनिस्ट आंदोलन में रुपान्तरित हो गए। वामपंथी कम्युनिज़्म इस आरंभिक अगुआ दस्ते के पतन के खिलाफ, उस द्वारा अपने आरंभिक ध्येय संग गद्दारी के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रुप में ही अर्थ रखता है। इस प्रकार वामपंथी कम्युनिज़्म बोल्शेविकों तथा सीआई के नेतृत्व तले मौलिक कम्युनिस्ट आंदोलन में से जैविक रुप से पैदा हुआ।

जब हम स्वयं रुस में वामपंथी कम्युनिज़्म की जड़ें खोजते हैं तो यह फौरन साफ हो जाता है। रुस के तमाम वामपंथी धडों की जड़ें बोल्शेविक पार्टी में थी। यह स्वयं में बोल्शेविक पार्टी के सर्वहारा चरित्र का सबूत है। पर वह मज़दूर वर्ग, वह एक मात्र वर्ग जो अपने व्यवहार की मौलिक तथा सतत आलोचना कर सकता है, की जीवन्त अभिव्यक्ति भी थी। इस रुप में बोल्शेवकि पार्टी ने अपने शरीर से निरन्तर क्रांतिकारी धडों को जन्म दिया। उसके पतन के हर कदम पर पार्टी के भीतर विरोध के स्वर उठे। बोल्शेविज़्म के मौलिक उसूलों की गद्दारी को नंगा करने के लिए पार्टी के अंदर धडों का गठन किया गया और उसमें विभाजन हुए। स्तालिनवादी दफनकर्ताओं द्वारा पार्टी को अन्ततः दफना दिए जाने के बाद ही उसमें से क्रांतिकारी धडों का पनपना बन्द हुआ। रुस के तमाम वामपंथी कम्युनिस्ट बोल्शेविक थे। उन्होंने ही बोल्शेविकों के वीरोचित क्रांतिकारी बरसों से निरन्तरता की रक्षा की। जबकि उनके निन्दक, उनके उत्पीडक तथा उनके कातिल, वे चाहे कितने ही उच्चनाम रहे हों, ही थे जो बोल्शेविज़्म के सारतत्व को त्याग रहे थे।

क्रांति के वीरोचित बरसों में कम्युनिस्ट वाम, 1918-1921

पहले महीने

वास्तव में बोल्शेविक पार्टी पुनरगठित मज़दूर आंदोलन की पहली पार्टी थी जिसने एक 'वामपंथ' को जन्म दिया। चूँकि पूँजीपति वर्ग के खिलाफ सफल विद्रोह का नेतृत्व करने वाली ठीक वही पहली पार्टी थी। तात्कालीन मज़दूर आंदोलन में विद्यामान धारणाओं मुताबिक पार्टी का रोल था सत्ता हथियाने को संगठित करना और 'सर्वहारा राज्य' के नाम पर सरकार चलाना। इस धारणा मुताबिक सरकारीतन्त्र का सर्वहारा पार्टी के हाथ में होना, जो मज़दूर वर्ग को समाजवाद की ओर

लेजाने में संलग्न थी, असल में राज्य के सर्वहारा चरित्र की गरण्टी था। इस दोहरे अथवा तीहरे प्रतिस्थापन (पार्टी-राज्य, राज्य-वर्ग, पार्टी-वर्ग) की बुनियादी गलती आगामी सालों में नंगी होने वाली थी। पर यह बोल्शेविक पार्टी का दुखःद भाग्य था कि उसने सूमचे मज़दूर आंदोलन की सैद्वान्तिक गलतियों को व्यवहार में डाला। और इस प्रकार अपने नकारात्मक तजुरुबे से इस धारणा को पूर्णतः गलत सिद्व किया। बोल्शेविज़्म से जुडी सारी लज्जा तथा गद्दारियां इस तथ्य की पैदायश हैं कि क्रांति रुस में जन्मी तथा वहीं उसकी मौत हुई। और स्वयं को राज्य, जो प्रतिक्रांति का एक अंदरुनी ऐजण्ट बना, से एकरुप करके स्वयं बोल्शेविक पार्टी क्रांति की मौत की संगठनकर्ता बनी। गर क्रांति रुस की बनिस्बत जर्मनी में फूटी तथा पतित हई होती, तो लेनिन, त्रात्सकी, बुखारिन तथा जिनोव्यीव की बनिस्बत लुग्जमवर्ग तथा लीब्नेश्ट के नामों से वही संशय तथा मिश्रित अहसास जुड़ जाता। बोल्शेविकों के महान प्रयास की बदौलत ही क्रांतिकारी आज निश्शंक कह सकते हैं : पार्टी की भूमिका मज़दूर वर्ग के नाम पर सत्ता हथियाना नहीं, और वर्ग के हित क्रांति उपरान्त के राज्य के समरुप नहीं हैं। पर दुखःद सोच तथा आत्मालोचना के बरसों बाद ही क्रांतिकारी इन सीधे दिखते सबकों की व्याख्या कर पाए।

अक्तूबर 1917 में सोवियत राज्य की 'इन्चार्ज' बनते ही बोल्शेविक पार्टी पतित होने लगी। एकदम नहीं। एक पूर्णता बेरोक नीचे लुडकती राह से नहीं। और जब तक विश्व क्रांति ऐजण्डा पर थी यह अनपल्ट भी नहीं था। पर अद्यःपतन की प्रक्रिया फौरन शुरु हो गई। अतीत में पार्टी जबकि वर्ग के दृडतम धडे के रुप में स्वतन्त्र काम कर पाती थी। सदा वर्ग संघर्ष गहराने तथा फैलाने का रास्ता दिखाती हुई। बोल्शेविकों द्वारा सत्ता संभालना वर्ग संघर्ष में शिरकत तथा उससे स्वयं को एकरुप करने की उनकी क्षमता पर बढती ब्रेक लगाने लगा। अब से राज्य की जरुरतें अधिकाधिक वर्ग की जरुरतों पर हावी होती गईं। यद्यपि शुरु में यह अन्तरविरोध क्रांतिकारी संघर्ष की गहनता में छुपा हुआ था, तो भी यह राज्य के तथा सर्वहारा के चरित्र में एक बुनियादी तथा प्रकृतिगत्त अन्तरविरोध की अभिव्यक्ति था। राज्य की जरुरतों का संबन्ध मुख्यतया सामाज को जोड़े रखने से है। तथा है वर्ग संघर्ष को सामाजिक यथास्थिति की बरकारारी के लिए स्वीकार्य सीमाओं में सीमित रखने से। सर्वहारा की, और यूँ उसके अगुआदस्ते की जरुरतें हैं उसके वर्ग संघर्ष को तमाम मौजूदा हालातों को उल्टने तक फैलाना और गहराना। जब तक वर्ग का क्रांतिकारी आंदोलन रुस में तथा अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर चढाव पर था, सोवियत राज्य क्रांति की विजयों की हिफाजत के लिए प्रयोग किया जा सकता था। वह क्रांतिकारी वर्ग के हाथ में औजार हो सकता था। पर ज्यों ही वर्ग का असल आंदोलन लुप्त हो गया, राज्य द्वारा रक्षित यथास्थिति पूँजी की यथास्थिति ही हो सकती थी। यह एक आम रुझान था। पर सर्वहारा तथा नवीन राज्य के बीच अन्तरविरोध वास्तव में तत्काल उभरने शुरु हो गए। इसकी बजह थी वर्ग की तथा राज्य संबन्धी उनके रुख में बोल्शेविकों की अपरिपक्ता। और सर्वोपरि रुस में क्रांति के अलग पडने के परिणाम आरंभ से ही नए क्रांतिकारी गढ़ से अपनी कीमत बसूलने लगे। अनेक समस्याएँ थीं -युद्व द्वारा तबाह इकोनमी, रुस में विशाल किसान जनसमूहों से तथा बाहर शत्रुतापूर्ण पूँजीवादी दुनिया से संबन्ध - जिनका हल अन्तरराष्ट्रीय पैमाने पर ही संभव था। इनके रुबरु, बोल्शेविकों के पास ऐसे कदम उठाने के तजुरुबे की कमी थी जो इन मुशकिलों के कटुतम असरों को कम कर पाता। लिहाज़ा उन द्वारा उठाए कदमों से समस्याएँ सुलझाने की बजाए उलझ गईं। उनकी गलतियों का बहुमत इस तथ्य से निकलता था कि राज्य का चार्ज उन्होंने संभाला हुआ था। इस लिए उन्हें यह उचित लगा कि वे सर्वहारा के हितों को सोवियत राज्य की जरुरतों से मिला कर देखें और वास्तव में पहले को दूसरे के अधीन रखें।

उस वक्त रुस में कोई कम्युनिस्ट धड़ा इन प्रतिस्थापनावादी गलतियों की बुनियादी आलोचना करने में सफल नहीं रहा। और यह रुसी वामपंथ की असफलता बनी रही। तो भी, बोल्शेविकों की आरंभिक राजकीय नीतियों का क्रांतिकारी विपक्ष सत्ता हथियाने के चन्द महीनों के अन्दर ही विकसित हुआ। इस विपक्ष ने ओसीन्सकी, बुखारिन, रादेक, समिरनोव आदि के गिर्द ***लेफ्ट कम्युनिस्ट*** ग्रुप का रुप लिया। यह मुख्यता पार्टी के मास्को रीज़नल ब्योरो में संगठित किया गया और इसकी अभिव्यक्ति थी गुटीय पत्र ***कोम्युनिस्ट (Kommunist)***। आरंभ 1918 का यह विपक्ष मज़दूर वर्ग को डिस्पलिन करने के पार्टी के प्रयासों की आलोचना करता पहला संगठित बोल्शेविक गुट था। पर ***लेफ्ट कम्युनिस्ट*** ग्रुप के उदय की आरंभिक बजह थी जर्मन साम्राज्यवाद संग ब्रेस्त-लितोवस्क की संधि पर हस्ताक्षर का उसका विरोध।

यह जगह ब्रेस्तलितोवस्क के पूरे मुद्दे के अध्ययन की नहीं। संक्षेप में बहस लेनिन वा वामपंथी कम्युनिस्टों के बीच थी (इस विषय पर बुखारिन उनका अगुआ था)। वे जर्मनी के खिलाफ क्रांतिकारी युद्व के पक्ष में थे और उन्होंने शान्ति सन्धि की निन्दा विश्वक्रांति से 'गद्दारी' के रुप में की। लेनिन ने सोवियत राज्य की सैन्य क्षमताओं का पुनरगठन करते वक्त 'सांस लेने की फुरसत' की प्राप्ति के साधन के रुप में शान्ति सन्धि पर हस्ताक्षार का पक्ष लिया। वामपंथ ने ज़ोर दियाः

> "जर्मन साम्राज्यवाद द्वारा थोपी शर्तों को स्वीकारना क्रांतिकारी सामाजवाद की हमारी समूची नीति के विपरीत होगा; यह घरेलू तथा विदेश नीति के मामले में अन्तरराष्ट्रीय सामाजवाद की ठीक लाईन को त्यागने की ओर ले जाएगा और यह बदतर अवसरवाद की ओर ले जा सकता है।" (आर. डेनियल, **द कंशिन्यस आफ द रेवोल्यूश्न**, 1960, पृ73)

जर्मन साम्राज्यवाद के खिलाफ परंपरागत्त जंग लडने की सोवियत राज्य की तकनीकी अक्षमता को स्वीकारते हुए, उन्होंने लाल सेना के उडन दस्तों के गुरिल्ला हमलों से जर्मन सेना को बाँधने की नीति की वकालत की। उन्हें आशा थी कि "जर्मन साम्राज्यवाद के खिलाफ यह पवित्र युद्व" विश्व सर्वहारा के लिए एक उदाहरण का काम करेगा और उसे संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित करेगा।

हम 1918 में सोवियत सत्ता को उपलब्ध रणनीतिक संभावनाओं संबन्धी बहस में नहीं पडना चाहते। हमारे विचार से लेनिन तथा वामपंथी कम्युनिस्ट, **दोनों**ञपहचानते थे कि रुसी सर्वहारा की अन्तिम आशा क्रांति के विश्व फैलाव में निहित थी। दोनों के लक्ष्य तथा कार्य अन्तरराष्ट्रीयतावाद के ढांचे में स्थित थे। दोनो ने सोवियतों में संगठित रुसी सर्वहारा के समक्ष खुलेआम अपने तर्क रखे। लिहाज़ा हमे सन्धि पर हस्ताक्षर को अन्तरराष्ट्रीयतावाद से 'गद्दारी' मानना अस्वीकार्य है। न ही इसका अर्थ था रुस अथवा जर्मनी में इंकालाब की पराजय, जैसे बुखारिन को भय था। हर हाल में ये रणनीतिक आंकलन अतिसूक्ष्म थे। ब्रेस्तलितोवस्क की बहस से उठता सबसे अहम राजनीतिक प्रश्न है : क्या क्रांतिकारी जंग ही क्रांति के प्रसार का एकमात्र साधन है? क्या बंदूक की नोक पर विश्व सर्वहारा को क्रांति का निर्यात एक क्षेत्र में सत्तासीन सर्वहारा का कार्यभार है? इस संदर्भ में, ब्रेस्तलितोवस्क के सवाल पर इतालवी वाम की टिप्पणी महत्वपूर्ण है :

> "बोल्शेविक पार्टी में ब्रेस्तलितोवस्क के सवाल पर टकराने वाले लेनिन तथा बुखारिन के रुझानों में से, हमारे विचार से, पहला विश्वक्रांति की जरुरतों के अधिक अनुकूल था। बुखारिन के नेतृत्व वाले धडे की पोजीशन मुताबिक सर्वहारा राज्य का कार्य था क्रांतिकारी जंग के जरिये अन्य देशों के सर्वहारा को मुक्त करना। ये पोजीशनें सर्वहारा क्रांति की प्रकृति के तथा सर्वहारा के ऐतिहासिक रोल के खिलाफ हैं।" (**'पार्टी-इटेट-इंटरनेशनेल : ल इटेट प्रोलेटेरियन'**, बिलान न. 18, अप्रैल-मई 1935)

बुर्जुआ इंकालाब, जिसे वास्तव में सैनिक विजय द्वारा निर्यात किया जा सकता है, के विपरीत सर्वहारा क्रांति प्रत्येक देश के सर्वहारा द्वारा अपने पूँजीपति वर्ग के खिलाफ सचेत संघर्ष पर निर्भर है। "एक पूँजीवादी राज्य (क्षेत्रीय संदर्भ में) के खिलाफ एक सर्वहारा राज्य की जीत विश्वक्रांति की जीत नहीं" (वही)। 1920 में पोलौण्ड पर लाल सेना की चढ़ाई, जिसने पोलिश मज़दूरों को केवल उनके पूँजीपति वर्ग की बाहों में धकेल दिया, इस बात का सबूत है कि विजयी सर्वहारा गढ़ द्वारा सैनिक जीत विश्व सर्वहारा की सचेत राजनीतिक सरगर्मी का स्थान नहीं ले सकती। क्रांति का प्रसार सर्वप्रथम एक **राजनीतिक** कार्य है। इस लिए 1919 में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की स्थापना किसी 'क्रांतिकारी जंग' की बनिस्बत विश्वक्रांति में कहीं बडा योगदान थी।

ब्रेस्त लितोवस्क की संन्धि पर हस्ताक्षर, पार्टी तथा सोवियतों द्वारा उसकी स्वीकृति तथा इस मुद्दे पर फूट से बचने की वामपंथ की दिली इच्छा संग वामपंथी कम्युनिस्ट ऐजीटेश्न की पहली फेज का अन्त हुआ। अब जब सोवियत राज्य को 'सांस लेने की फुरस्त' मिल गई थी, पार्टी के रुबरु फौरी समस्या रुस की युद्व पीडित इकोनमी के संगठन पर केन्द्रित थीं। यही वह सवाल था जिस पर लेफ्ट कम्युनिस्ट ग्रुप ने क्रांतिकारी गढ़ के रुबरु खतरों संबन्धी बेश्कीमती अन्तरदृष्टिओं का योगदान दिया। बुखारिन, क्रांतिकारी जंग के जोशीले पक्षधर, की रुचि सत्ता के अंदरुनी गठन संबन्धी बोल्शेविक बहुमत की नीतियों की आलोचना विकसित करने में कम थी। अबसे नेतृत्व की अंदरुनी नीतियों की अनेक प्रसांगिक आलोचनाएँ ओसीन्सकी की कलम से निकलीं। बुखारिन की बनिस्बत वह विरोधपक्ष का अधिक सुसंगत प्रतिनिधि साबित हुआ।

1918 के आरंभ में बोल्शेविक नेतृत्व ने एक सतही 'व्यवहारिक' तरीके से रुसी आर्थिक उथल-पुथल से निपटने की कोशिश की। इस विषय पर लेनिन ने बोल्शेविक केन्द्रीय समिति को एक भाषण दिया जिसे **सोवियत शासन के फौरी कार्यभार** के नाम से छापा गया। इसमें लेनिन ने राजकीय ट्रस्ट गठित करने की वकालत की जिनमें मौजूदा बुर्जूआ विशेषज्ञों तथा मालिकों को बनाए रखा जाना था, यद्यपि 'सर्वहारा' राज्य की देख-रेख में। मज़दूरों को "वैज्ञानिक मैनेजमेण्ट" का टेलर सिस्टम (एक वक्त लेनिन ने इसे मानव को मशीन द्वारा गुलाम बनाना कह कर नंगा किया था) और कारखानों में एक व्यक्ति का प्रबन्ध स्वीकार करना था : "ठीक समाजवाद के हित में .... क्रांति मांग करती है कि जनसमुह श्रम व्यवस्था के नेताओं की एकमात्र इच्छा का निर्विवाद पालन करें।" इसका अर्थ था फरवरी 1917 से आग की तरह फैले फैक्टरी कमेटी आंदोलन को दबाना। इन कमेटियों द्वारा किये गए अधिग्रहणों को हतोत्साहित करना तथा कारखानों में उनके बढते दबदबे को मात्र एक 'निरीक्षण' कार्य में तबदील करना। उन्हें ट्रेडयूनियन के पिछलग्गुओं में बदला जाना था जो पहले ही नए राजकीय ढांचे में संयोजित कर ली गईं थीं और जिन्हें काबू में रखना आसान था।

नेतृत्व ने इन नीतियां को आर्थिक अव्यवस्था के खतरे से निपटने तथा, विश्वक्रांति के प्रसार के वक्त, अर्थव्यवस्था को अन्ततः समाजवादी निर्माण की ओर लेजाने के लिए क्रांतिकारी शासन को उपलब्ध बेहतरीन रास्ते के रुप में पेश किया। लेनिन ने इस व्यवस्था को 'राज्य पूँजीवाद' कहा। इससे उसका अभिप्राय था सर्वहारा राज्य के हाथ में, क्रांति के हित में, पूँजीवादी इकोनमी का नियन्त्रण। वामपंथी कम्युनिस्टों के खिलाफ एक बहस में (**वामपंथी बचकानापन व पेटीबुर्जूआ मानसिकता**) लेनिन ने तर्क दिया कि पिछड़े रुस में, जहां प्रतिक्रांति का मुख्य खतरा किसानी के पिछड़े पेटीबुर्जूआ तबके से था, राज्य पूँजीवाद की ऐसी व्यवस्था निश्चित ही एक अग्रगामी कदम होगी। यह धारणा बोल्शेविकों के लिए एक धर्मसूत्र बनी रही। इसने उन्हें इस तथ्य के प्रति अन्धा बनाए रखा कि आन्तरिक प्रतिक्रांति सर्वप्रथम और सर्वोपरि राज्य, न कि किसानी, की मार्फत अभिव्यक्त हो रही थी। वामपंथी कम्युनिस्ट भी "पेटीबुर्जूआ आर्थिक संबन्धों" की व्यवस्था में क्रांति के पतित हो जाने की संभावना को लेकर चिन्तित थे ('थीसिस आन प्रेजेंट सिच्यूऐश्न', **कोम्युनिस्ट** न.1, अप्रैल 1918, डेनियल के **ए डक्यूमेंटरी हिस्टरी आफ रेवोल्यूश्न**)। नेतृत्व के समान वे भी मानते थे कि 'सर्वहारा' राज्य द्वारा राष्ट्रीयकरण एक समाजवादी कदम था। असल में उन्होंने इसे समूची अर्थव्यस्था तक फैलाने की मांग की। साफ है वे "राज्य पूँजीवाद" के खतरे के असल अर्थ संबन्धी पर्णतया सजग नहीं हो सकते थे। पर स्वयं को एक मज़बूत वर्ग भावना पर आधारित करते हुए, वे फौरन उस व्यवस्था का खतरा ताड़ गए जो समाजवाद के नाम पर मज़दूरों का शोषण संगठित करने की बात करती थी। ओसीन्सकी के भविष्यसूचक शब्द मशहूर हैं:

> "हम 'व्यपारसंघों के निर्देश तले समाजवाद के निर्माण' की सोच के पक्षधर नहीं। हम मज़दूर वर्ग की वर्ग रचनात्मकता, न कि 'उद्योग के कैपटनों' के अदेशों द्वारा सर्वहारा समाज की रचना के विचार के पक्षधर हैं....। वर्ग भावना पर विश्वास से हम सर्वहारा की सक्रिय वर्ग पहलकदमी की ओर बढते हैं। अन्यत्र हो भी नहीं सकता। गर सर्वहारा को श्रम के समाजवादी गठन की पूर्वशर्तों की रचना का ज्ञान नहीं, उसकी जगह कोई दूसरा यह नहीं कर सकता। न ही कोई उसे ऐसा करने के लिए मज़बूर कर सकता है। छड़ी गर मज़दूर वर्ग के खिलाफ उठायी गई तो वह स्वयं को एक ऐसी सामाजिक ताकत के हाथ में पाएगी जो या तो किसी अन्य वर्ग के प्रभाव में होगी या सोवियत राज्य के; तब सोवियत सत्ता सर्वहारा के खिलाफ किसी अन्य वर्ग (किसानी)त्रका समर्थन हासिल करने के लिए मज़बूर होगी। और इन कदमों से वह सर्वहारा की तानाशाही के तौर में अपना विनाशा कर लेगी। समाजवाद तथा समाजवादी संगठन स्वयं सर्वहारा द्वारा ही स्थापित किये जाएँगे, अन्यथा उन्हें स्थापित नहीं किया जाएगा; तब कुछ दूसरा ही स्थापित होगा - राज्यपूँजीवाद।" ('समाजवाद के निर्माण पर', **कोम्युनिस्ट न.** 2, अप्रैल 1918, डेनियल के **कंशियन्स आफ द रेवोल्यूशन**, पृ. 85)

इस खतरे के खिलाफ वामपंथी कम्युनिस्टों ने फेक्टरी कमेटियों तथा 'आर्थिक कौंसिलों' द्वारा उद्योग के मज़दूर नियन्त्रण की वकालत की। उन्होंने स्वयं अपनी भूमिका पार्टी के अन्दर गठित एक 'जिम्मेवार सर्वहारा विपक्ष' के रुप में प्रभाषित की जिसका काम था पार्टी और सोवियत सत्ता को 'बुर्जूआ नीतियों के विनाशाकारी' रास्ते की ओर 'भटकने' से रोकना। ('थीसिस आन प्रेजेंट सिच्यूऐश्न', **कोम्युनिस्ट न.**1, अप्रैल 1918, डेनियल के **ए डक्यूमेंटरी हिस्टरी आफ द रेवोल्यूश्न**)।

वामपंथियों द्वारा चेताए खतरे मात्र अर्थिक स्तर तक सीमित नहीं थे अपितु उनके कहीं बड़े **राजनीतिक** असर थे, यह उपर से श्रम अनुशासन थोपने के प्रयासों के खिलाफ उनकी एक अन्य चेतावनी से दिखाया जा सकता है:

> "पूँजीपतियों की विशाल भागीदारी तथा अर्धनौकरशाही केन्द्रीयकरण के आधार पर उद्योगों के प्रशासन की नीति के संग वह श्रम नीति जोड़ना स्वाभाविक है जो 'आत्म अनुशासन' के नाम पर मज़दूरों पर अनुशासन थोपने की ओर निदेशित हो, और जो मज़दूरों के लिए जबरी श्रम (दक्षिणपंथी बोल्शेविकों द्वारा प्रस्तावित एक कार्यक्रम), पीसवर्क, बढ़ा कार्य-दिवस लागू करने की ओर निदेशित हो।
>
> "सरकारी प्रशासन के रुप को नौकरशाही केन्द्रीयकरण की दिशा में विकसित होना होगा। विभिन्न कमिस्सारों का शासन, स्थानीय सोवियतों को उनकी स्वतन्त्रता से वंचित करना, और व्यवहार में नीचे से शासित 'कम्यून राज्य' को खारिज़ करना" (वही)।

कोम्युनिस्ट का फेक्टरी कमेटियों, सोवियतों तथा मज़दूर वर्ग की स्व-सक्रियता की रक्षा इस लिए अहम नहीं थी कि वह रुस के रुबरु फौरी आर्थिक मुश्किलों का हल थी। न ही वह रुस में 'फौरन साम्यवाद के निर्माण' का फारमूला था। वामपंथ ने स्पष्ट कहा "समाजवाद को एक देश, वह भी एक पिछडे हुए देश, में अमल में लाना संभव नहीं" (एल शपीरो, द आरिजन् आफ कम्युनिस्ट आटोक्रेसी, 1955, पृ. 137)। राज्य द्वारा श्रम अनुशासन थोपा जाना, सर्वहारा के स्वायत निकायों को राज्य के ढांचे में मिला लिया जाना, ये सर्वोपरि रुसी मज़दूर वर्ग के **राजनीतिक** प्रभुत्व पर हमले थे। जैसे आईसीसी ने बहुधा कहा है (3), वर्ग की राजनीतिक ताकत ही क्रांति की सफलता की एकमात्र असल गारण्टी है। और यह राजनीतिक ताकत वर्ग के केवल जन निकायों, उसकी फेक्टरी कमेटियों तथा सभाओं, उसकी सोवियतों तथा जनसेनाओं द्वारा ही इस्तेमाल की जा सकती है। इन निकायों की सत्ता को कमज़ोर करती बोल्शेविक नेतृत्व की नीतियां स्वयं क्रांति के लिए एक गंभीर खतरा थीं। क्रांति के आरंभिक महीनों में वामपंथी कम्युनिस्टों द्वारा इतने अनुबोधक तरीके से देखे गए खतरे के ये निशान गृहयुद्व के दौर में और गंभीर बनने वाले थे। असल में यह दौर कई माने में रुस के भीतर क्रांति का अन्तिम भाग्य तय करने वाला था।

गृहयुद्व

रुस के अन्दर 1918-1920 का प्रतिक्रांति का दौर सर्वहारा गढ़ को, विश्वक्रांति की सेनाओं की सहायता की गैरहाज़िरी में, दरपेश भारी खतरों की गवाही है। रुस के बाहर क्रांति जड़ें नहीं जमा पाई। लिहाज़ा रुसी सर्वहारा को मूलतः

अकेले ही सफेद (White) प्रतिक्रांति और उसके पश्चिमी पक्षधरों के हमलों के खिलाफ लडना पडा। सैनिक तौर पर रुसी सर्वहारा का वीरोचित प्रतिरोध विजयी रहा। पर राजनीतिक तौर पर सर्वहारा जंग से चकनाचूर, निःशक्त तथा बिखरा हुआ और सोवियत राज्य पर वास्तविक नियन्त्रण से कमोबेश वंचित निकला। सैनिक संघर्ष जीतने के अपने जोश में, बोल्शेविकों ने सामाजिक तथा अर्थिक जीवन के निरन्तर सैन्यीकरण द्वारा मज़दूर वर्ग की राजनीतिक ताकत के पतन को तीव्र कर दिया था। राजकीय मशीन के उच्चतम स्तरों पर समूची प्रभावी सत्ता के केन्द्रीयकरण ने सैनिक संघर्ष का निर्मम तथा असरकारक संचालन संभव बनाया। पर इसने क्रांति के असल गढ़ों, वर्ग एकीकरण के संगठनों को और कमज़ोर बनाया। इस काल में धटित सोवियत सत्ता का नौकरशाहीकरण 1921 में विश्वक्रांति के उतार के बाद अनपलट बन गया।

1918 में जंग छिडने के साथ ही बोल्शेविक पार्टी में एकजुटता स्थापित हुई। हर किसी ने बाहरी खतरे के खिलाफ एकता की जरुरत को पहचाना। **कोम्युनिस्ट** ग्रुप, जिसका प्रकाशन पार्टी नेतृत्व द्वारा बुरी तरह सताये जाने के बाद बन्द हो गया था, खतम हो गया। गृहयुद्व की प्रतिक्रिया में इसका मौलिक नाभिक दो अलग दिशाओं में चला गया।

रादेक तथा बुखारिन द्वारा चिन्हित एक रुझान ने गृहयुद्व द्वारा थोपे अर्थिक उपायों का तहेदिल स्वागत किया। थोक में राष्ट्रीयकरण, व्यापार तथा मुद्रा रुपों का दमन और किसानी से जबरी उगाही, 'युद्व साम्यवाद' के तथाकथित उपाय, उनके अनुसार ये सब पहले की 'राज्य पूँजीवादी' मंजिल से असल विच्छेद के सूचक थे। वे उत्पादन के सच्चे कम्युनिस्ट संबंधों के गठन की ओर बडा कदम थे। बुखारिन ने तो यह सिद्व करते हुए एक किताब **-द इकानमिक्स आफ ट्रंजिशन पीरियड** - लिख डाली कि आर्थिक बिखराव तथा जबरी श्रम भी साम्यवाद की ओर संक्रमण की आरंभिक मंजिलें है। वह 'सैद्वान्तिक' रुप से यह सिद्व करने की फिराक में था कि युद्व साम्यवाद तले (War Communism), जिसे एक हताशपूर्ण हालात से निपटने के लिए ऐमरजेंसी कदमों के तौर पर अपनाया गया था, रुस साम्यवाद की ओर संक्रमणशील एक समाज था। बुखारिन जैसे भूतपूर्व वामपंथी कम्युनिस्ट एक व्यक्तिक मैनेजमेण्ट तथा श्रम अनुशासन की अपनी पूर्व आलोचनाओं को त्यागने के लिए पूरी तरह तैयार थे। चूँकि उनके लिए सोवियत राज्य अब घरेलू पूँजी से समझौते की कोशिश में नहीं था अपितु कम्युनिस्ट रुपांतरण के एक निकाय के रुप में सुदृडता से काम कर रहा था। **द इकानमिक्स आफ ट्रंजिशन पीरियड** में बुखारिन ने तर्क दिया कि सोवियत राज्य का सुदृडीकरण, उस द्वारा राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन का अधिकाधिक समायोजन साम्यवाद की ओर निर्णायक विकास थेः

"ट्रेडयूनियनों और व्यवहार में सर्वहारा के तमाम जन संगठनों का 'सरकारीकरण' स्वयं रुपांतरण की प्रक्रिया के अन्दरुनी तर्क का फल था। श्रमिक ढांचे के छोटे से छोटे सेल के लिए जरुरी है कि वह संगठन की आम प्रक्रिया के लिए सहायक हो। जिसे मज़दूर वर्ग की सामूहिक सोच द्वारा योजनावद्व तरीके से चलाया जाता है। इस सामूहिक सोच की उच्चतम, सर्वव्यापी तथा भौतिक अभिव्यक्ति है उसकी राज्य सत्ता। इस प्रकार राज्यपूँजीवाद की व्यवस्था द्वन्द्वात्मक तरीके से अपने विपरीत में, मज़दूर समाजवाद के सरकारी रुप में बदल दी जाती है।" (बुखारिन, **द इकानमिक्स आफ ट्रंजिशन पीरियड**, डेनियल, **ए डक्यूमेंटरी हिस्टरी आफ रेवोल्यूशन, 1960, पृ.** 180 में उदृत)

ऐसे विचारों से बुखारिन ने "द्वन्द्वात्मक" तरीके से यह मार्क्सवादी धारणा उलट दी जिस अनुसार साम्यवादी समाज की ओर गमन राजकीय ढांचे के उत्तरोतर शिथलन, व उसके लोप से चरित्रित होगा। **इकानमिक्स** लिखते वक्त बुखारिन अभी एक क्रांतिकारी था। पर एक देश में पूर्णतः सीमित राज्यीकृत 'साम्यवाद' के उसके सिद्वान्तों तथा 'एक देश में समाजवाद' के स्तालिनवादी सिद्वान्त में एक निश्चित निरन्तरता है।

जहां बुखारिन ने 'युद्व साम्यवाद' के साथ समझौता कर लिया, उन वामपंथियों ने जो सर्वहारा जनवाद की अपनी वकालत में सर्वाधिक सुसंगत रहे थे, शासन के बढते सैन्यीकरण के समक्ष इस उसूल का बचाव जारी रखा। 1919 में ओसीन्स्की, स्परानोव व अन्य के गिर्द 'जनवादी केन्द्रीयतावाद' (Democratic Centralism) ग्रुप का गठन हुआ। उन्होंने 'एक व्यक्ति का प्रबन्ध' के सिद्वान्त का विरोध तथा सामूहिकता के सिद्वान्त की वकालत करना जारी रखा जो उनके मुताबिक "सोवियत ढांचे में विभागवाद तथा नौकरशाही मुर्दानगी के विकास के खिलाफ एक सुदृड हथियार था" (**थीसिस आन कालेजियल प्रिन्सीपल एण्ड इंडविज्यूल अथारटी**)। उद्योग तथा सेना में बुर्जुआ विशेषज्ञों के प्रयोग की जरुरत को पहचानते हुए, उन्होंने विशेषज्ञों को कार्यकर्ताओं के कंट्रोल तले डालने की जरुरत पर बल दिया। **"**विशेषज्ञों की जरुरत को लेकर किसी का झगडा नहीं, विवाद की बात है उन्हें कैसे प्रयोग किया जाए।"(डेनियल, **कंशियन्स आफ रेवोल्यूशन,** पृ. 109)

इसके साथ ही डेमोक्रेटिक सेन्ट्रलिस्टों अथवा ''डेस्सिटों", जैसे कि वे जाने जाते थे, ने स्थानीय सोवयितों द्वारा पहलकदमी के ह्रास का विरोध किया। उन्होंने उन्हें मज़दूर जनवाद के कारगर निकायों के रुप में पुनर स्थापित करने के लिए कई सारे सुधार सुझाए। इस प्रकार की नीतियों के चलते ही आलोचकों ने कहा कि डेस्सिटों की रुचि जनवाद में अधिक तथा केन्द्रीयतावाद में कम है। अन्त में डेस्सिटों ने पार्टी में जनवादी व्यवहार की पुनरस्थापना का आवाहन किया। सितंबर 1920 में आरसीपी की नवीं कांग्रेस में उन्होंने पार्टी के नौकरशाहीकरण पर, व एक छोटे से अल्पमत के हाथ सत्ता के केन्द्रीयकरण पर हमला किया। अभी भी पार्टी पर इस प्रकार की आलोचनाओं का कितना असर पडता था, यह इसका चिन्ह है कि कांग्रेस ने अन्त में एक घोषणापत्र पारति किया जिसने "पार्टी के स्थानीय अथवा केन्द्रीय निकायों की व्यापक आलोचना" तथा "भिन्न विचारों के कारण साथियों के दमन के विरोध" का जोशपूर्ण आवाहन किया। (नवीं पार्टी कांग्रेस का प्रस्ताव, 'पार्टी निर्माण के अगले कार्य')

गृहयुद्व के काल में सोवियत शासन के कार्यभारों संबंधी डेस्सिटों के आम नज़रिये को कांग्रेस में ओसीन्स्की के वक्तव्य से जाना जा सकता है :

"इस समय हमारा बुनियादी नारा होना चाहिए सैनिक कार्य, संगठन के फौजी रुप तथा प्रशासनिक तरीकों का मज़दूरों की सचेत रचनात्मक पहलकदमी संग एकीकरण। सैनिक कार्य के झण्डे तले गर आप नौकरशाही रोपने लगते हैं, तो हम अपनी शक्तियों को बिखेर देंगे तथा अपना कार्यभार करने में असफल रहेंगे।" (डेनियल के **ए डक्यूमेंटरी हिस्टरी आफ रेवोल्यूशन** में उदृत)।

कुछ साल बाद वामपंथी कम्युनिस्ट मिय्यस्नीकोव ने डेमोक्रेटिक सेन्ट्रालिस्ट ग्रुप बावत कहा :

"इस ग्रुप के प्लेटफार्म का कोई असल सैद्वान्तिक मूल्य नहीं था। एकमात्र नुक्ता जिसने सब ग्रुपों तथा पार्टी का ध्यान खींचा वह था अति केन्द्रीयकरण के खिलाफ उसका संघर्ष। अब जा कर ही कोई इस संघर्ष में अर्थव्यवस्था में नौकरशाही द्वारा जीती पोज़ीशनों से उसे हटाने के सर्वहारा के अस्पष्ट प्रयास देख सकता है। यह ग्रुप प्रकृतिक मौत मरा, उसके खिलाफ बिना किसी हिंसा के इस्तेमाल के।" (**ल ऊवरिये कम्युनिस्ट**, 1929, केएपीडी के निकट एक पत्रिका)

डेस्सिटों की आलोचना अवश्यंभावी तौर पर अस्पष्ट थी। चूँकि वे ऐसे समय पैदा हुआ एक रुझान थे जब बोल्शेविक पार्टी तथा क्रांति अभी जिन्दा थी, लिहाज़ा पार्टी की आलोचनाएँ पार्टी को अधिक जनवादी, अधिक न्यायपूर्ण होने की अपील का ही रुप ले सकती थीं....... यानि बुनियादी राजनीतिक पोज़ीशनों की बजाए आलोचनांओं को संगठनात्मक व्यवहार तक सीमित रखना।

डेमोक्रेटिक सेन्ट्रालिज़्म ग्रुप में से कई मिलट्री ओपोज़ीशन से भी जुडे हुए थे जो मार्च 1919 में अल्पकाल के लिए गठित किया गया था। गृहयुद्व की जरुरतों ने बोल्शेविकों को एक केन्द्रीयकृत लडाकू ताकत -लालसेना- गठित करने के लिए मज़बूर किया जो ना सिरफ मज़दूरों अपितु किसानी तथा अन्य तबकों से भरती द्वारा गठित की गई थी। तत्काल ही यह सेना उस श्रेणीवद्व तरीके अनुसार डल गई जो शेष राजकीय ढांचे में स्थापित किया जा रहा था। अफसरों के चुनाव को "राजनीतिक रुप से व्यर्थ तथा तकनीकी रुप से अव्यवहारिक"(त्रात्सकी, 'वर्क, डिस्पलिन, आर्डर' 1918, डेनियल, **कंशियन्स आफ द रेवोल्यूशन**, पृ. 104 में उदृत) करार

देकर बन्द कर दिया गया; युद्वक्षेत्र में अवज्ञा के लिए सज़ाए मौत, सलूट मारना तथा अफसरों को संबोधन का विशेष तरीका पुर्नबहाल कर दिया गया। रैंकों में विभेद ठोस कर दिये गए, खासकर सेना के उच्च पदों पर भूतपूर्व जारशाही अफसरों की नियुक्ति के बाद।

मिलट्री ओपोजी़शन, जिसका मुख्य प्रवक्ता व्लादीमीर स्मिरनोव था, लालसेना को आम बुर्जूआ सेना के सांचे में ढालने के रुझान से लडने के लिए गठित किया गया था। वे लालसेना के गठन के खिलाफ नहीं थे, न ही फौज़ी विशेषज्ञों के इस्तेमाल के। पर वे श्रेणीवद्वता तथा अनुशासन की अति के खिलाफ थे। वे चाहते थे कि सेना एक समग्र राजनीतिक दिशा से चालित हो जो बोल्शेविक उसूलों से हट कर न हों। पार्टी नेतृत्व ने उन पर सेना को भंग करने तथा किसानी युद्व के अधिक अनुरुप जनदस्ते गठित करने की इच्छा का झूठा आरोप लगाया। अन्य अनेक अवसरों के समान बोल्शेविक नेतृत्व को अपने द्वारा "सर्वहारा राजकीय संगठन" करार ढांचे का हर विकल्प पेटीबुर्जूआ, अराजकतावादी तथा विकेन्द्रीकर्णवादी ही नज़र आता था। असल में, बोल्शेविक बहुधा श्रेणीकृत केन्द्रीयतावाद के पूँजवादी रुपों को नीचे से पैदा आत्मानुशासन तथा केन्द्रीयतावाद, जो सर्वहारा का पहचानचिन्ह है, से गडमड कर देते थे। जो भी हो, मिलट्री ओपोजी़शन की मांगों को ठुकरा दिया गया और वह बिखर गया। पर, फेक्टरी मिलीशिया के भंग के साथ, लालसेना के श्रेणीवद्व ढांचे ने 1921 के बाद से उसे मज़दूर वर्ग के **खिलाफ** बातौर दमनात्मक औज़र के इस्तेमाल के अधिक अनुकूल बनाया।

गृहयुद्व के ससूचे दौर में पार्टी में विपक्षी रुझानों की बरकरारी के बावजूद, प्रतिक्रांति के खिलाफ एकता की जरुरत ने पार्टी के अन्दर व उन सब वर्गी तथा सामाजिक तबकों में एकजुटता को मज़बूत किया जो व्हाइटस के खिलाफ सोवियत शासन के समर्थक थे। शासन में निहित तनाव इस दौर में काबू में रहे; जब लडाई खतम हुई और एक तबाह देश का निर्माण कार्य शासन के समक्ष था, ये तनाव सतह पर फूट पडे। सोवियत शासन के आगामी कदमों पर फूट 1920-1921 में किसान विद्रोहों, नेवी में असंतोष तथा मास्को व पेट्रोग्राड में मज़दूर हडतालों में प्रकट हुई। इसका चर्म था मार्च 1921 में क्रांसडैट में मज़दूर विद्रोह। ये विरोध अवश्यंभावी तौर पर पार्टी में भी प्रकट हुए और 1920-1921 के सदमे भरे बरसों में, वर्कर्ज़ ओपोज़ीशन बोल्शेविक पार्टी में राजनीतिक मतभेदों की अभिव्यक्ति का मुख्य फोकस बना।

वर्कर्ज़ ओपोजी़शन

मार्च 1921 में दसवीं पार्टी कांग्रेस बोल्शेविक पार्टी में उस विवाद का अखाडा़ बनी जो गृहयुद्व की समाप्ति से तीव्रतर होता गया था : ट्रेडयूनियनों का सवाल। सतह पर यह सर्वहारा तानाशाही तले ट्रेडयूनियनों के रोल विषयक बहस थी। पर असल में यह सोवियत शासन और मज़दूर वर्ग के संग उसके रिशतों के समूचे भविष्य संबन्धी कहीं गहरी समस्याओं की अभिव्यक्ति थी। मोटे तौर पर पार्टी में तीन पोज़ीशनें थीं : त्रात्सकी की पोज़ीशन। वह 'मज़दूर राज्य' में ट्रेडयूनियनों के पूर्ण संयोजन का हिमायती था। वहां उन्होंने श्रम उत्पादकता बढाने का काम करना था। लेनिन की पोज़ीशन, उसका तर्क था कि यूनियनों को अभी मज़दूर वर्ग की प्रतिरक्षा के निकायों का काम करना है। स्वयं मज़दूर राज्य के भी खिलाफ, जो, उसने इशारा किया, असल में "मज़दूरों तथा किसानों का राज्य" था और जो "नौकरशाही विकृतियों" का शिकार था। और अन्त में थी वर्कर्ज़ ओपोजी़शन ग्रुप की पोज़ीशन जो सोवियत शासन से स्वतन्त्र औद्योगिक यूनियनों द्वारा उत्पादन के प्रबन्ध का हिमायती था। यद्यपि इस बहस के समूचे चैखटे में गहरी कमी थी, वर्कर्ज़ ओपोजीशन ने शासन का अधिकाधिक पहचान चिन्ह बनते गए नौकरशाही तथा फौजी तरीकों से सर्वहारा की नफरत को उलझे तथा झिझकालू तरीके से अभिव्यक्त किया। उसने वर्ग की इस आशा को भी अभिव्यक्त किया कि अब जबकि गृहयुद्व की मुशिकलें समाप्त हो गईं थी, स्थिति सुधरेगी।

वर्कर्ज़ ओपोजी़शन के अगुआ मुख्यता ट्रेडयूनियनी ढांचे में से थे। पर लगता है इसे यूरुपी रुस के दक्षिणी पूर्वी भाग में मज़दूर वर्ग के तथा मास्को में धातू मज़दूरों के बडे हिस्से का समर्थन हासिल था। शिल्यपनिकोव तथा मेदविदेव, ग्रुप के दो अग्रणी सदस्य धातू मज़दूर थे। पर उनकी सबसे मशहूर अगुआ थी अलेक्सांद्रा कोलोनताई जिसने कार्यक्रम संबन्धी रचना **द वर्कर्ज़ ओपोजी़शन** लिखी। यह ग्रुप द्वारा दसवें कांग्रेस को पेश 'थीसिस आन ट्रेडयूनियन क्वेश्चन' का विशदीकरण थी। इस रचना से ग्रुप की तमाम ताकत तथा कमजोरी का पता चलता है, जो पुष्टि करती हुई शुरु होती है कि :

> "वर्कर्ज़ ओपोजीशन सोवियत रुस के औद्योगिक सर्वहारा की गहराईओं में से उभरा है। यह न सिरफ उन असहनीय जीवन तथा श्रम हालातों की पैदायश है जिसमें सत्तर लाख मज़दूर स्वयं को पाते हैं, अपितु यह आरंभ में अभिव्यक्त कम्युनिस्ट कार्यक्रम के वर्ग सुसंगत सिद्वान्तों से हमारी सोवियत नीति के विचलनों, विरोधों तथा अमूल भटकावों की भी पैदाइश है।"ज(कोलोनताई, **द वर्कर्ज़ ओपोजीशन**, सलिडेरिटी पैंफलेट न. 7, पृ. 1)

तब कोलोनताई गृहयुद्व के बाद सोवियत शासन को दरपेश भयंकर हालातों का जिक्र करती है और नौकरशाही तबके के विकास की ओर घ्यान खींचती है जिसकी जड़ें मज़दूर वर्ग के बाहर थीं -बुद्विजीवी, किसानी, पुराने बुर्जूआज़ी के अवशेष। यह तबका सोवियत ढांचे पर और स्वयं पार्टी पर अधिकाधिक प्रभुत्व अख्तियार करता गया था, और दोनों को उसने कैरियरिज़्म तथा **सर्वहारा** हितों के प्रति अन्धी अनदेखी से भर दिया था। वर्कर्ज़ ओपोजी़शन के लिए सोवियत राज्य शुद्व सर्वहारा औज़ार नहीं था बल्कि वह एक बेमेल संस्था था जो रुसी समाज में विभिन्न वर्गों व तबकों के हितों में संतुलन बैठाने के लिए मज़बूर था। उन्होंने ज़ोर दिया कि क्रांति की अपने आरंभिक लक्ष्यों के प्रति वफादारी सुनिश्चित करने का तरीका यह नहीं था कि उसका नियन्त्रण गैर सर्वहारा विशेषज्ञों तथा रज्य के अन्य सामाजिक रुप से अस्पष्ट निकायों को थमाया जाए। बल्कि यह मज़दूर जनसमूहों की पहलकदमी तथा रचनात्मकता पर निर्भर हो कर ही किया जा सकता हैः

> "यह आंकलन, जो किसी भी व्यवहारिक व्यक्ति के लिए बहुत सरल तथा साफ होना चाहिए, हमारे पार्टी नेताओं द्वारा नज़र अंदाज़ कर दिया गया है : **साम्यवाद आज्ञप्ति द्वारा स्थापित नहीं किया जा सकता**। इसे रिसर्च की व्यवहारिक प्रक्रिया द्वारा, शायद गलतियों द्वारा, पर स्वयं मज़दूर वर्ग की रचनात्मक शक्तियों द्वारा ही रचा जा सकता है।" (कोलोनताई, **वही,** पृ. 33)

वर्कर्ज़ ओपोजीशन की ये आम अन्तरदृष्टियाँ कई माने में बहुत गहन थीं, पर इन सामान्य बातों के अलावा वह कोई चिरस्थायी योगदान नहीं दे पाया। क्रांति को दरपेश संकट के समाधान के तौर पर पेश उनके ठोस प्रस्ताव अनेक भ्रान्तिओं पर आधारित थे। यह उस अन्धीखाई की गहनता की अभिव्यक्ति था जिस में से रुसी सर्वहारा उस वक्त गुज़र रहा था।

वर्कर्ज़ ओपोजीशन के लिए सर्वहारा के खालिस वर्ग हितों की अभिव्यक्ति करते निकाय ट्रेडयूनियनों, अथवा इंडस्ट्रीयल यूनियनों के सिवा कोई नहीं थे। लिहाज़ा, साम्यवाद की रचना का कार्य यूनियनों के सपुर्द किया जाना चाहिए : "वर्कर्ज़ ओपोजी़शन यूनियनों में कम्युनिस्ट इकोनमी के रचेता तथा प्रबन्धक देखता है।" (कोलोनताई, **वही,** पृ. 28)

इस प्रकार जबकि जर्मनी, हालैण्ड तथा अन्यत्र के वामपंथी कम्युनिस्ट यूनियनों को सर्वहारा क्रांति के मार्ग में रुकावट के तौर पर नंगा कर रहे थे, रुस में वाम उन्हे कम्युनिस्ट रुपान्तरण के सम्भाव्य निकायों के तौर पर महिमामंडित कर रहा था! रुस में क्रांतिकारी यह तथ्य समझना बहुत कठिन पा रहे थे कि पूँजीवादी पतनशीलता के दौर में अब ट्रेडयूनियनों की सर्वहारा के लिए कोई भूमिका नहीं : 1917 में कारखाना समितिओं तथा सोवियतों के उदय का अर्थ यद्यपि यह था कि यूनियनें अब बतौर सर्वहारा संघर्ष के औज़र मर गई थीं; रुस में कोई भी वामपंथी ग्रुप यह नहीं समझ पाया, न तो वर्कर्ज़ ओपोजी़शन से पहले न बाद में। 1921 तक, जब वर्कर्ज़ ओपोजी़शन यूनियनों को क्रांति की रीढ के रुप में पुख्ता कर रहा था, क्रांतिकारी संघर्ष के असल निकाय - कारखाना समितियां तथा सोवियतें - पहले ही निर्जीव कर दिये गए थे। वास्तव में कारखाना समितिओं के मामले में, 1918 के बाद यूनियनों में उनके संयोजन ने ही वर्ग निकायों के रुप में प्रभावी तौर पर उन्हें मार दिया। उसके वकीलों की शुभेच्छा के बावजूद, यूनियनों के हाथ में निर्णय लेने की ताकत देने से रुस में ताकत सर्वहारा

के हाथ में नहीं लौटती। यह परियोजना गर संभव भी होती तो यह राज्य की मात्र एक ब्रांच से दूसरी को सत्ता का स्थान्तरण होता।

पार्टी को पुनरुजीवित करने के वर्कर्ज़ ओपोजी़शन के कार्यक्रम में भी खामियां थीं। उन्होंने पार्टी के बढते अवसरवाद की व्यख्या उसमें मात्र गैर सर्वहारा सदस्यों के आगमन के रुप में की। उनके हिसाब से, गैर मज़दूर सदस्यों के खिलाफ एक मज़दूरवादी शुद्विकरण द्वारा पार्टी को सर्वहारा मार्ग की ओर लौटाया जा सकता था। पार्टी का विशाल बहुमत अगर खुरदरे-हाथ, 'शुद्व' मज़दूरों से गठित होता तो सब सही होता। पार्टी के पतन की यह ''व्यख्या' असलियत से कोसों दूर थी। पार्टी का अवसरवाद उसके कार्यकर्ताओं का सवाल नहीं था, वह उत्तरोतर प्रतिकूल होती स्थिति में राज्यसत्ता संभालने के दवाबों तथा तनावों का जवाब था। क्रांति के उतार के दौर में जिस को भी राज्य की वागडोर थमा दीजिए, उसकी 'वंशावली' कितनी ही खालिस क्यों न हो, 'अवसरवादी' हो जाएगा। बोरदिगा ने एक बार जिक्र किया कि भूतपूर्व मज़दूर बहुधा बदतरीन नौकरशाह बनते हैं। वर्कर्ज़ ओपोजी़शन ने कभी इस धारणा को चुनौती नहीं दी कि राज्य को सर्वहारा का औज़ार बनाए रखने की गरण्टी के लिए उस पर पार्टी का कंट्रोल जरुरी हैः

> "हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति को हमारी वर्ग नीति का सर्वोच्च निदेशक केन्द्र, वर्ग सोच तथा सोवियतों की व्यवहारिक नीति पर नियन्त्रण का निकाय, और हमारे बेसिक कार्यक्रम का आत्मिक मूर्तिकरण बनना होगा।" (कोलोनताई, **वही,** पृ. 42)

वर्कर्ज़ ओपोजी़शन सर्वहारा अधिनायकत्व को पार्टी की तानाशाही के सिवा किसी रुप में देख पाने में असमर्थ था। दसवीं कांग्रेस के मध्य में जब क्रांसडेट विद्रोह फूट पडा, यह उन्हें पार्टी के प्रति वफादारी की व्यग्र कसमें खाने की ओर ले गया। इन कसमों को बजन देने के लिए वर्कर्ज़ ओपोजी़शन के मुख्य नेताओं ने स्वयं को क्रांसडेट टुकड़ी पर आक्रमण की अगली कतारों में प्रस्तुत किया। रुस में अन्य तमाम वामपंथी धडों के समान, वे क्रांसडेट विद्रोह की अहमियत समझने में पूर्णता असफल रहे जो सोवियत सत्ता की पुनरबहाली के लिए रुसी मज़दूर वर्ग का अन्तिम जनसंघर्ष था। पर विद्रोह को कुचलने में सहयोग वर्कर्ज़ ओपोजी़शन को, कांग्रेस के अन्त में, एक "पेटी बुर्जूआ अराजकतावादी भटकाव", "वस्तुगत" रुप से प्रतिक्रांतिकारी एक तत्व करार दिये जाने से नहीं बचा सका। पार्टी की दसवीं कांग्रेस में "धडों" पर प्रतिबन्ध वर्कर्ज़ ओपोजी़शन पर स्तंभित करती एक चोट था। गैरकानूनी, भूमिगत काम के परिदृश्य के रुबरु, वे शासन का अपना विरोध जारी नहीं रख पाए। उसके कुछ सदस्य अन्य गैरकानूनी धडों से मिल कर बीस के दशक में संघर्ष चलाते रहे; अन्य ने यथास्थिति से हार मान ली। स्वयं कोलोनताई का अन्त स्तालिनवादी शासन की एक बफादार सेवक के रुप में हुआ। 1922 में अंग्रेज़ वामपंथी कम्युनिस्ट अख़बार **द वर्कर्ज़ ड्रेडनाट** ने "तथकथित वर्कर्ज़ ओपोजी़शन के सिद्वान्तहीन तथा रीढहीन नेतृत्व" (**द वर्कर्ज़ ड्रेडनाट**, जुलाई 29, 1922) का ज़िक्र किया। निश्चित ही ग्रुप के कार्यक्रम में दृडता की कमी थी। यह ग्रुप के सदस्यों में हौसले का अथवा उसकी कमी का सवाल नहीं था। बल्कि यह उस भारी मुश्किल का फल था जो रुसी क्रांतिकारियों को उस पार्टी का विरोध करने अथवा उससे नाता तोडने में दरपेश थीं जो क्रांति का प्राण रही थी। बहुतेरे सच्चे कम्युनिस्टों के लिए, स्वयं पार्टी के आधारसूत्रों को चुनौती देना निरी मूर्खता थी; पार्टी के बाहर शून्य के सिवा कुछ नहीं था। पार्टी से यह गहरा मोह, इतना गहरा कि वह क्रांतिकारी सिद्वान्तों की रक्षा में रुकावट बना, बाद के लेफ्ट ओपोजी़शन में और भी मज़बूत था।

वर्कर्ज़ ओपोजी़शन की शासन की आलोचना के कमज़ोर होने की एक वजह थी अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य की उसकी पूर्ण कमी। रुसी वाम के दृडतम धड़े इस समझ से शक्ति पाते थे कि रुसी सर्वहारा तथा उसके क्रांतिकारी अल्पांशों का एकमात्र सच्चा मित्र है विश्व मज़दूर वर्ग। वहीं वर्कर्ज़ ओपोजी़शन का कार्यक्रम पूर्णतः रुसी राज्य के ढांचे में समाधान खोजने पर आधारित था।

वर्कर्ज़ ओपोजी़शन की केन्द्रीय चिन्ता थी : "अर्थिक पुनरनिर्माण के क्षेत्र में रचनात्मक शक्तियां कौन विकसित करेगा?" (कोलोनताई, **वही,** पृ. 4)। उन द्वारा रुसी मज़दूर वर्ग को सौंपा मूल कार्य था रुस में "कम्युनिस्ट इकोनमी" का निर्माण। उत्पादन के प्रबन्ध की समस्या से, रुस में तथाकथित "कम्युनिस्ट संबन्धों" की रचना से उनकी तन्मयता एक बुनियादी नुक्ते की पूर्ण गलतफहमी दिखाता था : कम्युनिज़्म एक अलग थलग गढ़ में स्थापित नहीं किया जा सकता। रुसी मज़दूर वर्ग के रुबरु मुख्य समस्या थी विश्वक्रांति का प्रासार न कि रुस का "अर्थिक पुनरनिर्माण"।

यद्यपि कोलोनताई की रचना "रुसी तथा संगठित विदेशी मज़दूरों के सिरों पर से किये जा रहे पूँजीवादी राज्यों संग मुक्त व्यपार" (**वही,** पृ. 10) की आलोचना करती है। तो भी, वर्कर्ज़ ओपोजीशन बोल्शेविक नेतृत्व के बढते तात्कालीन रुझान में पूरी तरह शरीक था जो रुसी इकोनमी की घरेलू समस्याओं को क्रांति के अन्तरराष्ट्रीय प्रासार की समस्या से उपर रखता था। आर्थिक पुर्ननिर्माण संबन्धी दोनों रुझानों का दृष्टिकोण भिन्न था, यह इस तथ्य से कम अहम है कि वे दोनो सहमत थे कि विश्वक्रांति से गद्दारी किये बिना, रुस एक अनिश्चित काल के लिए अपने में बन्द हो सकता था।

वर्कर्ज़ ओपोजीशन का यह ऐकान्तिक रुसी परिदृश्य रुस के बाहर वामपंथी कम्युनिस्ट ग्रुपों से संबन्ध स्थापित कर पाने की उसकी असफलता में भी झलकता है। कोलोनताई की रचना केऐपीडी के एक सदस्य द्वारा रुस से बाहर स्मगल की गई और केऐपीडी तथा **वर्कर्ज़ ड्रेडनाट**, दोनों द्वारा छापी गई थी। पर कोलोनताई को फौरन इसका अफसोस हुआ और उसने उसे वापिस पाने की कोशिश की! वर्कर्ज़ ओपोजीशन ने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल द्वारा अपनाई अवसरवादी नीतियों की कोई असल आलोचना प्रस्तुत नहीं की। उसने 21 शर्तों का समर्थन किया, और केऐपीडी तथा अन्य द्वारा उसके प्रति व्यक्त हमदर्दी के बावजूद, उसने सीआई के अन्दर 'विदेशी विपक्ष' के संग स्वयं को जोड़ने की कोई कोशिश नहीं की। 1922 में उन्होंने सीआई के चौथे कांग्रेस को एक आखिरी अपील की। पर अपना विरोध उन्होंने पूर्णतः शासन के नौकरशाहीकरण तथा रुस में भिन्न कम्युनिस्ट ग्रुपों के लिए मुक्त अभिव्यक्ति की कमी तक सीमित रखा। उन्हें इंटरनेशनल से कोई जवाब नहीं मिला जो कि पहले ही अपने बहुत से बेहतरीन तत्वों को बाहर कर चुका था और संयुक्त मोरचे की कुख्यात नीति पारित करने वाला था। इस अपील के जल्द ही बाद, वर्कर्ज़ ओपोजी़शन की गतिविधियों की जांच के लिए एक स्पेश्ल बोल्शेविक कमीशन नियुक्त किया गया। उसने निष्कर्ष निकाला कि ग्रुप "गैरकानूनी गुटीय संगठन" था, और तदोपरान्त दमन ने ग्रुप की अधिकतर गतिविधियों का अन्त कर दिया (4)। यह वर्कर्ज़ ओपोजी़शन की बदकिस्मती थी कि वह लोकप्रसिद्वि में उस वक्त आया जब पार्टी गहन उथल पुथल में से गुज़र रही थी। इसने जल्द ही रुस में **कानूनी** विपक्षी गतिविधि को असंभव बना देना था। कानूनी अर्न्त पार्टी गुटीय कार्य तथा शासन के भूमिगत विरोध के दो पायों में संतुलन बैठाने की फिराक में वर्कर्ज़ ओपोजी़शन शून्य का शिकार हो गया। अब से सर्वहारा प्रतिरोध की मशाल अधिक सुदृड तथा अटल जुझारुओं द्वारा उठाई जाने वाली थी।

सीडीवार्ड

फुटनोट

1. स्वयं बोल्शेविकों ने युद्व पूर्व काल में अति वामपंथी रुझानों को जन्म दिया था। खासकर 'अल्टीमेटिस्ट' तथा 'रिकालिस्ट', जिन्होंने 1905 की क्रांति के बाद बोल्शेविक संगठन की सांसंदीय कार्यनीति का विरोध किया। क्योंकि यह बहस पूँजीवाद के चढाव तथा पतन के बीच के दौर में हुई, यह उन मसलों पर विचार की जगह नहीं। कम्युनिस्ट वाम पतनशील पूँजीवाद में मज़दूर आंदोलन की विशिष्ट उत्पति है। वह नए दौर में सर्वहारा के क्रांतिकारी कार्यभारों संबन्धी 'आधिकारिक' कम्युनिस्ट रणनीति की आलोचना के रुप में पैदा हुआ।

2.देखें आईसीसी के **इंटरनेशनल रिव्यू**, न. 2 में 'जर्मन क्रांति के सबक'।

3.देखें 'रुसी क्रांति का पतन' (यह सप्लीमेंट), तथा 'क्रांसडेट के सबक', **इंटरनेशनल रिव्यू**, न. 3।

4.यद्यपि वर्कर्ज़ ओपोजी़शन ने 1922 के बाद से काम करना बन्द कर दिया था, 1930 के आरंभ तक गैरकानूनी, भूमिगत गतिविधियों के संबन्ध में उसका नाम, डेमोक्रेटिक सेन्ट्रालिज्म की तरह, बार बार आता है। जिसका अर्थ है कि दोनों ग्रुपों के तत्व कटु अन्त तक लडते रहे थे।

रुस में वामपंथी कम्युनिस्ट 1918-1930, भाग दो

कम्युनिस्ट वाम तथा प्रतिक्रांति, 1921-30

1921 के बाद बोल्शेविक पार्टी ने स्वयं को दुःस्वप्न की स्थिति में पाया। 1918-1921 के बीच हंगरी, इटली, जर्मनी तथा अन्यत्र मज़दूर बगावतों की पराजय के बाद, विश्वक्रांति गहन उतार पर चली गई। जर्मनी तथा बुल्गारिया के 1923 के तथा चीन के 1927 के झटकों के बावजूद, वह इससे फिर कभी नहीं उभर पाई। रुस में इकोनमी तथा र्स्वहारा दोनो करीब बिखराव की स्थिति में थे; मज़दूर जनसमूह या तो राजनीतिक जीवन से हट गऐ थे या उन्हे भगा दिया गया था। अब सर्वहारा के हाथ का औज़र न रहा सोवियत राज्य वास्तव में पूँजीवदी 'व्यवस्था' की सुरक्षा की एक मशीन के रुप में अद्यःपतित हो गया था। अपनी 'प्रतिस्थापनावादी (substituionist)' अवधाराणाओं के कैदी, बोल्शेविक अभी भी मानते थे कि विश्वक्रांति के पुनरउभार का इन्तज़ार तथा उसकी सहायता करते हुए, इस राजकीय मशीन तथा पूँजीवादी इकोनमी का प्रशासन चलाना संभव था। असलियत यह थी कि राज्यसत्ता की जरुरतें बोल्शेविकों को, देश तथा विदेश में, प्रतिक्रांति के छद्म दलालों में रुपान्तरित कर रहीं थी। रुस के अन्दर वे मज़दूर वर्ग के उतरोत्तर खूँखार शोषण के ओवरसियर बन गए। यद्यपि नेप के चलते राज्य के आर्थिक प्रभुत्व में, खासकर किसानी पर, कुछ कमी आई, इससे सर्वहारा पर पार्टी की तानाशाही में कोई ढील नहीं आई। इसके विपरीत, बोल्शेविक मानते थे कि रुस के भीतर से प्रतिक्रांति का मुख्य खतरा किसानी से है। लिहाज़ा, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि किसानी को दी गई आर्थिक रियायतों को संतुलित करने के लिए रुसी समाज पर बोल्शेविक पार्टी का राजनीतिक प्रभुत्व मजबूत करना जरुरी है। इससे पार्टी के अन्दर एकाधिकार का रुझान मजबूत हुआ। पार्टी द्वारा और पार्टी के अन्दर नियन्त्रण का यह कसना किसान पूँजीवाद की बाढ के खिलाफ सर्वहारा डैम के निर्माण का एकमात्र तरीका माना गया।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर, रुसी राज्य की जरुरतें, रुसी पार्टी के प्रभुत्व के माध्यम से, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की नीतियों पर घातक असर डाल रहीं थी : संयुक्त मोरचे तथा मज़दूर सरकार जैसे प्रतिक्रियावादी दावपेंच बहुत हद तक पूँजीवादी दुनिया में बुर्जूआ मित्र खोजने की रुसी राज्य की जरुरत की अभिव्यक्ति थे।

यद्यपि बोल्शेविक पार्टी ने सर्वहारा क्रांति का मार्ग अभी पूरी तरह नहीं छोडा था, हालातों की तर्कना पार्टी को अधिकाधिक रुसी राष्ट्रीय पूँजी की मांगों से एकरुप होने की ओर धकेल रही थी। लेनिन की अन्तिम रचनाओं में पिछडे रुस में 'समाजवाद के निर्माण' की समस्याओं की चिन्ता सवार देखी जा सकती है। स्तालिनवाद की जीत ने इस तर्क को मात्र स्पष्ट कर दिया। उसने अन्तरराष्ट्रीयतावाद तथा रुसी राज्य के हितों में द्वन्द्व का, दूसरे के पक्ष में पहले को तिलांजली द्वारा, अन्त कर दिया।

पिछले पचास साल की घटनाओं ने स्पष्ट किया है कि वर्गसंघर्ष की पराजय तथा उतार के दौर में सर्वहारा पार्टी जिन्दा नहीं बच सकती। क्रांतिकारी लहर की पराजय के बाद कम्युनिस्ट पारटियों के अस्तित्व बचाने का एकमात्र तरीका था बोरिया विस्तर समेत बुर्जूआ खेमें में शामिल हो जाना। रुस में अद्यपतन का रुझान इस तथ्य से और तीव्र हो गया कि पार्टी राज्य में मिल गई थी; उसे और भी तेज़ी से स्वयं को राष्ट्रीय पूँजी की मांगों के अनुरुप ढालना पडा। पराजय के दौर में, पतित होती पार्टी से अलग हुए अथवा उसकी मौत से बच निकले कम्युनिस्ट गुट ही क्रांतिकारी पोज़ीशनों का बचाव कर सकते हैं। पार्टी की गद्दारियों के खिलाफ कम्युनिस्ट पोज़ीशनों की रक्षा के लिए कटिबद्व छोटे ग्रुपों के उदय के साथ, रुस में यह मुख्यतया 1921-1924 मे घटित हुआ। जैसे हमने देखा बोल्शेविक पार्टी में विपक्षी रुझानों का उदय कोई नई बात नहीं थी। पर इन गुटों को 1921 के बाद दरपेश हालात उनके पूर्ववर्ती गुटों को दरपेश हालातों से कही भिन्न थे।

अब जबकि वर्ग के आरंभिक संगठन गद्दारी की राह पर थे, बढती प्रतिक्रांति के खिलाफ, खासकर रुस में, कम्युनिस्ट परिदृश्य की रक्षा की पूर्वशर्त थी इन परिदृश्यों के प्रति वफादारी को उन संगठनों के प्रति भावात्मक, निजी तथा राजनीतिक वफादारी के ऊपर रखना। वास्तव में, यह रुसी वाम की महान उपलब्धि थी कि ज्यों ही उन निकायों में यह काम असंभव हो गया, उसने पार्टी के तथा सोवियत राज्य के खिलाफ कम्युनिस्ट गतिविधि जारी रखने की दबंग बचनवद्वता दिखाई। वाम के लिए पहला स्थान था कम्युनिस्ट पोजीशनों का। क्रांति के 'नायकों' द्वारा कम्युनिस्ट कार्यक्रम का साथ छोड देने पर उन नायकों को नंगा करना जरुरी थी। हैरानी की बात नहीं कि रुसी वामपंथी कम्युनिस्ट सापेक्षतया अज्ञात व्यक्ति थे, मुख्यतः मज़दूर, जो वीरोचित बरसों में बोल्शेविक नेतृत्व का हिस्सा नहीं थे। (मिय्यस्नीकोव लेफ्ट ओपोजी़शन का उपहास उडाते हुए उन्हें "प्रसिद्व व्यक्तियों का विपक्ष" करार देता था जो स्तालिनवादी गुट का विरोध मात्र नौकरशाही कारणों से करता था, देखें **ल ऊवरिये कम्युनिस्ट** न. 6, जनवरी 1930)। ये क्रांतिकारी मज़दूर सर्वहारा को दरपेश हालात उन उच्चपदासीन बोल्शेविक पदाधिकारियों से कहीं आसानी से समझ सकते थे जिनका वर्ग से नाता टूट चुका था और जो क्रांति की समस्याओं को केवल प्राशासनक संदर्भ में ही समझ सकते थे। इसके साथ ही वामपंथ के सदस्यों का अज्ञात उद्भव बहुधा उन ग्रुपों की कमज़ोरी में भी एक कारक था। उनके विश्लेषण बहुधा कोरी वर्ग भावना पर आधारित रहते थे न कि गहन सैद्वान्तिक गठन पर। रुसी मज़दूर आंदोलन की कमज़ोरियाँ, जिनका जिक्र हमने पहले भी किया है, और बाहरी कम्युनिस्ट गुटों से रुसी वाम का अलगाव, मिलकर इन दोनों तत्वों ने रुस में वामपंथी साम्यवाद के सैद्वान्तिक विकास की गंभीर सीमाएँ बांध दीं।

'आधिकारक' निकायों से संबन्ध तोडने और उनके खिलाफ वर्ग के संघर्ष से तादतम्य स्थापित करने की वाम की क्षमता के बावजूद, रुस में वर्ग की गहन पराजय ने वामपंथी गुटों के समक्ष अनेक पारदर्शी तथा अन्तरविरोधी समस्याएँ खडी कीं। रुस में सोवियतें, कारखाना समितियें तथा वर्ग के अन्य जनसंगठन चूँकि मर चुके थे और स्वयं राज्य चूँकि पूँजी का औजार बन गया था, 1921 के बाद अपने तीव्र पतन के बावजूद बोल्शेविक पार्टी सर्वहारा जीवन का केन्द्र बनी रही। वर्ग की अरुचि तथा उदासीनता के चलते, राजनीतिक संवाद तथा द्वन्द्व पूर्णतया पार्टी तक सीमित थे। यह सही है कि वर्ग की स्वयं उदासीनता तथा निष्क्रियता ने पार्टी के अन्दर बीस के दशक की अधिकतर विचारधारक बहसों को आरंभ से ही बंजर बना दिया। पर क्रांतिकारी इस तथ्य से

भी मुँह नहीं मोड सकते थे कि मज़दूर वर्ग की राजनीतिक विरिक्तता के मरुस्थल के मध्य, पार्टी राजनीतिक सोच का नखलिस्तान थी।

पर इस स्थिति ने वामपंथी धडों को एक भयंकर दुविधा में डाल दिया। एक तरफ वर्ग की उदासीनता ने, राज्य के दमनात्मक कदमों के साथ, 'आम' सर्वहारा में सरगर्मी को अति कठिन बना दिया। दूसरी तरफ, 1921 से गुटों पर पाबन्दी ने तथा पार्टी के अन्दर उत्तरोतर दमघुटन के माहौल ने पार्टी की ओर काम को बुरी तरह सीमित कर दिया। किसी भी सच्चे विपक्षी ग्रुप के लिए पार्टी के अन्दर कानूनी काम करना असंभव था। 1923 में **प्लेटफार्म आफ द फार्टी स्किस** (लेफ्ट ओपोज़ीशन की स्थापना रचना) की सापेक्षतया नर्म आलोचना में भी यह शिकायत उपलब्ध है कि "पार्टी के अन्दर स्वतन्त्र बहस लुप्त हो गई है; पार्टी के सामाजिक मन का दमघुँट गया है"। लेफ्ट ओपोज़ीशन के वाम में स्थित रुझानों के लिए हालात और भी बदतर थे। तो भी उन सब ने कारखानों के 'जनसमूहों' में प्रचार कार्य के साथ स्थानीय पार्टी सेलों में गुप्त कार्य करना जारी रखा। 1923 के अपने घोषणापत्र में **वर्कर्ज़ ग्रुप** "आरसीपी के कार्यक्रम तथा विधान के आधार पर रुसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का वर्कर्ज़ ग्रुप गठित करने की जरुरत की बात करता है तकि स्वयं पार्टी के अगुआ ग्रुप पर निर्णायक असर डाला जा सके।" **वर्कर्ज ट्रुथ** ग्रुप की 1922 की अपील विचार व्यक्त करती है कि "मिलों तथा कारखानों में, ट्रेडयूनियन संगठनों, मज़दूर शिक्षाविद्वों, सोवियत तथा पार्टी स्कूलों में, कम्युनिस्ट यूथ यूनियन तथा पार्टी संगठनों में, हर जगह वर्कर्ज ट्रुथ से एकजुटता में प्रचार सर्कल बनाना जरुरी है।" (5) उद्देश्य की ऐसी घोषणएँ रुसी सर्वहारा में प्रतिध्वनि पाने के इन ग्रुपों के प्रयासों को दरपेश भारी मुशकिलों को और अव्यवस्था तथा भ्रम के दौर में स्पष्ट संगठनात्मक समाधान खोज पाने की असंभवता को साबित करती हैं।

अन्तत हमें याद रखना होगा कि ये ग्रुप पार्टी-राज्य के हाथों भयंकर उत्पीडन तथा दमन का शिकार थे। रुस चूँकि 'सोवियतों की भूमि' व सर्वहारा क्रांति का देश था, ठीक इस लिए वहां प्रतिक्रांति का संपूर्ण, निष्ठुर तथा कठोर होना लाजिमी था ताकि क्रांतिकारी रही हर चीज़ की अन्तिम निशानी को दफनाया जा सके। स्तालिनवादी गुट की जीत से पहले भी वामपंथी ग्रुप जीपीयू की तहकीकात, गिरफ्तारी, जेलबन्दी तथा वहिष्कार का शिकार थे। धन तथा उपकरणों से बंचित, गुप्तचर पुलिस से लगातार बचते हुए उनके लिए न्यूनतम राजनीतिक प्रचार करना भी कठिन था। 1924 के बाद प्रतिक्रांति के सुदृडीकरण ने हालात और भी मुशकिल बना दिये। तो भी प्रतिक्रया के इन अन्धेरे बरसों में भी वामपंथी कम्युनिस्टों ने क्रांति के लिए संघर्ष जारी रखा। बहुत देर बाद, 1929 तक **वर्कर्ज़ ग्रुप** मास्को में एक गैरकानूनी पेपर, **द वर्कर्ज़ रोड टू पावर**, निकालता था। स्तालिनवादी यातनाशिवरों में भी उनकी राजनीतिक आवाज़ बन्द नहीं की जा सकी थी। एक सर्वहारा इंकलाब आसानी से नहीं मरता। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में संघर्षरत्त क्रांतिकारी इस सरल तथ्य से हिम्मत तथा दृडता पाते थे कि वे मज़दूर वर्ग के इंकलाब की संतान थे। अईये अधिक बारीकी से उन मुख्य ग्रुपों का परीक्षण करें जिन्होंने अपने खिलाफ डटे तमाम अवरोधों के बावजूद कम्युनिस्ट क्रांति के परचम को फहराये रखा।

1. वर्कर्ज़ ट्रुथ

वर्कर्ज़ ट्रुथ की रचना 1921 के पतझड में की गई थी। यह मुख्यतया बुद्दिजीवियों द्वारा गठित तथा 'प्रोलेटकल्ट' के सांस्कृतिक हलकों से उभरा लगता है। उनका मुख्य संचालक था बोग्दानोव - पार्टी का एक सिद्वान्तकार जो 1900 के दशक में लेनिन से दर्शन के सवालों पर टकराया था और जो तात्कालीन बोल्शेविज्म के 'वाम' रुझानों में मशहूर था। 1922 की अपनी **अपील** में, वर्कर्ज़ ट्रुथ ने नेप को, "सामान्य पूँजीवादी संबन्ध के पुर्नजन्म", को रुसी सर्वहारा की हार चिन्हित किया :

> "रुस का मज़दूर वर्ग छिन्नभिन्न है; मज़दूरों के दिमागों पर भ्रम छाया हुआ है। क्या वे 'सर्वहारा की तानाशाही' के एक देश में हैं, जैसे कम्युनिस्ट पार्टी मौखिक तथा प्रेस से अनथक दोहराती है? अथवा क्या वे निरंकुश शासन तथा शोषण वाले एक देश में हैं, जैसे कि जीवन हर कदम पर उन्हें सिखाता है। मज़दूर वर्ग गरीबी का जीवन जी रहा है जबकि नव बुर्जूआज़ी (मसलन् जिम्मवार कार्यकर्ता, प्लांट निदेशक, निगमों के संचालक, कार्यकारी परिषदों के चेयरमैन आदि) और नेपमेन विलासिता में जी रहे हैं। वे हमे सदैव के पूँजीपतिवर्ग के जीवन की तसवीर याद दिलाते हैं।"

वर्कर्ज़ ट्रुथ के लिए सोवियत राज्य "पूँजी के राष्ट्रव्यापी हितों का प्रतिनिधि.... संगठनकारी बुद्दिजीवि वर्ग के हाथ में राजनीतिक प्रशासन तथा आर्थिक नियन्त्रण का मात्र निदेशक औज़र बन गया था।" इसके साथ ही मज़दूर वर्ग से उसके रक्षात्मक निकाय, यूनियनें तथा उसकी वर्ग पार्टी छीन ली गई थी। 1923 की बाहरवीं पार्टी कांग्रेस को जारी एक घोषणापत्र में वर्कर्ज़ ट्रुथ ने यूनियनों पर :

> "स्वयं को मज़दूरों के आर्थिक हितों की रक्षा के संगठनों से उत्पादन के, सर्वोपरि और सर्वप्रथम राजकीय पूँजी के, हितों की रक्षा के संगठनों में बदलने" का आरोप लगाया। (ई. एच. कार, **द इंटेरेग्नम** में उदृत)

जहां तक पार्टी का संबन्ध है, **अपील** दावा करती है कि :

> "रुसी कम्युनिस्ट पार्टी संगठनकारी बुद्दिजीवी वर्ग की पार्टी बन गई है। रुसी कम्युनिस्ट पार्टी तथा मज़दूर वर्ग के बीच की खाई गहनतर होती जा रही है.... "

लिहाज़ा उन्होंने सच्ची "रुसी सर्वहारा पार्टी" की रचना के लिए काम करने की अपनी इच्छा का इज़ाहर किया। यद्यपि वे मानते हैं कि उनका कार्य "लंबा तथा सतत, और सर्वोपरि विचारधारक होगा।"

वर्कर्ज़ ट्रुथ के सीमित लक्ष्य वर्ग द्वारा झेली हार तथा ऐसे दौर द्वारा क्रांतिकारी गतिविधि पर थोपी सीमांओं की कुछ समझ दरसाते लगते हैं। पर उनका समूचा ढांचा **ऐतिहासिक** दौर तथा विश्वव्यापी पैमाने पर वर्ग के रुबरु कार्यभारों संबंधी एक अजब अस्पष्टता द्वारा विकृित है। संभवता वे स्वयं को बोग्दानोव के इस विचार पर आधारित करते हैं कि जब तक सर्वहार एक सक्षम, संगठनकारी वर्ग में परिपक्व नहीं हो जाता, समाजवादी इंकलाब अपरिपक्क होगा। उनका तात्पर्य है कि रुस में क्रांति का कार्य **पूँजीवादी** विकास की एक मंजिल का मार्ग प्रशस्त करना है :

> "सफल इंकलाब तथा ग्रहयुद्व के बाद रुस के समक्ष प्रगतिशील पूँजीवाद के एक देश में तीव्र रुपांतरण के व्यापक परिदृश्य खुल गए। अक्तूबर क्रांति की निस्संदेह महानता इसी में निहित है।" (**अपील**)

यह परिदृश्य **वर्कर्ज़ ट्रुथ** को रुस के लिए एक अजब विदेश नीति की वकालत की ओर ले गया। उन्होंने 'प्रतिक्रियावादी' फ्रांस के खिलाफ अमेरिका तथा जर्मनी के प्रगतिशील पूँजीवाद संग दोस्ती का आवाहन किया। ग्रुप का रुस के बाहर वामपंथी कम्युनिस्ट ग्रुपों से कोई संपर्क रहा नहीं लगता।

ऐसी पोज़ीशनों के चलते ही मिय्यस्नीकोव के वर्कर्ज़ ग्रुप ने घोषण की कि "उसका तथाकथित वर्कर्ज़ ट्रुथ से कोई वास्ता नहीं जो अक्तूबर 1917 की क्रांति के समूचे कम्युनिस्ट तत्व को मिटाने का प्रयास करता है और इस लिए पूरी तरह मेनशेविस्ट है" (**वर्कर्ज़ ड्रेडनाट**, 31 मई 1924)। इसके साथ ही 1923 के अपने **घोषणापत्र** में वर्कर्ज़ ग्रुप स्वीकार करता है कि वर्कर्ज़ ट्रुथ, डेमोक्रेटिक सेन्ट्रालिज्म तथा वर्कर्ज़ ओपोज़ीशन जैसे ग्रुपों में अनेक सच्चे सर्वहारा तत्व हैं। वह वर्कर्ज़ ग्रुप के **घोषणापत्र** के आधार पर एकजुट होने के लिए उनका आवाहन करता है।

रुसी क्रांति के वक्त रुस में बुर्जूआ क्रांति की अनिवार्यता की बात करने वालों को मेनशेविकों के साथ जोड़ा जाता था। पर बाद के तजुरुबे की रोशनी में हम वर्कर्ज़ ट्रुथ की पोजीशनों की तुलना 1930 के दशक की जर्मन तथा डच वाम की पोजीशनों से करना बेहतर समझते है। वर्कर्ज़ ट्रुथ के समान उन्होंने भी राज्य पूँजीवाद के चरित्र में गहन अर्न्तदृष्टि के साथ आरंभ किया। पर अपने विशलेषण को उन्होंने इस निष्कर्ष से

कमज़ोर कर दिया कि रुसी इंकलाब आरंभ से ही साम्यवाद के लिए अपरिपक्व एक देश में बुद्दिजीवियों द्वारा राज्य पूँजीवाद के गठन को अंजाम देने का मामला था। दूसरे शब्दों में वर्कर्ज़ टुथ द्वारा प्रस्तुत विशलेषण क्रांति की पराजय द्वारा हतोत्साहित एक क्रांतिकारी रुझान का है जो क्रांति के आरंभिक सर्वहारा चरित्र पर प्रश्नचिन्ह लगाने की ओर चला गया है। प्रतिक्रांति के विश्लेषण के लिए एक स्पष्ट ढांचे की गैरहाज़िरी में, ऐसे भटकाव अनिवार्य हैं। खासकर, उन विपरीत हालातों में जिनमें रुसी क्रांतिकारियों ने स्वयं को 1921 के बाद पाया।

पर कुछ निराशावाद तथा बौद्दिकतावाद के बावजूद, वर्कर्ज़ टुथ 1923 की गर्मियों में सारे रुस में फैली चाणचक्क हडतालों में हस्तक्षेप करने से नहीं झिझका। उन्होंने आम वर्ग आंदोलन में राजनीतिक नारे उठाने की कोशिश की। इस हस्तक्षेप के कारण जीपीयू पूरी शकित से ग्रुप पर टूट पडा और आगामी दमन में बहुत जल्दी ही उसकी कमर टूट गई।

2. वर्कर्ज़ ग्रुप तथा कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ पार्टी

हमने देखा कि वर्कर्ज़ ओपोजीशन तथा वर्कर्ज़ टुथ जैसे ग्रुपों की अनेक कमज़ोरियों की जड़ें अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य की उनकी कमी में खोजी जा सकती हैं। इसी के उपप्रमेय के तौर पर हम कह सकते हैं कि रुस के सर्वाधिक अहम वामपंथी कम्युनिस्ट ग्रुप वही थे जो क्रांति के **अन्तरराष्ट्रीय** चरित्र पर तथा समूची दुनिया के क्रांतिकारियों के एकजुट होने की जरुरत पर बल देते थे। रुस में यह स्थिति उन तत्वों की थी जो जर्मन केऐपीडी तथा उसके बिरादराना संगठनों के निकट पडते थे।

3 जून तथा 17 जून 1922 को **वर्कर्ज़ ड्रेडनाट** ने हाल ही में गठित एक ग्रुप की स्टेटमेण्ट प्रकाशित की जो स्वयं को "ग्रुप आफ रेवोल्यूशनरी लेफ्ट कम्युनिस्ट (कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ पार्टी) आफ रशिया" कहता था। उन्होंने स्वयं को एक ऐसे ग्रुप के रुप में घोषित किया जो "सामाजिक जनवादी रुसी कम्युनिस्ट पार्टी, जिसने बिजनेस को अपनी मुख्य चिन्ता बना लिया था" को त्याग चुका था (**वर्कर्ज़ ड्रेडनाट**, 3 जून)। उन्होंने "रुसी कम्युनिस्ट पार्टी में शेष हर क्रांतिकारी रुझान की हिमायत करने" तथा "एक खरी क्रांतिकारी दिशा की ओर इशारा करते वर्कर्ज़ ओपोजीशन के तमाम प्रस्तावों का स्वागत तथा समर्थन करने"ञका वादा किया। पर उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि "रुसी कम्युनिस्ट पार्टी को भीतर से सुधारने की कोई संभावना नहीं। वर्कर्ज़ ओपोजीशन तो किसी भी हाल में इसमें समर्थ नहीं" (**वर्कर्ज़ ड्रेडनाट**, 17 जून)। ग्रुप ने रुस के अन्दर तथा विदेश में पूँजी संग समझौता करने की बोल्शेविकों तथा कोमिन्टरन की कोशिशों को नंगा किया और खासकर कोमिन्टरन की संयुक्त मोरचे की नीति को "पूँजीवादी विश्व इकोनमी के पुर्ननिर्माण" के एक साधन के रुप में प्रताडित किया (**वर्कर्ज़ ड्रेडनाट**, 17 जून)। चूँकि बोल्शेविक तथा कोमिन्टरन जिस अवसरवादी रास्ते पर थे उसका अन्त पूँजीवाद में उनका संयोजन ही हो सकता था। ग्रुप ने दावा किया कि अब जर्मन केऐपीडी, डच केऐपी तथा कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ इंटरनेशनल की अन्य पारटियों से जुडी कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ पार्टी आफ रशिया के लिए काम करने का वक्त आ गया है। (6)

इस ग्रुप का बाद का विकास अस्पष्ट है। पर यह मिय्यस्नीकोव के अधिक मशहूर **वर्कर्ज़ ग्रुप** (कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ ग्रुप के रुप में भी ज्ञात) से घनिष्ठता से जुडा लगता है। असल में लगता है 1922 की रुसी 'सीडब्ल्यूपी' उसकी पूर्ववर्ती थी। 1 दिसंबर 1923 को **ड्रेडनाट** ने घोषणा की कि रुस में मिय्यस्नीकोव, कुजनेतसोव तथा वर्कर्ज़ ग्रुप के अन्य जुझारुओं की गिरफ्तारी के खिलाफ अपने विरोधपत्र के साथ, 'सीडब्ल्यूपी' द्वारा उसे वर्कर्ज़ ग्रुप का **घोषणपत्र** भेजा गया है। 1924 में केऐपीडी ने **घोषणपत्र** जर्मन में प्रकाशित किया और वर्कर्ज़ ग्रुप का ज़िक्र "चतुर्थ इंटरनेशनल के रुसी सेक्शन" के रुप में किया। जो भी हो, अब से केऐपीडी द्वारा प्रस्तुत वामपंथी साम्यवाद का रुस में बचाव मिय्सस्नीकोव ग्रुप ने किया।

युराल का एक मज़दूर, गेबरियल मिय्सस्नीकोव बोल्शेविक पार्टी में 1921 में मशहूर हुआ जब महत्वपूर्ण दसवीं कांग्रेस के फौरन बाद उसने "राजतन्त्रवादियों से लेकर आराजकतावादियों तक को प्रेस की आज़दी" का आवाहन किया (कार, **द इंटेरेग्नम** में उदृत)। इस आंदलोन से विमुख करने की लेनिन की कोशिशों के बावजूद उसने पीछे हटने से इनकार कर दिया। और 1922 के आरंभ में उसे पार्टी से निकाल दिया गया। 1923 के फरवरी-मार्च में उसने अन्य जुझारुओं से मिलकर रुसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के वर्कर्ज़ ग्रुप की स्थापना की। और उन्होंने अपना **घोषणापत्र** प्रकाशित किया जिसे आरसीपी की बाहरवीं कांग्रेस में वितरित किया गया। ग्रुप ने पार्टी तथा गैरपार्टी मज़दूरों में गैरकानूनी काम आरंभ किया। लगता है 1923 की गरमियों के हडताल आंदोलन में उसकी महत्वपूर्ण उपस्थिति थी। उसने जनप्रर्दशनों का आवाहन किया और एक मुख्यतया सुरक्षात्मक वर्ग आंदोलन को राजनीतिक रुप देने की कोशिश की। इन हडतालों में उनकी गतिविधियां जीपीयू को यकीन दिलाने के लिए काफी थीं कि वे एक असल खतरा हैं। उसके अग्रणी जुझारुओं की गिरफ्तारियों की एक लहर से ग्रुप को भारी चोट लगी। पर जैसे हमने देखा उन्होंने अपनी भूमिगत गतिविधियां 1930 के दशक तक जारी रखीं (7), यद्यपि कमतर स्तर पर।

वर्कर्ज़ ग्रुप का **घोषणापत्र** वर्कर्ज़ टुथ की **अपील** पर एक भारी प्रगति है। पर यह भी उस दौर में, खासकर रुस में, कम्युनिस्ट वाम की झिझकों को तथा अर्ध-विकसित विचारों को दिखाता है। **घोषणापत्र** रुसी मज़दूरों द्वारा भोगे जा रहे दुखद वस्तुगत्त हालातों की तथा नेप द्वारा लायी असमानतांओं की परिचित अलोचना करता है। और पूछता है "क्या यह वास्तव में संभव है कि नेप (नई आर्थिक नीति) सर्वहारा के लिए नई एक्सप्लायटेशन -शोषण- पालिसी में तबदील हो रही है?" वह पार्टी के अन्दर तथा बाहर मतभेद दबाने पर तथा "सत्ता की तथा देश के आर्थिक संसाधनों की बागडोर संभाले एक अल्पमत्त, जिसका अन्त एक नौकरशाही जाति में होगा" में पार्टी के रुपान्तरणा के खतरे पर हमला करता है। वह तर्क करता है कि यूनियनें, सोवियतें तथा कारखाना समितियें सर्वहारा निकायों के रुप में अपना अर्थ खो चुकी हैं और वर्ग का न तो शासन के उत्पादन ढांचे पर और न ही राजनीतिक ढांचे पर नियन्त्रण है। वह इन निकायों के पुनरुजीवन का, सोवियत व्यवस्था के अमूलचूल सुधार का आवाहन करता है जो वर्ग को आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन पर अपना प्रभुत्व पेश करने के समर्थ बनाएगा।

यह तत्काल हमें 1920वें के पहले बरसों में रुसी वाम को दरपेश मुख्य समस्या के समक्ष ले आता है। वे सोवियत शासन के प्रति क्या रवैया अपनाएँ? क्या शासन का अभी भी कोई सर्वहारा चरित्र था अथवा क्या क्रांतिकारियों को इसके अमूलचूल विनाश की मांग करनी चाहिए? कठिनाई यह थी कि उन बरसों में यह तय करने के लिए न तो तजुरुबा था न कसौटी कि शासन पूर्णतया प्रतिक्रांतिकारी बन गया था। यह दुविधा व्यवस्था के प्रति वर्कर्ज़ ग्रुप के अस्पष्ट रवैये में झलकती है। यूँ वह नेप की असमानतांओं तथा उसके "बुर्जूआ अद्यपतन" के खतरे पर हमला करता है तथा इसके साथ ही दावा करता है कि "नेप हमारे देश में उत्पादक शक्तियों की स्थिति का फल है। उसे सर्वहारा द्वारा अक्तूबर में जीती पोजीशनों को पुख्ता करने के लिए इस्तेमाल करना जरुरी है" (8)। इसी तरह **घोषणापत्र** नेप को 'सुधारने' के लिए कई सुझाव देता है - वर्कर्ज़ कंट्रोल, विदेशी पूँजी पर गैरनिर्भरता। ऐसे ही, पार्टी के पतन की आलोचना करते हुए, वर्कर्ज़ ग्रुप ने, जैसे हमने देखा, पार्टी सदस्यों में काम का तथा पार्टी नेतृत्व पर दवाब डालने का रास्ता चुना। और यद्यपि अन्यत्र ग्रुप सवाल उठाता है कि सर्वहारा संभवतया "अभिजात वर्ग को पलटने के लिए फिर संघर्ष - संभवता खूनी - के पुनरआरंभ के लिए मज़बूर हो जाए" (कार, **इंटेरेग्नम**), **घोषणापत्र** का मुख्य ज़ोर सोवियत राज्य तथा उसके संस्थानों के पुनरुजीवन पर है न कि उनके हिंसक विनाशा पर। 'आलोचनात्मक समर्थन' की पोज़ीशन इस तथ्य से भी रेखांकित होती है कि 1923 के कर्ज़न अल्टीमेटम द्वारा पेश युद्व के खतरे के समक्ष, वर्कर्ज़ ग्रुप के सदस्यों द्वारा "सोवियत सत्ता को पल्टने की तमाम कोशिशों" का विरोध करने की शपत उठाई गई (कार, **वही**)। सवाल यह नहीं कि 1923 में रुसी शासन का पक्ष लेना 'ठीक'

था या नहीं। वर्कर्ज़ ग्रुप द्वारा तब अपनाई पोज़ीशनें उसे प्रतिक्रांतिकारी नहीं बनाती चूँकि वर्ग के तजुरुबे ने रुसी सवाल को अभी निश्चित रुप से तय नहीं किया था। रुसी शासन के चरित्र संबंधी उसकी अस्पष्टताएँ, उलझन तथा बिखराव के उन बरसों में सर्वोपरि इस सवाल द्वारा क्रांतिकारियों को पेश भारी मुश्किलों का सबूत हैं।

पर वर्कर्ज़ ग्रुप का सर्वाधिक अहम पहलू रुसी शासन का उसका विश्लेषण नहीं बल्कि उसका अटल अन्तरराष्ट्रीयतावादी परिप्रेक्ष्य था। लाक्षणिक रुप से, 1923 का **घोषणापत्र** पूँजीवाद के विश्वसंकट के प्रभावशाली वर्णन से शुरु होता है तथा समूची मानवजाति को दरपेश विकल्प पेश करता है : समाजवाद व बर्बरता। इस संकट के रुबरु क्रांतिकारी चेतना तक पहुँचने में मज़दूर वर्ग की देरी की व्यख्या करते हुए, **घोषणापत्र** सामाजिक जनवाद के सर्वभौम प्रतिक्रांतिकारी चरित्र पर शानदार अक्रमण करता है:

> "सभी देशों में समाजवादी सर्वहारा क्रांति से सदा पूँजीपति वर्ग के एकमात्र रक्षक हैं, चूँकि मज़दूर जनसमूह उत्पीडक वर्गों से आती हर चीज़ को शक की नज़र से देखने के आदी हैं। पर जब वही चीज़ें उनके हित में बतायी जाती हैं तथा समाजवादी मुहावरों से सुशोभित की जाती हैं, तब इन मुहावरों द्वारा गुमराह मज़दूर गद्दारों पर विश्वास करता है और अपनी शक्ति निराशाजनक संघर्ष पर खर्च करता है। पूँजीपति वर्ग का उनसे बेहतर न तो कोई वकील है न होगा।"

इस समझ के चलते वर्कर्ज़ ग्रुप ने कोमिन्टरन की संयुक्त मोरचे तथा मज़दूर सरकार की रणनीति की सर्वहारा को उसके वर्ग शत्रुओं संग बांधने के रास्तों के रुप में कटु निन्दाएँ की। यद्यपि वह यूनियनों के प्रतिक्रियावादी रोल संबन्धी कम जागरुक था, वर्कर्ज़ ग्रुप केऐपीडी की इस समझ से सहमत था कि पूँजीवादी पतनशीलता के दौर में तमाम पुराने सुधारवादी दांवपेंचों को त्यागना जरुरी है :

> "वह वक्त अब अनपल्ट रुप से गुज़र गया है जब हडतालों तथा संसद में दाखिले द्वारा मज़दूर वर्ग की भौतिक तथा कानूनी स्थिति को सुधारा जा सकता था। इसे खुले आम कहना जरुरी है। अति फौरी हितों के लिए संघर्ष सत्ता के लिए संघर्ष है। हमें अपने प्रचार द्वारा स्पष्ट करना होगा कि यद्यपि विभिन्न मामलों में हमने हडतालों का आवाहन किया है, वास्तव मे वे मज़दूरों के हालात नहीं सुधार सकतीं। पर आप मज़दूरों ने अभी पुराने सुधारवादी भ्रमों पर पार नहीं पाया है और एक लडाई में लगे हुए हो जो तुमें सिरफ थकाती है। तुम्हारी हडतालों में हम तुम्हारे साथ हैं, पर हम सदा यह ज़ोर देते हैं कि ये आंदोलन तुम्हें गुलामी, शोषण तथा निराशाजनक गरीबी से मुक्त नहीं करेंगें। विजय का एकमात्र रास्ता है तुम्हारे अपने सख्त हाथों द्वारा सत्ताग्रहण।"

पार्टी का रोल है मज़दूर वर्ग को सब जगह पूँजीपतिवर्ग के खिलाफ ग्रहयुद्व के लिए तैयार करना।

नए ऐतिहासिक दौर की वर्कर्ज़ ग्रुप की समझ "पूँजीवाद के मरण संकट" के केऐपीडी के विचार की सारी कमज़ोरियां तथा मज़बूतियां समेटे है। दोनों के लिए, पूँजीवाद के एक बार अपने अन्तिम संकट में प्रवेश के साथ, सर्वहारा क्रांति के हालात सदा विद्यामान रहते हैं : लिहाजा पार्टी की भूमिका है वर्ग को एक क्रांतिकारी विस्फोट के लिए चिंगारी दिखाना। **धोषणापत्र** में कहीं भी हाल में घटित विश्वक्रांति के **उतार** की समझ नहीं है जो क्रांतिकारियों से उपलब्ध नए परिप्रेक्ष्य के घ्यानपूर्वक विश्लेषण की मांग करती। वर्कर्ज़ ग्रुप के लिए विश्वक्रांति 1923 में भी उतनी ही ऐजण्डे पर थी जितनी 1917 में। इस लिए वह 1922 में चौथे इंटरनेशनल के गठन की संभावना के केऐपीडी के भ्रम में शारीक था। 1928-1931 तक भी मिय्यस्नीकोव अभी रुस के लिए कम्युनिस्ट मज़दूर पार्टी गठित करने की कोशिश में था (9)। ऐसे लगता है, केवल इतालवी वाम ही उतार के दौर में, जब पार्टी का अस्तित्व संभव नहीं, कम्युनिस्ट ग्रुपों के रोल का मूल्यांकन विकसित कर पाया था। केऐपीडी, वर्कर्ज़ ड्रेडनाट, मिय्यस्नीकोव तथा अन्य के लिए पार्टी कभी भी अस्तित्व में रह सकती थी। उतावली के इस दृष्टिकोण का सामान्य था राजनीतिक बिघटन का एक अटल रुझान : दमन के असर को हिसाब में ले भी लें, तो अपने रुसी तथा अंग्रेज़ समर्थकों समान, जर्मन केऐपीडी ने प्रतिक्रांति के दौर में अपना राजनीतिक अस्तित्व बनाए रखना असंभव पाया।

वर्कर्ज़ ग्रुप द्वारा पेश क्रांतिकारियों के अन्तरराष्ट्रीय एकीकरण के ठोस प्रस्ताव क्रांतिकारी ताकतों की अधिकतम संभव एकता की उनकी चिन्ता दिखाते हैं। पर वे वही दुबिधा भी दिखाते है, जो पतित होते 'आधिकारिक' कम्युनिस्ट संस्थानों के प्रति कम्युनिस्ट वाम के रवैये में हम अन्यत्र भी नोट कर चुके हैं। मसलन वह सामाजिक जनवादियों संग संयुक्त मोरचे का विरोध करता है, पर वर्कर्ज़ ग्रुप का **धोषणापत्र** तमाम सच्ची क्रांतिकारी ताकतों के एक प्रकार के संयुक्त मोरचे की मांग करता है जिनमें वह तीसरे इंटरनेशनल की पारटियों के साथ साथ कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ पारटियों को भी शामिल करता है। एक अन्य अवसर पर, वर्कर्ज़ ग्रुप द्वारा मास्लोव के गिर्द केपीडी वाम को असफल 'फारेन ब्यूरो' में खींचने के लक्ष्य से मास्लोव से सौदेवाज़ी की भी खबर है। **धोषणापत्र** पर अपनी टिप्पणी में, केऐपीडी स्वयं द्वारा वर्कर्ज़ ग्रुप का भ्रम करार इस सोच की सख्त आलोचना करती है "कि आप तीसरे इंटरनेशनल में क्रांतिकारी जान डाल सकते हैं .... तीसरा इंटरनेशनल अब सर्वहारा वर्ग संघर्ष का औज़ार नहीं रहा। यही वज़ह है कि कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ पारटियों ने कम्युनिस्ट वर्कर्ज़ इंटरनेशनल की स्थापना की है।" ताहम रुसी शासन विषयक तथा केमिन्टरन के चरित्र विषयक वर्कर्ज़ ग्रुप की दुविधा का अन्त व्यवहारिक तजुरुबे की रोशनी में होने वाला था। रुस में स्तालिनवाद की जीत उसे नौकरशाही तथा पार्टी के खिलाफ अधिक दृड रुख अपनाने की ओर ले गई। दूसरी ओर 1923 के बाद कोमिन्टरन के तीव्र सड़न ने यह अवश्यंभावी बना दिया कि वर्कर्ज़ ग्रुप के भावी अन्तरराष्ट्रीय 'पार्टनर' विभिन्न देशों के सच्चे वामपंथी कम्युनिस्ट होंगे। सर्वप्रथम और सर्वोपरि, क्रांतिकरी लहर से जीवित बचे तत्वों से इस "इंटरनेशनल संपर्क" के चलते ही मिय्यस्नीकोव जैसे क्रांतिकरी उलझनों, पस्तहिम्मती तथा फरेब के उस सागर में, जिसमें रुसी मज़दूर आंदोलन डबू हुआ था, स्पष्टता का सापेक्षतया उँचा स्तर हासिल कर पाये।

3. लेफ्ट ओपोजीशन के 'समझौताविरोधी'

यहां हम लेफ्ट ओपोजीशन के समूचे सवाल में नहीं जा सकते। पार्टी जनवाद, चीनी क्रांति तथा 'एक देश में समाजवाद के सिद्वान्त' के खिलाफ अन्तरराष्ट्रीयतावाद का उनका भ्रमित बचाव दिखाता है कि लेफ्ट ओपोजीशन एक सर्वहारा रुझान था। वास्तव में वे बोल्शेविक पार्टी तथा कोमिन्टरन में प्रतिरोध की आखिरी चिंगारी थे। पर बढती प्रतिक्रांति की लेफ्ट ओपोजीशन की आलोचना **अपर्याप्तत थी।** यह एक समूह के रुप में उनका कम्युनिस्ट वाम की परम्परांओ का हिस्सा बनना असंभव बनाती है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर, कोमिन्टरन की पहली चार कांग्रेसों की थीसिसों पर प्रश्नचिन्ह लगाने के उनके इनकार ने, उसकी गलतियों के दयनीय दोहराव से उन्हें रोका। रुस में लेफ्ट ओपोजीशन पार्टी-राज्य ढांचे से आवश्यक संबन्ध-विच्छेद में असफल रहा। इस संबन्ध-विच्छेद ने उसे सच्चे वामपंथी कम्युनिस्ट ग्रुपों के समक्ष शासन के खिलाफ सर्वहारा संघर्ष के धरातल पर मज़बूती से रख दिया होता। उसके शत्रुओं ने यद्यपि त्रात्सकी को वर्कर्ज़ ट्रुथ जैसे गैरकानूनी गुटों से संबन्ध रखने के आरोप में फंसाने की कोशिश की, स्वयं त्रात्सकी ने अपने आप को इन ग्रुपों से पूरी तरह अलग किए रखा। उसने वर्कर्ज़ ट्रुथ को मज़दूर असत्य करार दिया (कार, **द इंटेरेग्नम**) और 'अतिवाम' के दमन में हिस्सा लिया। मसलन, उसने 1922 में वर्कर्ज़ ओपोजीशन की गतिविधियों की पडताल के कमिशन की सहायता की। त्रात्सकी ने केवल इतना ही स्वीकार किया कि ये ग्रुप सोवियत निज़ाम के एक वास्तव पतन की निशानी थे।

पर अपने आरंभिक बरसों में लेफ्ट ओपोजीशन मात्र त्रात्सकी नहीं था। **छयालीस का प्लेटफार्म** के बहुत से हस्ताक्षरकर्ता, जैसे ओस्त्रिसकी, स्मिरनोव, पियेतकोव तथा अन्य भूतपूर्व वामपंथी कम्युनिस्ट तथा जनतान्त्रिक केन्द्रीयतावादी थे।

जैसे मिय्यस्नीकोव ने कहा :

"त्रात्सकीवादी ओपोज़ीशन में मात्र महान व्यक्ति ही नहीं। उसमे बहुत मज़दूर भी हैं। और वे नेताओं के पीछे चलना नहीं चाहेंगे। कुछ झिझकों के बाद वे वर्कर्ज़ ग्रुप की पांतों में शामिल हो जाएँगे।" (ल ऊवरिए कम्युनिस्ट न. 6, जनवरी 1930)

ठीक इस लिए कि वर्कर्ज़ ओपोजीशन एक सर्वहारा रुझान था, उसने स्वाभाविक रुप एक वामपंथ को जन्म दिया जो त्रात्सकी तथा उसके 'रुढिवादी' अनुचरों द्वारा विकसित स्तालिनवाद की कातर आलोचन से बहुत आगे चला गया। वीस के दशक के अन्त की ओर लेफ्ट ओपोजीशन में 'समझौताविरोधियों' के नाम से ख्यात एक रुझान विकसित हुआ। यह अधिकतर युवा मज़दूरों द्वारा गठित था जो स्तालिन गिरोह संग किसी समझौते पर पहुँचने के 'नर्मदली' त्रात्सकीवादियों के रुझान के विरोधी थे। एक रुझान जिसने 1928 के बाद गति पकडी जब स्तालिन लेफ्ट ओपोजीशन के औद्योगीकरण के कार्यक्रम को तेज़ी से लागू करता लगा। इस्साक डूच्शर लिखता है कि समझौताविरोधियों में :

"यह धारणा पहले ही स्वयंसिद्व बनती जा रही थी कि सोवियत यूनियन अब मज़दूर राज्य नहीं था; कि पार्टी ने क्रांति से गद्दारी कर ली थी; और कि उसे सुधारने की आशा व्यर्थ हाने के चलते, ओपोज़ीशन को स्वयं को एक नई पार्टी में गठित कर लेना चाहिए तथा एक नए इंकलाब का प्रचार तथा तैय्यारी करनी चाहिए। कुछ स्तालिन को कृषि पूँजीवाद का प्रवर्तक अथवा 'कुलक जनवाद' का अगुआ तक मानते थे। जबकि अन्य के लिए उसका शासन समाजवाद के निर्मम शत्रु राज्यपूँजीवाद के अधिपत्य का प्रतीक था।"(**द प्रफेट अनआर्मड**)

अपनी किताब **अ पे दू ग्रां मेंसोन** में अन्टन स्लीगा स्तालिन के श्रमशिविरों में लेफ्ट ओपोज़ीशन में हुई बहसों का आखों देखा वर्णन करता है। वह दिखाता है कि कुछ लेफ्ट ओपोज़ीशनिस्ट स्तालिनवादी व्यवस्था के समक्ष समर्पण के पक्षधर थे। अन्य उसे सुधारना चाहते थे। कुछ अन्य नौकरशाही को हटाने के लिए 'राजनीतिक क्रांति' (बाद में त्रात्सकी ने यही पोज़ीशन अपनाई) के हामी थे। परन्तु समझौताविरोधी या, जैसे वह उन्हे कहता, 'निषेधक' (वह स्वयं 'निषेधक' था) :

"...मानते थे कि न सिरफ राजनीतिक व्यवस्था बल्कि सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्थाएँ सर्वहारा की बाहरी तथा उसकी विरोधी थीं। इस लिए हम समाजवादी विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए न सिरफ राजनीतिक बल्कि सामाजिक क्रांति की परिकल्पना करते थे। हमारे विचार से नौकरशाही एक वास्तविक वर्ग था, एक वर्ग जो सर्वहारा का शत्रु था।" (आपोजीशनिस्ट पेंफलेट **'स्तालिनवादी जेलों में क्रांतिकारी राजनीति'** में पुनरप्रस्तुत)

1930 में **ल ऊवरिये कम्युनिस्ट** (न.6) में मिय्यस्नीकोव लेफ्ट ओपोज़ीशन संबन्धी लिखता है कि :

"केवल दो संभावनाएँ हैं। या तो त्रास्कीवादी 'झोंपडियों को शन्ति, महलों ऊपर जंग' के नारे तले, मज़दूर क्रांति, जिसका पहला कदम है सर्वहारा द्वारा स्वयं को शासक वर्ग के रुप में गठित करना, के परचम तले संगठित हो जाते हैं। अथवा वे धीरे-धीरे सूखते रहेंगें और निजी अथवा सामूहिक रुप से पूँजी के खेमे में चले जाएँगे। ये ही दो विकल्प हैं। तीसरा कोई रास्ता नहीं।"

1930वें की घटनाएँ, जिन्होंने त्रात्सकीवादियों को अतिन्म रुप से पूँजी की सेनाओं में शामिल होते देखा, मिय्यस्नीकोव की भविष्यवाणी को सही साबित करने वालीं थी। पर तो भी लेफ्ट ओपोज़ीशन के बेहतरीन तत्व दूसरा रास्ता, मज़दूर क्रांति का रास्ता अपनाने वाले थे। विदेश से अपनी रचनाओं में उनके विशलेषणों की पुष्टि करने की त्रात्स्की की असफलता से क्रोधित, 1930-32 में वे लेफ्ट ओपोज़ीशन से अलग हो गए। और जेल में वर्कर्ज़ ग्रुप तथा जनवादी केन्द्रीयतावाद ग्रुप के अवशेषों से मिलकर काम शुरु किया। उन्होंने विश्वक्रांति की असफलता का तथा राज्यपूँजीवाद के अर्थ का विशलेषण विकसित किया। जैसे स्लीगा अपनी पुस्तक में इशारा करता है, उन्हें अब सवाल की तह तक जाने और यह स्वीकार करने से डर नहीं था कि क्रांति का पतन केवल स्तालिन से ही शुरु नहीं हुआ था। अपितु उसने स्वयं लेनिन तथा त्रात्सकी के संरक्षण में ही गति पकडी थी। जैसे मार्क्स कहा करते थे, रेडिकल होने का अर्थ है ***जड़ तक जाना***। प्रतिक्रिया के उन अन्धेरे बरसों में, कम्युनिस्ट वाम निडर होकर सर्वहारा की पराजय की जड़ तक जाने से बेहतर क्या योगदान दे सकता था?

****

कुछ लोग जेल में रुसी कम्युनिस्ट वाम की बहसों को पूँजीवादी दैत्य के समक्ष क्रांतिकारी विचारों की नपुँसकता की निशानी कह सकते हैं। उनकी स्थिति निश्चित ही सर्वहारा की गहन पराजय की अभिव्यक्ति थी। पर इन भयंकर हालातों में उनका क्रांति के सबकों को स्पष्ट करते रहना, यह तथ्य इस बात की निशानी है कि सर्वहारा के ऐतिहसिक मिशन को कभी प्रतिक्रांति की अस्थाई जीत से, वह दशकों लंबी क्यों न हो, दफनाया नहीं जा सकता। जैसे मिय्यस्नीकोव ने स्परनोव की गिरफ्तारी के संबन्ध में लिखा :

"स्परनोव अब गिरफ्तार कर लिया गया है। निर्वासन तथा उसकी आवाज़ को घोंटा जाना उसकी ऊर्जा को कम नहीं कर पाए। और जब तक वह जेल की सुदृड दीवारों में बन्द नहीं था, नौकरशाही उसके संबन्ध मे सुरक्षित अनुभव नहीं कर पाई। पर एक शक्तिशाली आत्मा, अक्तूबर क्रांति की आत्मा को जेल में नहीं डाला जा सकता। कबर भी उसे छिपा नहीं सकती। क्रांति के सिद्वान्त आज भी रुस में मज़दूर वर्ग में जिन्दा हैं और जब तक मज़दूर वर्ग जिन्दा है यह विचार मर नहीं सकता। आप स्परनोव को गिरफ्तार कर सकते हैं, क्रांति के विचार को नहीं।" (ल ऊवरिये कम्युनिस्ट, 1929)

यह सच है कि स्तालिनवादी नौकरशाही बहुत समय पहले ही रुस में आखिरी क्रांतिकारी अल्पांशों को मिटाने में सफल रही। पर आज, जब अन्तरराष्ट्रीय सर्वहारा संघर्ष की एक नई लहर स्वयं रुस के सर्वहारा में भी एक दबी प्रतिध्वनि पा रही है, दूसरे अक्तूबर की 'शक्तिशाली आत्मा' मास्कों में स्तालिनवादी जल्लादों को तथा वारसा, प्राग तथा वीजिन्ग में उनकी संतांनों को सताने लौट आई है। 'समाजवादी पितृभूमि' के मज़दूर जब स्तालिनवादी राज्य की भीमाकार जेल के सदा सर्वदा के लिए विनाश के लिए उठ खडे होंगे, समूचे विश्व के अपने वर्ग बन्धुओं के संग वे 1917 की क्रांति तथा उसके वफादार रक्षकों, रुसी कम्युनिस्ट वाम के क्रांतिकारियों द्वारा पेश समस्याओं को सदा के लिए सुलझा लेंगे।

"जरुरत है मूलभूत को गैरमूलभूत से, बोल्शेविकों की नीतियों में सार को इत्तफाकिया वृद्वि से अलग करने की। मौजूदा दौर में, जब समूची दुनिया में हम निर्णायक अन्तिम संघर्षों के रुबरु हैं, समाजवाद की सबसे अहम समस्य हमारे काल का ज्वलंत प्रश्न था और है। मामला रणनीति के इस अथवा उस गौण प्रश्न का नहीं। बल्कि है सर्वहारा की कार्य क्षमता का, कर्म की उसके शक्ति का तथा समाजवाद की इच्छाशकित का। इसमें लेनिन, त्रात्सकी तथा उनके मित्र **पहले** थे, वे जो विश्व सर्वहारा के लिए एक मिसाल के तौर पर आगे आए; अभी तक भी वे अकेले हैं जो हुटेन के साथ कह सकते हैं : "मैंने हिम्मत की है!"

बोल्शेविक नीति में यही मूलभूत तथा **चिरस्थायी** है। **इस** अर्थ में उनका अमर ऐतिहासिक योगदान यह है कि विश्व सर्वहारा के आगे आगे चलते हुए उन्होंने राजनीतिक सत्ता की जीत को तथा समाजवाद को चरितार्थ करने की समस्या को व्यवहारिक रुप दिया और समूचे विश्व में पूँजी तथा सर्वहारा में हिसाब बराबर करने को जबरदस्त रुप से आगे बढाया। रुस में समस्या को केवल पेश किया जा सकता था। रुस में उसे हल नहीं किया जा सकता था। और **इस** अर्थ में, सब जगह भविष्य 'बोल्शेविज्म' के साथ है।" (रोज़ा लुग्जमवर्ग, **रुसी क्रांति**)

सीडीवार्ड

फुटनोट

5.वर्कर्ज़ ग्रुप का **घोषणापत्र** (केऐपीडी के फुटनोट सहित) फ्रेंच में **इनवेरियन्स**, सीरीज़ द्वितीय, न. 6 में उपलब्ध है। एक अधूरा संस्करण अंग्रेजी में **वर्कर्ज़ ड्रेडनाट** के निम्न अंकों में प्रकाशित हुआ : 1 दिसंबर 1923, 5 जनवरी 1924, 9 फरवरी

1924। वर्कर्ज़ ट्रुथ की **अपील** बर्लिन में **सोशलिस्ट हेरल्ड** में 31 जनवरी 1923 को छपी। इसमें से अंश अंग्रेज़ी में डेनियल, **ए डाकूमेंटरी हिस्टरी ...** में उपलब्ध हैं।

6. 17 जून की रचना तथा संयुक्त मोरचे पर उसी ग्रुप द्वारा एक अन्य रचना वर्कर्ज़ वायस न. 14 में मुद्रित है।

7. मिय्यस्नीकोव का बाद का इतिहास यूँ है : 1923 से 1927 तक का अधिकतर वक्त उसने जेलों में तथा भूतिगत गतिविधियों के लिए निर्वासन में काटा। 1927 में वह रुस से इरान फिर तुर्की भाग गया और 1930 में अन्ततः फ्रांस में बस गया। इस बीच वह रुस में अभी अपना ग्रुप गठित करने की कोशिश में था। 1946 में वह, उसी को ज्ञात कारणों से (संभवतया उसे युद्वोत्तर एक नई क्रांति की आशा थी?), रुस लौट गया... और तबसे उस बाबत कुछ नहीं सुना गया।

8. केऐपीडी ने अपनी आलोचनात्मक टिप्पणीओं के साथ वर्कर्ज़ ग्रुप का **घोषणापत्र** छापा किया। वे वर्कर्ज़ ग्रुप के नेप के विश्लेषण को पहीं मानते थे। उनके लिए 1923 का रुस किसान पूँजीवाद का एक देश था और नेप इसी की अभिव्यक्ति थी। इस लिए वे "नेप से आगे जाने के नहीं उसके हिंसक विनाश के पक्षधर थे।"

9. 1929 में **ल ऊवरिये कम्युनिस्ट** में लिखते हुए मिय्यस्नीकोव ने अगस्त 1928 में हुई एक कन्फ्रेंस का जिक्र किया जिसमें वर्कर्ज़ ग्रुप, स्परनोव का 'पन्द्रह का ग्रुप' तथा वर्कर्ज़ ओपोजीशन के अवशेष शामिल थे। उच्च स्तर की कार्यक्रम विषयक सहमति पर पहुँच कर, कन्फ्रेंस ने "वर्कर्ज़ ग्रुप के केन्द्रीय ब्योरो को सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट मज़दूर पारटियों के केन्द्रीय संगठन ब्योरो में गठित करने का फैसला किया।" (सोवियत यूनियन के लिए कम्युनिस्ट मज़दूर **पारटियां** गठित करने का निर्णय संभवतया 1923 के **घोषणापत्र** में प्रत्येक सोवियत गणतन्त्र तथा उसकी कम्युनिस्ट पार्टी की स्वायतता के लिए उसकी चिन्ता को व्यक्त करता था। यह एक 'विकेन्द्रीयतावादी' रुझान था और **घोषणापत्र** पर अपनी टिप्पणीयों में केऐपीडी ने इसकी आलोचना की)

भूतपूर्व डेमोक्रेटिक सेन्ट्रालिस्ट स्परनोव सम्बन्धी मिय्यस्नीकोव का यह कहना है :

> "कामरेड स्परनोव उसी मिट्टी का बना हुआ नहीं था जिससे गणमान्य व्यक्तियों के विपक्ष के नेतागण। लेनिन के दोस्ताना अलिंगन उसकी जीवन्त, आलोचनात्मक सर्वहारा आत्मा को कुचल या मार नहीं सके। और 1926-27 में फिर वह 'पन्द्रह के ग्रुप' के अगुआ के रुप में सामने आया। 'पन्द्रह के ग्रुप' के प्लेटफार्म का विचारों तथा सिद्वान्तों में डेमोक्रेटिक सेन्ट्रालिज्म के प्लेटफार्म से कोई वास्ता नहीं था। यह एक नए ग्रुप का नया प्लेटफार्म था जिसका डेमोक्रेटिक सेन्ट्रालिज्म से केवल यही संबंध था कि स्परनोव इसका प्रवक्ता था।
> पन्द्रह के ग्रुप का नाम इस तथ्य पर पडा कि उसके प्लेटफार्म पर पन्द्रह साथियों ने हस्ताक्षर किये थे। अपने मुख्य विचारों में, सोवियत राज्य के चरित्र के अपने मूल्यांकन में, मज़दूर राज्य संबन्धी अपनी सोच में, पन्द्रह का कार्यक्रम वर्कर्ज़ ग्रुप की विचारधारा के बहुत निकट था।"

रुसी क्रांति पर हमारी अन्य रचनाएँ

पिछले पच्चीस सालों में हमारे क्षेत्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशनों में रुसी क्रांति पर अनेक लेख तथा सीरीज़ छपती रही हैं। इंटरनेशनल रिव्यू ने खासकर पहली विश्वक्रांतिकारी लहर, रुसी क्रांति जिसका हिस्सा तथा शिखर थी, के अधययन का सतत गंभीर प्रयास किया है। इंटरनेशनल रिव्यू (आईआर) में प्रकाशित कुछ लेख निम्न हैं :

1. **रुसी क्रांति**, भाग एक, दो और तीन, आईआर 71, 72 तथा 75। चौथी तिमाही 1992 से चौथी तिमाही 1993।

2. **अस्सी बरस पहले - रुसी क्रांति**, भाग एक तथा दो। आईआर 89 और 91, दूसरी तिमाही 1997 से चौथी तिमाही 1997।

3. इंटरनेशनल रिव्यू के नियमित पाठक उसमें पिछले कई सालों से छपती श्रंखला - **सुन्दर सपना नहीं है साम्यवाद** से परिचित हैं। यह श्रंखला समानता की आदम धारणाओं से लेकर मज़दूर वरग के समूचे इतिहास का मूल्यांकन करने का प्रयास करती है। अक्तूबर 1998 से लेकर सितंबर 2000 तक उसमें छपे लेख मुख्यता रुसी क्रांति के उदय और पतन के तजुरुबे से जुडे हुए हैं। इस संबंधी अंक हैं : आईआर 94-96, 99-102।

आईसीसी प्रकाशन
ICC Press
(Write to the following addresses)

Accion Proletaria
Apartado Correos 258,
Valencia, **Spain**

Communist Internationalist (Hindi)
POB 25, NIT, Faridabad-121001,
Haryana, **India**

Internacionalismo
A P 20674, San Martin,
Caracas 1020A, **Venezuela**

Internationalism
Post Office Box 288, New York,
NY 10018-0288, **USA**

Internationalisme
BP 1134 BXL1, 1000 Bruxelles,
Belgium

Internationell Revolution
Box 21 106, 100 31 Stockholm,
Sweden

Revolucion Mundial
Apdo Post 15-024, CP 02600,
Distrito Federal, Mexico, ***Mexico***

Revolution Internationale
RI, Mail Boxes 153, 108, Rue
Damremont, 75018, Paris, **France**

Rivoluzione Internazionale
CP 469, 80100 Napoli, **Italy**

Weltrevolution
Postfach 410308, 5000 Koln 41,
Germany

Weltrevolution
Postfach 2216, CH-8026, Zurich,
Switzerland

Wereldrevolutie
Postbus 11549, 1001 GM
Amsterdam, **Holland**

World Revolution
BM Box 869, London WC1N 3XX
Great Britain

www.internationalism.org
The ICC's website contains articles from the ICC's English publications' as well as leaflets and details of public meetings.